खंड 2 – विकास का सिद्धांत

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 4 आधुनिकीकरण, औद्योगीकीकरण तथा नगरीकरण*

इकाई की रूपरेखा

4.0 उद्देश्य

4.1 प्रस्तावना

4.2 आधुनिकीकरण

4.3 औद्योगीकीकरण

4.3.1 उत्तर–औद्योगिक समाज

4.4. नगरीकरण

4.5 सारांश

4.6. शब्दावली

4.7. कुछ उपयोगी पुस्तकें

4.8. बोध प्रश्नों के उत्तर

4.0 उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के बाद, आप समझ सकेंगे:

- आधुनिकीकरण की विस्तार की प्रक्रिया को;
- कैसे औद्योगीकरण ने आधुनिकीकरण के मार्ग को प्रशस्त किया; और
- नगरीकरण के विस्तार की प्रक्रिया जैसे तथ्यों को।

4.1 परिचय

इस इकाई में हम आधुनिकीकरण, औद्योगीकरण तथा नगरीकरण के विकास की प्रक्रिया को समझेंगे।

सामाजिक परिवर्तन की तीन मुख्य प्रक्रियाओं आधुनिकीकरण, औद्योगीकीकरण और नगरीकरण द्वारा सर्वांगीण विकास की प्रक्रिया को समझा जा सकता है। वास्तव में, औद्योगीकीकरण और नगरीकरण को आधुनिकीकरण प्रक्रिया के उप–प्रक्रियाओं के रूप में देखा जा सकता है जो तकनीकी प्रगति के फलस्वरूप हुआ।

यूरोप में 18वीं शताब्दी के पुनर्जागरण के साथ ही आधुनिक समाज का उद्भव हुआ। 19वीं शताब्दी में आधुनिकता (एक प्रकार सामाजिक जीवन जो आधुनिक समाज को दर्शाता है) को उद्योगवाद (उद्योग आधारित सामजिक जीवन) से जोड़कर देखा जाने लगा जिसके साथ सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तन भी जुड़ा हुआ था। वैज्ञानिक विकास के परिणाम स्वरूप हुई औद्योगिक क्रांति, ने पूरे दुनिया को कृषि से औद्योगिक व्यवस्था में बदल दिया।

उन्नीसवीं और बीसवीं सदी में शहरी क्षेत्रों में कारखानों की स्थापना हुई, जिसके कारण

*प्रो. मनीषा त्रिपाठी पांडे द्वारा लिखित।

रोजगार की तलाश में बड़ी संख्या में कृषि कार्य में लगे लोगों ने शहरों की ओर प्रलायन किया। धीरे–धीरे आधुनिकता, आधुनिकीकरण के फलस्वरूप, एक वैश्विक घटना बन गई। अब हम आधुनिकीकरण को समझने का प्रयास करेंगे।

4.2 आधुनिकीकरण

आधुनिकीकरण सामाजिक परिवर्तन की एक बहुआयामी प्रक्रिया है जो समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक ढांचे को बदल देती है। यह परंपरा मे परिवर्तन करने की घोषणा करता है। ज्ञान बोध शिक्षा आधुनिकता की पहली शर्त थी। आत्मज्ञान के मुख्य दर्शन, जैसेः अनुभववाद, विज्ञान, प्रगति, स्वतंत्रता, सार्वभौमिकता आदि, आधुनिकीकरण की मांग है। ब्रिटेन में औद्योगिकीकरण और इंग्लैंड, फ्रांस और अमेरिका में राजनीतिक क्रांतियों ने पूंजीवाद, नागरिकता, लोकतंत्र और विकास के नए मूल्य दिए। इन सभी ने प्रगतिशील विकास या आधुनिक प्रक्रिया का नेतृत्व किया।

जेम्स ओ 'कॉननेल (1976) ने एक प्रक्रिया के रूप में आधुनिकीकरण को परिभाषित किया है, जिसके माध्यम से एक पारंपरिक या एक पूर्व–आधुनिक समाज गुजरता है, जब यह समाज मशीन प्रौद्योगिकी, तार्किता और धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण अत्यधिक विभेदित वाले सामाजिक संरचनाओं परिवर्तन होता है। इसका मतलब था 'पश्चिमी' राजनीतिक और आर्थिक संस्थानों को अपनाना। डैनियल लर्नर (1958) के लिए, आधुनिकीकरण ''सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया है, जिसके तहत कम विकसित समाज अधिक विकसित समाजों की विशिष्टताओं को अपना कर स्वयं में परिवर्तन लाते है; यह प्रक्रिया अंतरराष्ट्रीय, या राष्ट्रीय, संचार द्वारा सक्रिय होती है। आधुनिकीकरण सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया है जिसमें विकास आर्थिक मानदण्ड से नापा जाता है। इसका तात्पर्य एक सामाजिक प्रक्रिया से है, जो एक ऐसा वातावरण तैयार करती है जिसमें प्रति व्यक्ति का उत्पादन बढ़ता है। लर्नर आधुनिक समाजों की कुछ विशेषताओं को बताते है जिससे आधुनिकीकरण के आदशों के रूप में देखा गया हैः

- अर्थव्यवस्था मे स्वतः स्फूर्त विकास
- राजनीति में जन भागीदारी, यानी चुनावी लोकतंत्र
- धर्मनिरपेक्ष और तर्कसंगत मानकों की संस्कृति
- समाज में गतिशीलता में वृद्धि यानी शारीरिक, सामाजिक और मानसिक आंदोलन की स्वतंत्रता
- एक व्यक्तित्व मे उदय, यानी एक ''परिवर्तनशील व्यक्तित्व'' जो तर्कसंगतता, सहानुभूति और अन्य–निर्देशितता (एक व्यक्ति का उन्मुखीकरण जो उसकी आत्म–छवि की पुष्टि के लिए दूसरों की निरंतर स्वीकृति पर निर्भर करता है) द्वारा विशेषता है।
- आधुनिकता प्राप्त करने हेतु साधनों का उपयोग

हंटिंगटन (1976) ने अपने निबंध ''द चेंज टू चेंजः मॉडर्नाइजेशन, डेवलपमेंट एंड पॉलिटिक्स'' में कहा कि आधुनिकीकरण, और निहितार्थ विकास, ग्रामीण कृषि संस्कृतियों को शहरी औद्योगिक संस्कृतियों में बदलाव लाने वाली एक क्रांतिकारी प्रक्रिया थी। एल्विन टॉफलर (1980) ने ''फर्स्ट वेव'' (कृषि समाज) से ''सेकंड वेव'' (औद्योगिक युग समाज) के आधुनिकीकरण के कदम का वर्णन किया। वह विकसित देशों में एक ''दूसरी लहर'' से ''तीसरी लहर'' (बाद के औद्योगिक) समाज में संक्रमण की बात भी करता है।

एक प्रणालीगत प्रक्रिया के रूप में, आधुनिकीकरण विभिन्न बलों और प्रक्रियाओं की उपज है: आर्थिक (वैश्विक पूंजीवादी अर्थव्यवस्था), राजनीतिक (धर्मनिरपेक्ष राज्य और राजनीति का उदय), सामाजिक (वर्गों का निर्माण और श्रम का एक उन्नत यौन और सामाजिक विभाजन)), और सांस्कृतिक (एक धर्म से धर्मनिरपेक्ष संस्कृति के लिए संक्रमण)। संक्षेप में ये सब आधुनिकीकरण की विशेषताएं हैं।

यह समय था जब औद्योगिक क्रांति और औद्योगिकीकरण की पृष्ठभूमि थी और समाजशास्त्र के शास्त्रीय अग्रदूतों ने सामाजिक परिवर्तन पर अपना सिद्धांत दिया था। उनका यह सिद्धांत दर्शाता है कि वह आधुनिकीकरण के प्रक्रिया से चिंतित है। मार्क्स ने अपने उत्पादन के सिद्धांत में वस्तु के विषय में बात की है, पूंजीवादी व्यवस्था में वस्तु का उत्पादन इस प्रकार होगा कि वह उत्पीड़न, शोषण और अलगाव की भावना पैदा कर देगा समाज में। उन्होंने कहा है कि अंतिम प्रगति समाजवादी व्यवस्था में ही निहित है। दुर्खीम ने माना है कि श्रम के विभाजन और भेदभाव को खत्म करने के बाद की समाज विकास सम्भव है। जितना ज्यादा भेदभाव होगा उतना की कार्यात्मक निर्भरता बढ़ेगी और जैविक एकजुटता ही आधुनिकता का स्तर बढ़ायेगा। मैक्स वेबर का मानना है औद्योगिक समाज के उदय से नौकरशाही तर्कसंगत समाज का उदय होगा और सामाजिक प्रगति से तर्कसंगतता के माध्यम से आएगी। आधुनिकता पारलौकिक दुनिया का परित्याग करती है और विज्ञान, सामाजिक कार्यों की तर्कसंगत गणना के लिए प्रभुत्व प्रदान करती है।

सीमेल ने आधुनिकता की पड़ताल दो जगह की: शहर और आर्थिक अर्थव्यवस्था।

शहरी जीवन में आधुनिकता का अनुभव और धन का प्रसार है। उनके आधुनिकता की प्रक्रिया में मूल्य बनाने की प्रक्रिया शामिल है, जहाँ पैसा बाजार, आधुनिक अर्थव्यवस्था और अंततः पूँजीवादी समाज के विकास का आधार प्रदान करता है।

विकास वह कुंजी शब्द है जो आधुनिकता को समझने में मदद कर सकता है। बहुत से समकालीन सिद्धांत आधुनिकता पर दिये गये है, गिडेनस, रिटजर, ब्राउसन और हरमस द्वारा। बहुत से विधान आधुनिकता को सतत प्रक्रिया मानते हैं और कुछ अधूरी परियोजना मानते हैं। एनथोनी गिडेनस (1990) आधुनिकता का सिद्धांत देते हैं और आधुनिकता को एक आधुनिक शब्द द्वारा समझाने का प्रयास करते है वह शब्द है ''Juggenout'' ''रथ''।

उनके लिए आधुनिकता एक बहुआयामी चीज़ है और इसके चार संस्थागत पहलू हैं:–

- पूँजीवाद
- उद्योगवाद
- निगरानी के माध्यम से समन्वित प्रशासनिक शक्ति।
- सैन्य शक्ति

गिडेनस और बेक दोनों ने ही आधुनिकता के बाद के विश्व को, जोखिम भरा समाज कहा है। अतः शास्त्रीय आधुनिकता से खिसना और औद्योगिक समाज बनाना और आधुनिकता के पश्चात् समाज जोखिम भरा होगा। ऐसा उल्रिच बेक का मानना है (1992:10)।

आधुनिकीकरण की विशेषताएँ:–

- यहाँ उत्पादन पूँजीवादी व्यवस्था पर आधारित होती है, जो सस्ते मजदूरी और बाजार की अर्थव्यवस्था को प्रभावित करता है।

- यह उच्च स्तर के संरचनात्मक भेदभाव और विशेषज्ञता पर जोर देता है।
- इसमें विभिन्न वैचारिक समूह और वयस्क मताधिकार के राजनीतिक प्रतिनिधित्व के आधार पर लोकतांत्रिक राजनीतिक प्रणाली का विकास होता है।
- इसमें नौकरशाही व्यवस्था एवं संस्थानों का विकास होता है साथ ही, बड़े पैमाने पर संगठनों का निर्माण भी होता है।
- इसमें व्यक्तिवादी सोच और स्वतंत्रता में वृद्धि होती है।
- इसमें सामाजिक प्रगति और सामाजिक मुक्ति के प्रश्नों एवं विचारों पर जोर दिया जाता है।

4.3 औद्योगीकीकरण

इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति ने न केवल इंग्लैंड में बल्कि यूरोप के बाकी हिस्सों में भी औद्योगीकरण को बढ़ावा दिया। औद्योगिकीकरण ने आधुनिकीकरण का मार्ग प्रशस्त किया। औद्योगिकीकरण सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन की प्रक्रिया है जिसके द्वारा अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि से नए माल निर्माण की ओर स्थानांतरित होती है। यह मशीन उत्पादन के उद्भव को संदर्भित करता है, जो निर्जीव बिजली संसाधनों के उपयोग पर आधारित है, जिस ने उत्पादन में क्रांति ला दी, जिससे बड़े पैमाने पर उत्पादन और नवाचार हुए। उत्पादन और श्रम के तकनीकी विभाजन के कारखानो–आधारित प्रणाली ने समाज का आमूल परिवर्तन किया। अवैयक्तिक बाजारों की मांग के अनुसार नौकरशाही द्वारा प्रबंधित औद्योगिक फर्मों ने समान का बड़े पैमाने पर उत्पादन शुरू किया।जैसे–जैसे श्रम की माँग बढ़ी, लोग बड़ी संख्या में नगरों की ओर चले गए, जिससे नगरीकरण हुआ।

18वीं शताब्दी में जो औद्योगिक क्रांति हुई, उसके कारण औद्योगीकरण हुआ। इंग्लैंड और अधिकांश यूरोप में विनिर्माण के लिए बिजली–चालित मशीनरी के अनुप्रयोग से कई तकनीकी परिवर्तनों, कृषि नवाचारों, परिवहन और संचार में प्रगति और समाज के सभी संस्थानों में परिवर्तन का आरंभ हुआ। परंपराएं कमजोर हुईं और धार्मिक प्रथाओं को एक झटका मिला जिससे राजशाही और सामंतवाद का अंत हुआ। शहरों में बड़े पैमाने पर संगठनों का उदय हुआ और शहरों का महत्व बढ़ गया। यूरोप में शास्त्रीय समाजशास्त्रियों ने औद्योगीकरण के परिणामस्वरूप समाज में होने वाले बदलावों और औद्योगिक समाजों के साथ पूर्व–औद्योगिक की तुलना के बारे में लिखना शुरू कर दिया। टोनीज़ के जेमिनेशाफ्ट और गेजलशैफ्ट, दुर्खीम की यांत्रिक एकजुटता और जैविक एकजुटता, मेन की प्रस्थिति और अनुबंध, स्पेंसर के उग्रवादी समाज और औद्योगिक समाज जैसे कुछ प्रसिद्ध वर्गीकरण, औद्योगीकरण से पहले और बाद के समाजों के बीच के विरोधाभासों को सामने लाते हैं।

औद्योगीकरण धीरे–धीरे दुनिया का नया क्रम बन गया क्योंकि इसने उत्पादकता बढ़ाकर पूंजी निर्माण में मदद की। पूंजी का संपत्ति में निवेश आर्थिक विकास की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता बन गयी। औद्योगिकीकरण रोजगार के अवसर पैदा करता है, शैक्षिक अवसर प्रदान करता है, भोजन की बेहतर व्यवस्था और संसाधनों का बेहतर उपयोग करता है। ये सभी औद्योगिक विकास को स्थानीय अर्थव्यवस्था के लिए अत्यंत मूल्यवान बनाते हैं। समाज पर अन्य प्रभावों में एक महत्वपूर्ण जनसंख्या वृद्धि, कच्चे माल की बढ़ती मांग, जीवन स्तर में वृद्धि, परिवहन और संचार में सुधार और नए सामाजिक वर्गों, विशेष रूप से मध्यम वर्ग और उद्यमियों का विकास शामिल है। लेकिन औद्योगिकीकरण पर्यावरण पर नकारात्मक

प्रभाव भी डालता है और प्रदूषण का कारण बनता है, इसके कारण ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन और ग्लोबल वार्मिंग में वृद्धि हुई है। औद्योगिकीकरण ने सामाजिक संरचनाओं और उत्पादन प्रक्रियाओं को मौलिक रूप से बदल दिया है। शास्त्रीय विचारकों ने पूंजीवाद के नकारात्मक प्रभावों पर चर्चा की, जिसकी उत्पति उत्पादन और औद्योगीकरण के कारखाने मोड में हुई थी। दोहराव, श्रम विभाजन, कार्यों का विखंडन औद्योगिक रोजगार की विशेषता है। कार्ल मार्क्स ने ''अलगाव'' के बारे में बात की; नौकरशाही और तकनीकी प्रगति के परिणामस्वरूप मैक्स वेबर ने ''लौह–पिंजरे'' और ''दुनिया से विशक्ति'' की बात की। उनका मानना था कि आधुनिक सामाजिक जीवन के सभी पहलुओं का युक्तिकरण और रहस्योदघाटन होना निश्चित है।

औद्योगिकीकरण ने ऐतिहासिक रूप से नगरीकरण या शहरों का विस्तार करके आर्थिक विकास और रोजगार के अवसर पैदा किए हैं जो लोगों को शहरों में खींचते हैं। एक क्षेत्र के भीतर कारखानों की स्थापना से शहरीकरण के लिए कारखाने के श्रम की उच्च मांग पैदा होती है।

4.3.1 उत्तर–औद्योगिक समाज

एक औद्योगिक समाज एक आधुनिक समाज है। डैनियल बेल (1973), द पोस्ट–इंडस्ट्रियल सोसाइटी में, भविष्यवाणी की कि औद्योगिक उत्पादन के बजाय, हम एक ऐसे समाज की ओर बढ़ रहे हैं, जहां सेवाओं और ज्ञान संबंधी तकनीकें हावी होंगी। उनका मानना था कि उत्तर औद्योगिक समाज (पोस्ट–इंडस्ट्रियल सोसाइटी) प्रमुख रूप में औद्योगिक समाज की जगह लेगा। उनके अनुसार उत्तर औद्योगिक समाज की मुख्य विशेषताएं हैं:

- विनिर्माण से सेवाओं में बदलाव
- नए विज्ञान आधारित उद्योगों की केंद्रीयता
- नए तकनीकी अभिजात वर्ग का उदय और स्तरीकरण के एक नए सिद्धांत का आगमन।

इस 'सूचना युग' में, सूचना प्रौद्योगिकी और संबंधित–उद्योग हावी हैं। अक्षीय सिद्धांत (अर्थव्यवस्था और समाज का मौलिक तर्क) सैद्धांतिक ज्ञान है, जबकि औद्योगिक समाज में अक्षीय सिद्धांत तकनीकी ज्ञान था। जैसा कि सैद्धांतिक ज्ञान नए समाज का रणनीतिक संसाधन है, विश्वविद्यालय और अनुसंधान संस्थान अक्षीय संरचना बन जाते हैं जहां यह संसाधन स्थित होत है। मशीन प्रौद्योगिकी के बजाय बौद्धिक तकनीक प्रमुख है। व्हाइट कॉलर नॉकरियाँ ब्लू कॉलर नौकरियों की जगह लेती हैं। इस समाज के भीतर पेशेवर, तकनीकी और वैज्ञानिक समूहों की वृद्धि हुई है। यह मुख्य रूप से एक सेवा के उत्पादन में लगी हुई है न कि अच्छे उत्पादन में। 1900 के दशक में अमेरिका में पहले से उभरते हुए पैटर्न के आधार पर बेल की उत्तर औद्योगिक समाज की भविष्यवाणी की गई थी।

बॉक्स 2

आधुनिकता के बाद

आधुनिकता समाज में हुए व्यापक बदलावों और कला और साहित्य के क्षेत्रों जैसे औद्योगिकीकरण, शहरीकरण, तर्कसंगतता, विकास, लोकतंत्र, पूंजीवाद और मुक्त बाजार से जुड़ी है।

उत्तर आधुनिकता आधुनिक युग के बाद एक ऐतिहासिक युग / काल या सामाजिक–सांस्कृतिक स्थिति को संदर्भित करती है। यह आधुनिकता से परे का जीवन है। यह एक संशोधन या बदलाव का संकेत देता है जिसमें हम जीवन के आधुनिक रूपों या आधुनिकता से संबंधित अनुभव करते हैं। इसमें प्रतिक्रिया, अस्वीकृति और विद्रोह का इतिहास है। उत्तर आधुनिक युग में, मानवतावाद और आत्मज्ञान के मूल्यों में गिरावट आई है।

1959 में, सी.डब्ल्यू. मिल्स ने अनुमान लगाया कि आधुनिक युग को आधुनिक काल के बाद सफल बनाया जा रहा है जिसमें वैज्ञानिक तर्कसंगतता और राजनीतिक स्वतंत्रता के मूल्यों को चुनौती दी जा रही है। 1973 में, डैनियल बेल ने पोस्ट–इंडस्ट्रियल सोसायटी के बारे में लिखा, जो सूचना समाज है। 1969 में, पीटर ड्रकर ने द एज ऑफ डिसकंटीनिटी लिखी और 1971 में, एलेन टॉउने ने द पोस्ट–इंडस्ट्रियल सोसाइटी लिखी। ल्योटार्ड (1979) के अनुसार, ''ज्ञान की स्थिति बदल जाती है क्योंकि समाज पश्च–युग में प्रवेश करते हैं और उन संस्कृतियों में प्रवेश होता है जिसे उत्तर–आधुनिक युग के रूप में जाना जाता है''।

4.4 नगरीकरण

औद्योगीकरण के बाद, हाल के दिनों में नगरीकरण दुनिया की सबसे बड़ी क्रांति है। यह सामाजिक जीवन के पूरे पैटर्न में एक क्रांतिकारी बदलाव का प्रतिनिधित्व करता है। यह आर्थिक और तकनीकी विकास का एक उत्पाद है। सामाजिक प्रक्रिया के रूप में शहरीकरण ने मनुष्य के जीवन के तरीके में महान परिवर्तन किये हैं। वैश्विक घटना होने के कारण और शहरी केंद्रों के तेजी से बढ़ने के कारण, वर्तमान युग को 'नगरीकरण का युग' कहा जाता है।

नगरीकरण शहरी बनने की प्रक्रिया है, शहरों की ओर रुख करना, कृषि से शहरों में अन्य व्यवसायों की ओर जाना, जैसे व्यापार, विनिर्माण, उद्योग और प्रबंधन और व्यवहार पैटर्न के अनुरूप होते परिवर्तन। शहरी आबादी के विकास के लिए अग्रणी शहरों और शहरों के आकार में वृद्धि नगरीकरण का सबसे महत्वपूर्ण आयाम है। ये केंद्र अनिवार्य रूप से चरित्र में गैर–कृषि हैं। जनसंख्या एकाग्रता की एक प्रक्रिया के रूप में नगरीकरण को एच. टी. एल्ड्रिज (1956) ने व्यवस्थित रूप से समझाया। उसके लिए, इसमें दो तत्व शामिल हैं: 'सांद्रता के बिंदुओं का गुणन' और 'व्यक्तिगत सांद्रता के आकार में वृद्धि'। परिणामस्वरूप, शहरी स्थानों में रहने वाली आबादी का अनुपात बढ़ता है।

नगरीकरण से तात्पर्य शहरी संकुलन और उसके विकास की बदलती आकारिकी संरचना से है। जनसांख्यिकी इस ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच जनसंख्या के पुनर्वितरण के रूप में वर्णन करते हैं। यह एक विश्वव्यापी प्रक्रिया है – आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर देशों के बीच एक स्थान को सुरक्षित करने के लिए नवीनतम वैज्ञानिक स्वभाव और तकनीकी उन्नति के साथ संयुक्त आर्थिक विकास का एक सूचकांक। इसका अर्थ है कि पश्चिम में लोगों के लिए पारंपरिक सामाजिक संस्थाओं और मूल्यों का टूटना। भारतीय संदर्भ में, यह जीवन शैली, वर्ग प्रणाली के उद्भव, परमाणु परिवार और जाति व्यवस्था, संयुक्त परिवार और सख्त धार्मिक प्रथाओं के मलबे पर अत्यधिक धर्मनिरपेक्ष धर्म के उद्भव में बदलाव की परिकल्पना करता है।

बॉक्स 3

अधिक नगरीकरण

अति नगरीकरण से तात्पर्य किसी शहर या उसके आस–पास के ग्रामीण क्षेत्र में शहरीकरण के पात्रों की बढ़ी हुई संख्या से है। यह शहरी लक्षणों के अत्यधिक विकास

के कारण होता है। जैसे–जैसे शहरी गतिविधियों और व्यवसायों का विस्तार होता है, उद्योग के विकास, नौकरशाही प्रशासनिक नेटवर्क जैसे माध्यमिक कार्यों का विकास होता है, जीवन का मशीनीकरण और शहरी पात्रों की आमद आसपास के ग्रामीण क्षेत्र में होती है, शहरीकरण धीरे–धीरे एक समुदाय के ग्रामीण और पारंपरिक लक्षणों को बदल देता है। मुंबई और कलकत्ता ऐसे शहरों के उदाहरण हैं।

यह सामाजिक–सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया जिससे लोग भौतिक और गैर–भौतिक संस्कृति का अधिग्रहण करते हैं, जिसमें व्यवहार पैटर्न, संगठन के रूप और उन विचारों को शामिल किया जाता है जो शहर में उत्पन्न हुए या अलग–अलग हैं। हालांकि सांस्कृतिक प्रभावों का प्रवाह दोनों दिशाओं में है, लेकिन गैर–शहरी लोगों पर शहर द्वारा लगाए गए सांस्कृतिक प्रभाव शायद अधिक व्यापक हैं। इस प्रकार, शहरीकरण परिणति रूप टायनॉबी ने उस दुनिया में हुई जिसे ''पश्चिमीकरण'' कहा है।

बॉक्स 4

उप–नगरीकरण

उप–शहरीकरण, या उपनगरों की वृद्धि, किसी शहर के अति–शहरीकरण से निकटता से संबंधित है। उप–शहरीकरण में आबादी के आधार पर शहरों की अधिक भीड़। दिल्ली एक विशिष्ट उदाहरण है। उप–शहरीकरण का मतलब निम्नलिखित विशेषताओं की विशेषता वाले शहरों के आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों का शहरीकरण है:

क) भूमि के गैर–कृषि उपयोगों में तेज वृद्धि

ख) अपनी नगरपालिका सीमा के भीतर शहरों के आसपास के क्षेत्रों को शामिल करना, और

ग) शहर और उसके आसपास के क्षेत्रों के बीच गहन संचार।

शहरों का अध्ययन एक ऐसा विषय था जो पहले से ही 19वीं शताब्दी के दूसरे हिस्से में अपने प्रतिष्ठित द्विभाजनों (द्विकोटोमियों) के साथ प्रारंभिक शास्त्रीय समाजशास्त्र में था, जैसे कि स्थिति और अनुबंध के बीच मेन का अंतर, बर्बरता और सभ्यता के बीच मॉर्गन का विरोधाभास। यह आगे टॉनीज द्वारा विकसित किया गया था, जिन्होंने जेमिन्शाफ्ट और गेश्ल्सचफ्ट का विरोधभास, और दुर्खीम द्वारा, जिन्होंने ''यांत्रिक और'' कार्बनिक ''एकजुटता के बीच अंतर किया था। टॉनीज और दुर्खीम का मानना था कि सामाजिक संगठन या यांत्रिक एकजुटता के जेमिन्शाफ्ट प्रकार का विकास पूरी तरह से शहरों में, विशेष रूप से आधुनिक शहरों में किया जाता है। प्राचीन शहर पर अपने प्रसिद्ध अध्ययन में फस्टेल डी कूलेंजेस ने इसे सभी सभ्यताओं और विशेष रूप से पश्चिमी सभ्यता के विकास में एक महत्वपूर्ण चरण माना। मैक्स वेबर (1961) और जॉर्ज सिमेल (1950) जैसे अन्य समाजशास्त्रियों ने सघन जीवन स्थितियों, परिवर्तन की कठोरता और शहरी सेटिंग में अवैयक्तिक अन्तक्रिया पर जोर दिया है।

सिमेल ने शहरी अनुभव के महत्व पर विचार किया, जो नगरवाद (शहरीकरण का विकास) के बजाय शहरीकरण (शहर के भीतर जीवन) पर ध्यान केंद्रित करने के लिए चुना। ''मेट्रोपोलिस एंड मेंटल लाइफ'' (1903) शहर में जीवन के बारे में अपने विचारों का विवरण देने वाला एक निबंध है, जो सामाजिक मनोविज्ञान पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है। आधुनिक शहर की अनूठी विशेषता तंत्रिका उत्तेजनाओं का तेज है जिसके साथ शहर के निवासी को सामना करना होगा। यह ग्रामीण सेटिंग से पलायन की वजह से है जहां जीवन,

संवेदी कल्पना की लय धीमी, अभ्यस्त और यहां तक कि, शहर, स्थलों, ध्वनियों और गंधों की निरंतर बमबारी के साथ है। शहर में, व्यक्ति भेदभाव करना, तर्कसंगत और गणना करना सीखते हैं, और एक अपमानजनक और अलग रवैया विकसित करते हैं।

लुई वर्थ (1938) शहरीवाद के अध्ययन के अग्रदूतों में से एक थे और नगरवाद और शहरीकरण की अवधारणाओं को अलग करने का उनका पहला व्यवस्थित प्रयास था। ''शहरीवाद लक्षणों का वह परिसर है जो शहरों में जीवन की विशेषता विधा बनाता है''। शहरीकरण केवल वह प्रक्रिया नहीं है जिसके द्वारा लोग शहर की ओर आकर्षित होते हैं और इसे अपनी जीवन प्रणाली में शामिल करते हैं। यह जीवन के मोड के विशिष्ट विशेषताओं के संचयी उच्चारण को भी संदर्भित करता है, जो शहरों के विकास से जुड़ा हुआ है, और अंत में शहरी के रूप में मान्यता प्राप्त जीवन के तरीकों की दिशा में परिवर्तन के लिए है।

अमेरिकन जर्नल ऑफ सोशियोलॉजी में अपने निबंध ''नगरीय जीवन शैली के रूप में'' (1938) में,ॅपतजी ने संरचना की तुलना में नगरवाद – शहरी जीवन शेली पर अधिक ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने संकेत दिया कि आकार, घनत्व और विविधता को शहरों को परिभाषित करने में प्रमुख लक्षण के रूप में आना जाता है – विशिष्ट व्यवहार पैटर्न और नैतिक दृष्टिकोण के लिए अनुकूल है। शहरीकरण, जीवन के एक तरीके के रूप में, के लिए, तीन परस्पर संबंधित दृष्टिकोणों से आनुभविक रूप से संपर्क किया जाता है:

1. एक भौतिक संरचना जिसमें जनसंख्या का आधार, एक प्रौद्योगिकी और एक पारिस्थितिक क्रम शामिल है;
2. एक सामाजिक संगठन जिसमें सामाजिक संरचना, सामाजिक संस्थाओं की एक श्रृंखला और सामाजिक संबंधों का एक विशिष्ट पैटर्न शामिल है; तथा
3. दृष्टिकोण और विचारों के एक समूह के रूप में, और सामूहिक व्यवहार के विशिष्ट रूपों और सामाजिक नियंत्रण के विशिष्ट तंत्र के अधीन होने वाले व्यक्तित्वों का एक समुच्चय।

   स्जोबर्ग (Sjoberg) (1960) तीन अलग–अलग प्रकार के समाजों के बीच प्रतिष्ठित है, जिनमें से प्रत्येक का शहर की संस्कृति से अपना संबंध है:

   (1) ''लोक'' समाजों को प्राथमिकता दें जिसमें कोई शहर न हों,

   (2) साक्षर प्रीइंडस्ट्रियल सिटी संस्कृतियों, और औद्योगिक, शहरी वाले।

Sjoberg के अनुसार, पूर्व–औद्योगिक शहर, ऊर्जा के चेतन (मानव या पशु) स्रोतों पर निर्भर हैं, जो सामंती समाजों या नौकरशाहों के उप–तंत्र हैं और इनमें अवैयक्तिकता, धर्मनिरपेक्षता और बड़ा आकार जैसी विशेषताऐं नहीं हैं जो कि लोक–शहरी डाइकोटॉमी में शहरों की विशेषता है। इसके विपरीत, औद्योगिक समाज एक नई विकसित तकनीक होती हैं, जो सत्ता के निर्जीव स्रोतों से प्राप्त होती हैं, उनके पास स्वतंत्र आर्थिक संसाधनों के साथ पूरी तरह से विकसित शहर उपलब्ध होते है।

मेदो और मिज्रूची (1969) के अनुसार शहरीकरण, उन प्रक्रियाओं को संदर्भित करता है जिनके द्वारा शहरी मूल्यों को विसरित किया जाता है; ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों तक आंदोलन होता है; और व्यवहार के पैटर्न को उन लोगों के अनुरूप रूपांतरित किया जाता है जो शहरों में समूहों की विशेषता हैं। उनका मानना है कि शहरीकरण और शहरीकरण की अवधारणाएं शहर के जीवन को समझने के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हैं। शहरीकरण उस प्रक्रिया का प्रतिनिधित्व

करता है जिसके द्वारा शहरीकरण प्रौद्योगिकी और समाज के संपर्क से बाहर निकलता है और विकसित होता है; या प्रौद्योगिकी और समाज में परिवर्तन और विकास नगरवाद के भीतर और उसके माध्यम से होता है।

बोध प्रश्न 1

1. आधुनिकीकरण क्या है?

....

....

....

....

....

....

2. औद्योगीकरण क्या है?

....

....

....

....

....

....

3. नगरीय क्या है? यह नगरीकरण से कैसे अलग है?

....

....

....

....

....

....

4.5 सारांश

इस इकाई में हम देखते हैं कि कई शास्त्रीय और समकालीन विचारकों ने समय–समय पर आधुनिकीकरण, औद्योगीकरण और नगरीकरण की प्रक्रियाओं का विश्लेषण किया है। इन सभी प्रक्रियाओं को आधुनिक समाज की प्रगति और विकास के अग्रदूत के रूप में देखा जाता है।

4.6 शब्दावली

नगरीकरणः : नगरीकरण लक्षणों का वह परिसर है जो शहरों में जीवन की विशेषता विधा बनाता है

उत्तर आधुनिकताः : उत्तर आधुनिकता आधुनिक युग के बाद के ऐतिहासिक युग/काल या सामाजिक–सांस्कृतिक स्थिति को संदर्भित करती है। यह आधुनिकता से परे का जीवन है। यह एक संशोधन या बदलाव का संकेत देता है जिसमें हम जीवन के आधुनिक रूपों या आधुनिकता से संबंधित अनुभव करते हैं।

जैमेनशाफ्ट : Gemeinschaft एक सामाजिक प्रणाली है जिसमें अधिकांश रिश्ते व्यक्तिगत या पारंपरिक होते हैं और अक्सर दोनों।

जैसैल्सशाफ्ट : Gesellschaft में, परंपरा के समाज को अनुबंध के समाज के साथ बदल दिया जाता है। इस समाज में न तो व्यक्तिगत लगाव और न ही पारंपरिक अधिकार और कर्तव्य महत्वपूर्ण हैं।

4.7 कुछ उपयोगी पुस्तके

एच.टी. एल्ड्रिज (1976) जे. जे. स्पेंगलर और ओ. डी. डंकन (सं.) जनसांख्यिकी विश्लेषण में ''शहरीकरण की प्रक्रिया'' ग्लेनकोः फ्री प्रेस।

हैरिसन, डेविड। (1991) समाजशास्त्र का आधुनिकीकरण और विकास। लंदनः रूटलेज, 1991, अध्याय 1 और 2. पीपी 1–54

4.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में आधुनिकीकरण, जिसके माध्यम से एक पारंपरिक या एक पूर्व–समाज समाज गुजरता है, जैसे यह एक मशीन प्रौद्योगिकी, तर्कसंगत और धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण और अत्यधिक विभेदित सामाजिक संरचनाओं की विशेषता वाले समाज में रूपांतरित होता है।

2. औद्योगिकीकरण सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन की प्रक्रिया है जिसके द्वारा अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि से वस्तुओं के निर्माण तक स्थानांतरित हो जाती है। यह मशीन उत्पादन के उद्भव को संदर्भित करता है, जो निर्जीव बिजली संसाधनों के उपयोग पर आधारित है, जिसने उत्पादन में क्रांति ला दी, जिससे बड़े पैमाने पर उत्पादन और नवाचार हुए।

3. नगरवाद लक्षणों का वह परिसर है जो शहरों में जीवन की विशेषता विधा बनाता है। यह जीवन का एक तरीका है, एक शहरी जीवन शैली है। लुई विर्थ के लिए, आकार, घनत्व और विषमता, जो शहरों को परिभाषित करने में प्रमुख लक्षण थे, विशिष्ट व्यवहार पैटर्न और नैतिक दृष्टिकोण के लिए अनुकूल हैं। शहरीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्तियों को शहर के जीवन में शामिल किया जाता है। यह जीवन के तरीके की विशिष्टताओं का संचयी उच्चारण है, जो शहरों के विकास के साथ जुड़ा हुआ है, और अंत में शहरी के रूप में मान्यता प्राप्त जीवन के तरीकों की दिशा में परिवर्तन होता है।

संदर्भ (References)

Beck, Ulrich. 1992. *Risk Society: Towards a New Modernity*. London: Sage.

Bell, Daniel. 1973. *The Coming of Post-Industrial Society: A Venture in Social Forecasting*. New York: Basic Books.

Connell, James O". 1976. "The concept of Modernization' in Cyril. E. Black (ed.) *Comparative Modernization*. New York: The Free Press.

Giddens, Anthony. 1990. *The Consequences of Modernity*. Stanford: Stanford University Press.

H.T. Eldridge. (1976). "The Process of Urbanization', in J. J. Spengler and O. D. Duncan (eds.) *Demographic Analysis*. Glencoe: The Free Press.

Huntington, S. P. 1976. "The Change to Change: Modernization, Development and Politics' in Cyril. E. Black (ed.). *Comparative Modernization*. New York: The Free Press.

Lerner, Daniel. 1958. *The Passing of Traditional Society: Modernizing the Middle East*. Glencoe: Free Press.

Meadows, P. and Mizruchi, E.H. (ed.), 1969, *Urbanism, Urbanization, and Change: Comparative Perspectives*, Addison-Wesley: Reading.

Sjoberg, G. 1960. *The Preindustrial City: Past and Present*. Free Press.

Toffler, Alvin. 1980. *The Third Wave*. Bantam Books.

Wirth, Louis, 1938, "Urbanism as a Way of Life', *American Journal of Sociology*, XLIV.

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

इकाई 5 विकास पर परिप्रेक्ष्य*

इकाई की रूपरेखा

5.0 उद्देश्य

5.1 प्रस्तावना

5.2 विकास पर परिप्रेक्ष्य

5.2.1 आधुनिकीकरण का सिद्धांत

क) आदर्श–प्ररूपी सूचकांक पद्धति

- टालकॉट पार्सन्स का प्रतिमान परिवर्ती चर दृष्टिकोण
- रोस्टो का ऐतिहासिक चरण दृष्टिकोण

ख) प्रसारवादी या उत्संस्करणीय दृष्टिकोण

ग) मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण

5.2.2 विकास और अविकसितता का मार्क्सवादी और नव–मार्क्सवादी दृष्टिकोण

क) निर्भरता का सिद्धांत

- पॉल बैरन
- आंद्रे गौंडर फ्रैंक
- समीर अमीन

ख) वालरस्टीन का विश्व प्रणाली सिद्धांत

5.2.3 विकास पर नव–उदारवादी परिप्रेक्ष्य

5.2.4 वैकल्पिक विकास

5.2.5 मानव विकास परिप्रेक्ष्य

5.2.6 विकास विरोधी परिप्रेक्ष्य

5.3 सारांश

5.4 शब्दावली

5.5 कुछ उपयोगी पुस्तकें

5.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

5.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आपः

विकास के आधुनिकीकरण के सिद्धांत पर चर्चा कर सकेंगे।

विकास और अविकसितता के मार्क्सवादी और नव–मार्क्सवादी दृष्टिकोण का विश्लेषण कर सकेंगे।

विकास के नवउदारवादी परिप्रेक्ष्य का वर्णन कर सकेंगे।

वैकल्पिक विकास और मानव विकास को रेखांकित कर सकेंगे।

विकास विरोधी परिप्रेक्ष्य को समझ सकेंगे।

*प्रो. मनीषा त्रिपाठी पांडे, द्वारा लिखित।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

5.1 प्रस्तावना

इस इकाई में हम विकास के विभिन्न परिप्रेक्ष्यों पर चर्चा करेंगे जैसे आधुनिकीकरण का सिद्धांत, विकास और अविकसितता के मार्क्सवादी और नव–मार्क्सवादी दृष्टिकोण, नवउदारवादी दृष्टिकोण, वैकल्पिक विकास, मानव विकास और विकास विरोधी।

विकास के सिद्धांत का विस्तार द्वितीय विश्व युद्ध के बाद की घटना है, लेकिन विकास और प्रगति के विचार सामाजिक डार्विनवाद के सिद्धांतों, मॉर्गन के क्रूरता, बर्बरता और सभ्यता के विश्लेषणों, मार्क्स के ऐतिहासिक भौतिकवाद, टॉनी के गैमेन्सचाफ्ट और गैसेल्सचाफ्ट, कोम्टे के तीन स्तरों का नियम, दुर्खीम के यान्त्रिक से जैविक एकात्मता और वेबर के तर्कसंगतता के व्यव्हार के सिद्धांतों में मौजूद रहे हैं। पूर्व के विचारों ने विकास को मनुष्य के समाज की विकासवादी प्रक्रिया और परिवर्तन के रूप में देखा। विकासवाद, मार्क्सवाद, नव–मार्क्सवाद, केनेसियनवाद, संरचनात्मक कार्यात्मकता, नवशास्त्रीय अर्थशास्त्र और उत्तर–संरचनावाद सामाजिक विज्ञान के प्रतिमान हैं जिन्होंने अलग–अलग समय में विकास के सिद्धांतों को प्रभावित किया जिन्होंने अलग–अलग समय में विकास के सिद्धांतों को प्रभावित किया। लेकिन क्रिया के रूप में विकास वृद्धि और परिवर्तन की सोची–समझी योजनाबद्ध और निरीक्षण की गई प्रक्रिया थी जो बहुत बाद में सामने आई। 19 वीं शताब्दी से, विकासवादी सोच प्रगति के संकटकाल की प्रतिक्रिया थी, जैसे कि औद्योगीकरण के कारण उत्पन्न हुई सामाजिक समस्याएं। विकास एक बेहतर दुनिया का निर्माण करने के लिए एक परियोजना बन गया। इसे सबसे गरीब तबके के जीवन यापन की स्थितियों में सुधार के रूप में देखा गया। षविकासश अमेरिकी राष्ट्रपति हैरी ट्रूमैन के 1949 के उद्घाटन भाषण में मुख्य एजेंडा था, "हमें अविकसित क्षेत्रों के सुधार और वृद्धि के लिए अपनी वैज्ञानिक उन्नति और औद्योगिक प्रगति के लाभों को उपलब्ध कराने के लिए एक साहसिक नए कार्यक्रम की शुरुआत करनी होगी।"

विकास के तीन युग रहे हैं:

1. 16 वीं शताब्दी के आसपास 'राइज ऑफ मैन' से लेकर यूरोप में आधुनिक राज्यों के उदय तक। इस अवधि में कृषि, शहरों और सभ्यताओं की क्रमागत उन्नति देखी गई।

2. 'यूरोप का उदय' और उत्तरी अमेरिका (16 वीं सी – 20 वीं सी)। इस अवधि में बाजार व्यवस्था, पूंजीवादी संस्थानों और उपनिवेशवाद का उदय हुआ।

3. 1917 से लेकर वैश्विक विकास युग, जिसमें द्वितीय विश्व युद्ध एक ऐतिहासिक घटना थी जिस की परिणति राष्ट्र संघ (लीग ऑफ नेशंस) के गठन की एक ऐतिहासिक घटना थी। विकास का अर्थ केवल सामाजिक सुधार ही नहीं है, बल्कि शक्ति और सम्मान की समानता को बहाल करने के लिए उन्नत देशों के साथ कदम मिलाना भी है।

समय के साथ विकास के मायने बदल गए हैं। प्रारंभ में इसका अर्थ उन्नत औद्योगिक देशों के समकक्ष होना था। बाद में, आर्थिक विकास और पूंजी का संचयीकरण विकास का मुख्य अर्थ बन गया। 1990 के दशक में, फिर मानव कल्याण पर अधिक जोर दिया जाने लगा। इसके बाद, सामाजिक विकास की अवधारणा ने सम्पूर्ण रूप से समाज के विकास पर जोर दिया – जिसमें आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पहलू शामिल हैं। जब वृद्धि की सीमितताओं का ज्ञान हुआ, तो सतत विकास मूलमंत्र बन गया जिसमें 'भविष्य की पीढ़ी की अपनी जरूरतों को पूरा करने की क्षमता से समझौता किए बिना वर्तमान पीढ़ी की जरूरतों' पर ध्यान केंद्रित किया (बुन्डलैंड कमीशन)। इस प्रकार, विकास एक भौतिक

वास्तविकता और एक मनःस्थिति या गरीबी की तात्कालिक समस्याओं को हल करने के सुविचारित इरादे की दोनों है। यहां यह उल्लेख करना महत्वपूर्ण है कि विकास उन प्रभावी पश्चिमी अध्ययनों में से एक है जिसे उत्तर औपनिवेशिक दृष्टिकोण चुनौती देना चाहता हैं और विकास अध्ययनों को औपनिवेशिकता से रहित करने का प्रयास करता हैं। आइए अब हम विकास के विभिन्न दृष्टिकोणों पर चर्चा करें।

5.2 विकास पर परिप्रेक्ष्य

विकास का 'सिद्धांत' एक सीमित धारणा है। इसे 'परिप्रेक्ष्य' या 'विश्लेषण' कहना अधिक उपयुक्त है। विकास का अर्थ इसके बदलते परिप्रेक्ष्य के साथ परिवर्तित हो गया हैः आधुनिकीकरण का सिद्धांत, निर्भरता, नवशास्त्रीय अर्थशास्त्र, वैकल्पिक विकास, मानव विकास और विकासोत्तर। यहाँ नियोजित परिवर्तन या अभियांत्रिकी (इंजीनियरिंग) के रूप में विकास और आसन्न परिवर्तन एक अंतः प्रक्रिया के रूप में विकास इनके बीच में अंतर है। आधुनिकीकरण के सिद्धांत और निर्भरता के सिद्धांत ने ऊपरी और बाहरी तौर पर विकास के तर्क का पालन किया।

विकास के विचार के प्रारंभिक पुरोघा एडम स्मिथ, डेविड रिकार्डो, थॉमस माल्थस और जॉन स्टुअर्ट मिल थे। स्मिथ के द वेल्थ ऑफ नेशंस, के अनुसार इंग्लैंड में धन–सम्पत्ति की अधिकता श्रम और पूंजी के भंडारण की वृद्धि के द्वारा संचालित हुई। माल्थस ने विकास अवरोधी कारकों के साथ–साथ जनसंख्या वृद्धि की सीमितता पर भी जोर दिया। मार्क्स ने ऐतिहासिक रूप से निश्चयात्मक प्रक्रिया में मानव समाजों के विकास में पाँच चरणों की पहचान की। ये सभी शास्त्रीय विचारक सामंती और ग्रामीण से शहरी और औद्योगिक तक समाजों के विकास से चिंतित थेः और मानते थे कि विकास का एक ही प्रक्षेप पथ है जिसका सभी देश अनुसरण करते हैं।

5.2.1 आधुनिकीकरण का सिद्धांत

1950 और 1960 के दशक में, आधुनिकीकरण के सिद्धांत ने अत्यधिक विकसित देशों में विकास की प्रक्रिया में सामान्यताओं की पहचान करने का प्रयास किया। यह एक द्वैतवादी विश्वदृष्टि पर आधारित है, जो आधुनिक जीवन शैली की तुलना में पारंपरिक जीवन शैली का और पश्चिमी संस्कृति की तुलना में स्वदेशी का विरोध करता है। ऐसा मानना है कि 'ट्रिकल–डाउन' (अवरोही प्रवाह) राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और वैश्विक स्तर पर विकसित विश्व से अविकसित विश्व में घटित होगा। जेम्स ओ कॉन्नेल आधुनिकीकरण को एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में परिभाषित करतें है जिससे होकर एक पारंपरिक या एक पूर्व–प्रोद्योगिकीय समाज गुजरता है, जैसे जैसे यह मशीनी प्रौद्योगिकी, तर्कसंगत और धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण और अत्यधिक विभेदित सामाजिक संरचनाओं की विशेषता वाले समाज में परिवर्तित हो जाता है। इसका अर्थ पश्चिमी राजनीतिक और आर्थिक संस्थान को अपनाना है। आधुनिकीकरण सिद्धांत यह प्रस्तावित करता है कि पूंजीवादी आर्थिक तंत्र के प्रयोग के माध्यम से तीसरी दुनिया में सामाजिक विकास हो सकता है। यह सामाजिक परिवर्तन के बारे में दो विचारों से विकसित हुआः

क) पारंपरिक बनाम आधुनिक समाज की अवधारणा।

ख) सकारात्मक्तावाद जिसे वृद्धि के प्रगतिशील चरणों में समाज के उद्भव के रूप में देखा गया।

आधुनिकीकरण के सिद्धांतों ने एक प्रकार से लिखा कि अल्प विकसित देशों के लिए 'नियमावली कैसे विकसित की जाए'। वे सामाजिक परिवर्तन और आर्थिक विकास के समस्या–समाधानवत्ता और नीति–उन्मुख सिद्धांत थे। विश्लेषण की इकाई स्थानीय समुदायों के माध्यम से व्यक्ति से लेकर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय राज्यों तक होती हैं। अमेरिका के राजनीतिक, सैन्य और आर्थिक हितों का विस्तार; नव स्वतंत्र देशों का उदय और शीत युद्धः ये ऐसे कारक थे जिनके कारण 1950 और 1960 के दशक में एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के समाजों और उनके आर्थिक विकास और सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन का अध्ययन हुआ।

उनकी आलोचना करने से पहले, ए.जी. फ्रैंक (1967) ने आधुनिकीकरण के सिद्धांतों के अंतर्गत तीन दृष्टिकोणों/प्रणालियों का मंत्र दियाः

1. आदर्श–प्ररूपी सूचकांक पद्धति
2. प्रसारवादी या उत्संस्करणीय दृष्टिकोण
3. मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण

क) आदर्श–प्ररूपी सूचकांक पद्धति

आदर्श–प्ररूपी सूचकांक पद्धति या अंतर दृष्टिकोण में, एक विकसित अर्थव्यवस्था की सामान्य विशेषताएं एक आदर्श प्रकार के रूप में सारगर्भित होती हैं और जो एक गरीब समाज की आदर्श विशिष्ट विशेषताओं से विषम होती हैं। यहां विकास को एक प्रकार से दूसरे प्रकार में रूपान्तरण के रूप में देखा जाता है। दोनों के बीच एक अंतर की पहचान करके, एक विकास कार्यक्रम पर काम किया जाता है। इस दृष्टिकोण के दो प्रकार हैंः

- होसेलिट्ज (1960) द्वारा अनुकरणीय टेल्कॉट पार्सन्स का प्रतिमान परिवर्तन दृष्टिकोण (पैटर्न वैरिएबल अप्रोच)
- रोस्तो का ऐतिहासिक चरण दृष्टिकोण।

टालकॉट पार्सन्स का परिवर्ती चर दृष्टिकोण

पार्सन्स के अनुसार, किसी भी सामाजिक क्रिया और सामाजिक प्रणाली का विश्लेषण केवल परिवर्तन के पाँच युग्मों प्रतिमान संदर्भ में किया जा सकता है, जो संभवतः सभी सामाजिक क्रियाओं की विशेषता बताते हैं। पार्सन्स का परिवर्ती चर किसी भी सामाजिक प्रणाली में कर्त्ताओं की भूमिका संबंधित आशाओं/अपेक्षाओं में मूल्य अभिविन्यास के वैकल्पिक प्रतिमान हैं। पांच विषम परिवर्ती चर भावात्मक तटस्थता–प्रभावकारिता, सार्वभौमिकता–विशेषवाद, उपलब्धि–प्रतिलेखन, विशिष्टता–प्रसारवाता, और आत्म–अभिविन्यास–सामूहिक अभिविन्यास हैं।

बर्ट होसेलिट्ज ने किसी भी देश में विकास की प्रक्रिया को समझाने के लिए पार्सन्स के आधुनिकीकरण प्रतिमान परिवर्तन का उपयोग किया। उन्होंने आर्थिक विकास के लिए एक पूर्व शर्त के रूप में सांस्कृतिक परिवर्तन पर जोर दिया। उन्होंने आधुनिक और पारंपरिक समाजों में लोगों के बीच व्यवहार में अंतर को देखने के लिए पार्सन्स प्रतिमान परिवर्तन दरों का उपयोग किया। विकसित देश सार्वभौमिकता, उपलब्धि अभिविन्यास, स्नेह तटस्थता, कार्यात्मक विशिष्टता और आत्म–अभिविन्यास के प्रतिमान परिवर्तन को प्रदर्शित करते हैं। दूसरी ओर, अल्पविकसित देशों को विकसित देशों से विपरीत विशेषताओं से चित्रित किया

जाता है – विशेषवाद, आरोपण, प्रभावकारिता, कार्यात्मक प्रसारवादीता और सामूहिक अभिविन्यास। होसेलिट्ज ने कहा कि विकसित करने के लिए, अविकसित देशों को अविकसितता के प्रतिमान परिवर्तन चरों को समाप्त करना चाहिए और विकास के तरीकों को अपनाना चाहिए। बाद वाले चरो से युक्त नि अविकसित समाज से किसी समाज का विस्थापन होने को ही विकास समझा जाता है।

गन्डर फ्रैंक ने पार्सन्स के आधुनिकीकरण के सिद्धांत की आलोचना की, उन्होंने कहा कि यह आनुभविक रूप से अमान्य, सैद्धांतिक रूप से अपर्याप्त और नीति–वार अप्रभावी है। विकासाधीन और विकास समाज में भूमिकाओं की विशेषताओं के साथ संबद्ध नहीं है बल्कि यह समाज की संरचना के साथ जुड़ा हुआ है।

रोस्टो का ऐतिहासिक चरण का दृष्टिकोण

कार्ल मार्क्स ने परिकल्पित किया कि अर्थव्यवस्था गुलामी, सामंतवाद और पूंजीवाद के चरणों से गुजरती है। ये चरण वास्तव में, तकनीकी विकास के बाद कृषि से औद्योगिक तक अर्थव्यवस्था के अवस्थांतर का प्रतिनिधित्व करते हैं। बाद में, डब्ल्यू. डब्ल्यू. रोस्टो की थीसिस भी इस बात की वकालत करती है कि अर्थव्यवस्था को एक चरण से दूसरे चरण तक ऐतिहासिक विकासवादी अनुक्रम से होकर गुजरना होगा।

वॉल्ट डब्ल्यू रोस्टो के विकास के चरणों का सिद्धांत सूचकांक दृष्टिकोण का दूसरा संस्करण है। द स्टोजिस ऑफ इकोनौमिक ग्रोथः ए नॉन कम्यूनिस्ट मैनिर्फेस्टो में रोस्टो (1960) ने अविकसित और विकसित विश्व के बीच अंतर में विकास के कुछ मध्यवर्ती चरणों की पहचान की। माना जाता है कि विकास में अत्यधिक गरीब कृषि समाजों से लेकर अत्यधिक औद्योगिक बड़े पैमाने पर खपत वाली अर्थव्यवस्थाओं तक सभी अर्थव्यवस्थाएं आर्थिक विकास के पांच चरणों से गुजर रहीं हैं। ये चरण इस प्रकार हैः

i) पारंपरिक समाज वे हैं जहां 'उत्पादन कार्य' सीमित हैं; और प्रति व्यक्ति उत्पादन कम है और विज्ञान और प्रौद्योगिकी की अप्राप्यता के कारण वृद्धि नहीं करता है। यहां परिवार और कबीला समूहीकरण पर जोर दिया जाता है। मूल्य 'भाग्यवादी' और राजनीतिक शक्ति विकेंद्रीत होती है।

ii) दूसरा चरण आर्थिक 'उत्थान' (टेक–ऑफ) के लिए पूर्व–परिस्थितियों के एक समुच्चय का विकास है। यह परिवर्तन संक्रमण का दौर है जिसमें पारंपरिक संस्थाएं बदलने लगती हैं। अर्थव्यवस्था धीरे–धीरे आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोग के लिए तैयार हो जाती है।

iii) 'उत्थान' (टेक–ऑफ) चरण, जहां स्थिर विकास के लिए पुराने प्रतिरोधों से उबरा जाता हैं और वृद्धि अर्थव्यवस्था की सामान्य स्थिति बन जाती है।

iv) 'परिपक्वता अभियान' (ड्राइव टू मैच्योरिटी), जो कि अर्थव्यवस्था के बढ़ते परिष्कार का चरण है अर्थात नए उद्योगों को विकसित किया जाता है, आयात पर निर्भरता कम होती है और निर्यात गतिविधियाँ शुरू होती हैं। लाभ अधिकतमकरण जीवित रहने की आवश्यकता बन जाता है।

v) उच्च व्यापक–उपभोग की अवस्था वह है जहाँ एक समृद्ध आबादी और टिकाऊ व परिष्कृत उपभोक्ता उत्पाद और सेवाएँ हैं। समाज के इस चरण में सभी बुनियादी जरूरतों को पूरा किया जाता है और सामाजिक कल्याण और सुरक्षा के लिए अधिक संसाधनों का उपयोग किया जाता है। यहाँ एक कल्याणकारी अवस्था का उदय होता है।

उत्थान पूर्व (टेक–ऑफ) चरणों में अर्थव्यवस्थाओं को सहायता दी जानी चाहिए ताकि उन्हें उत्थान (टेक–ऑफ) चरण में लाया जा सके। विकास के लिए आवश्यक पूर्व परिस्थिति बचत को बढ़ावा देने और पूंजी उत्पन्न करने, अपने लोगों की प्रबंधकीय और उद्यमशील व कुशाग्रता को विकसित करने और आर्थिक विकास की नई चुनौतियों से निपटने के लिए संस्थागत और संरचनात्मक सुधार करने के लिए समाज की बढ़ती दक्षता को संदर्भित करती है। अंतर दृष्टिकोण में मुख्य दोष यह है कि यह विकास और अविकसितता के अंतर्राष्ट्रीय ढांचे को ध्यान में नहीं रखता है, अविकसितता की घरेलू संरचना जिसका केवल एक हिस्सा मात्र है।

ख) प्रसारवादी या उत्संस्करणीय दृष्टिकोण

इस दृष्टिकोण के अनुसार, विकसित से अविकसित देशों में सांस्कृतिक तत्वों के प्रसार से विकास होता है। इन सांस्कृतिक तत्वों की पहचान पूंजी, प्रौद्योगिकी और संस्थानों सहित की जा सकती है। कम विकसित समाजों को विकसित नहीं किया जा सकता है क्योंकि वे विकास की बाधाओं के कारण विकसित विश्व में होने वाले परिवर्तनों से प्रभावित होने में सक्षम नहीं हैं।

ग) मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण

यह इस धारणा पर टिकी हुई है कि यह मूल्य, उद्देश्य या मनोवैज्ञानिक शक्तियाँ हैं जो अंततः आर्थिक और सामाजिक विकास की दर निर्धारित करते हैं। इस शैली की सबसे प्रभावशाली किताबों में से एक है डेविड मैकलेलैंड (1961) द्वारा द अचीविंग सोसाइटी, जो तर्क देती है कि उच्च स्तर की उपलब्धि वाले समाज में ऊर्जावान उद्यमी उत्पन्न होंगे जो बदले में अधिक तेजी से आर्थिक विकास करेंगे। एक मनोवैज्ञानिक विशेषता है जिसे उन्होंने 'एन–अचीवमेंट', या उपलब्धि की आवश्यकता कहा, उद्यमशीलता की भूमिकाओं के लिए अनुकूल व्यक्ति, जो 'उपलब्धि प्रेरणा प्रशिक्षण' के माध्यम से वर्धित हो सकते है।

प्रसारवादी दृष्टिकोण की तरह, यह दृष्टिकोण में भी इस बात पर ध्यान नहीं दिया जाता कि दी गई सामाजिक संरचनाओं में किसी भी बदलाव की आवश्यकता है, ताकि आर्थिक विकास के लिए परिस्थितियां बन सकें। यह व्यक्तियों से अपील करता है कि वे सामाजिक प्रगति की राह पर आगे बढ़ने के लिए मनोवैज्ञानिक रूप से खुद को परिवर्तित करें।

कुल मिलाकर आधुनिकीकरण का सिद्धांत, पारंपरिक समाजों के विशिष्ट महत्व को कम आंकता है और अत्यधिक यूरोकेंद्रित है। यह विविध इतिहास और संस्कृति की अनदेखी करके विकास के अराजनैतिक बनाता है। आधुनिकीकरण सिद्धांत में वर्तमान विषय परंपरा के पुनर्मूल्यांकन पर केंद्रित है, बाधा के रूप में नहीं बल्कि संसाधन के रूप में। अधुनिकता को बहुवचन में विचार करने का चलन भी प्रारंभ हो चूका हैः और उत्तर–आधुनिकता के साथ संलग्नता का भी।

5.2.2 विकास और अविकसितता का मार्क्सवादी और नव–मार्क्सवादी दृष्टिकोण

आधुनिक विश्व में आर्थिक वृद्धि के सामाजिक पहलुओं का अध्ययन करने के लिए दृष्टिकोणों का एक वैकल्पिक समुच्चय है, अर्थात् मार्क्सवादियों द्वारा, जिन्होंने ऐतिहासिक भौतिकवाद की पद्धति को नियोजित किया। इन दृष्टिकोणों ने विकास और अविकसितता की अवधारणाओं का उपयोग इस प्रकार किया जो आधुनिकीकरण सिद्धांतों की मूल नींव पर सवाल उठाते हैं। ऐतिहासिक रूप से, विकसित दुनिया में आर्थिक वृद्धि की प्रक्रिया दुनिया के कुछ अन्य हिस्सों

के अविकसित होने की प्रक्रिया द्वारा आवश्यक रूप से जुडी है। इस दृष्टिकोण से, आधुनिकीकरण सिद्धांत साम्राज्यवादी प्रभुत्व के लिए एक विचारधारा प्रदान करता है।

लेनिन का लेखन पश्चिम में पूँजीवादी विकास की प्रक्रिया को विश्वव्यापी साम्राज्यवादी विस्तार और पूँजीवादी देशों और उपनिवेशों के बीच असमान आर्थिक संबंधों की स्थापना की प्रक्रिया से जोड़ता है। लेकिन सभी निर्भरतावादी विचारक मार्क्सवादी नहीं हैं। साम्राज्यवाद के मार्क्सवादी सिद्धांत (जैसा कि लेनिन द्वारा व्याख्या की गई है) प्रमुख राज्य विस्तार और साम्राज्यवाद क्यों होता है इसकी व्याख्या करते हैं। दूसरी ओर, निर्भरता का सिद्धांत अविकसितता और साम्राज्यवाद के परिणामों की व्याख्या करता है। अविकसितता के सिद्धांत अनिवार्य रूप से निर्भरता के सिद्धांत हैं। ये सिद्धांत पॉल बैरन, आंद्रे गौंडर फ्रैंक, समीर अमीन, इमैनुअल वालरस्टीन और एच मैगडॉफ जैसे विद्वानों द्वारा प्रतिपादित हैं।

क) निर्भरता का सिद्धांत

दक्षिण में देशों की गरीबी को 'विश्व प्रणाली' में उनके एकीकरण के एक उत्पाद के रूप में देखते हुए निर्भरता का सिद्धांत आधुनिकीकरण के सिद्धांत की प्रतिक्रिया के रूप में आया। 1930के दशक के दौरान लैटिन अमेरिकी अर्थशास्त्रियों के बीच निर्भरतावाद (ओपेंडेंशिया) की धारणा के मूल का पता लगाया गया है; युद्ध के बाद की अवधि के दौरान लैटिन अमेरिका (ई सी एल ए) के लिए संयुक्त राष्ट्र के आर्थिक आयोग और अर्जेंटीना के अर्थशास्त्री राउल प्रीबिश के कार्य में। ऐतिहासिक रूप से यह श्रम के अंतर्राष्ट्रीय विभाग की स्थापना के साथ शुरू हुआ, जिसके लिए तीसरी दुनिया के देशों ने कम लागत वाले कच्चे माल के उत्पादक और पश्चिमी यूरोप ने उच्च कीमत वाले तैयार माल के निर्माता के रूप में काम किया। इसने असमान विनिमय के एक रिश्ते को जन्म दिया जिसके कारण व्यापार संतुलन में और गिरावट आई। यह विनिमय असमान्य था क्योंकि शक्ति और श्रम से अधिशेष मूल्य बढ़ गया; और नियंत्रण, विचारधारा और महंगे उत्पाद श्रृंखला से नीचे उतर गए।

निर्भरता एक ऐतिहासिक स्थिति है जो विश्व अर्थव्यवस्था को आकार देती है, जो पूंजी के अंतर्राष्ट्रीयकरण में निहित है (डॉस सैंटोस 1971)। यह राष्ट्रीय विकास नीतियों (सनकेल 1969) पर बाहरी प्रभावों – राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक – के संदर्भ में एक राज्य के आर्थिक विकास की व्याख्या है। इसकी तीन विशेषताएं हैं;

1. निर्भरता अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली को राज्यों के दो समुच्चय के रूप में चित्रित करती है प्रभुत्व–निर्भर / केंद्र–परिधि / महानगरीय–उपग्रह।

2. यह मानता है कि बाहरी ताकतें (विदेशी सहायता, संचार, बहुराष्ट्रीय निगम आदि) आश्रित राज्यों के भीतर आर्थिक गतिविधियों के लिए महत्वपूर्ण हैं।

3. राज्यों के दो समुच्चयों (सेटों) के बीच संबंध गतिशील हैं क्योंकि दोनों के बीच अन्तक्रिया असमान पैटर्न को पुष्ट और घनिष्ट करती है।

निर्भरता सिद्धांत के मुख्य कथन हैं:

- अविकसितता विकसित से भिन्न होती है। दूसरी स्थिति यानि अविकसित एक ऐसी स्थिति है जहां संसाधनों का उपयोग नहीं किया जाता। लेकिन विकसितता एक ऐसी अवस्था है जहां संसाधनों का सक्रिय रूप से इस प्रकार उपयोग किया जाता है जिससे केंद्र को लाभ होता है।

- गरीब देश प्रबुद्धता के वैज्ञानिक परिवर्तनों की कमी के कारण गरीब नहीं हैं, बल्कि इसलिए कि वे कच्चे माल के उत्पादकों के रूप में यूरोपीय आर्थिक प्रणालियों में बलपूर्वक शामिल किये गये हैं।

यह दृष्टिकोण कम विकसित देशों के अविकसित होने को इस तथ्य के परिणाम के रूप में देखता है कि विकसित अमीर देश अविकसित की तुलना में प्रभुत्व और साम्राज्यवादी दावेदारी रखते हैं। प्रयोग करते हैं। पॉल बैरन ने अविकसितता के सिद्धांत का मार्ग दिखलाया। डिपेंडेंसी इज़ डेडः लॉन्ग लिव डिपेंडेंस एंड क्लास स्ट्रगल (1974) में, आंद्रे गौंडर फ्रैंक अमीर और गरीब देशों के बीच वर्ग संघर्ष की वृद्धि को रेखांकित करते है, जो अमीर देशों की आक्रामक नीतियों के कारण भड़क सकता है। समीर अमीन के कार्य जैसे क्लास एंड नेशंसः हिस्टोरीकली एंड इन करंट क्राइसिस (1979), डी–लिंकिंगः टुवड्र्स ए पॉलीसेंट्रिक वर्ल्ड (1990), औपनिवेशिक देशों के पिछड़ेपन में अमीर देशों की भूमिका की बात करता है।

पॉल बैरन (1957) द पॉलिटिकल इकोनॉमी ऑफ ग्रोथ में, निर्भरता के सिद्धांत के हिमायतीयों में पहले थे। उन्होंने देखा कि पूंजीवाद ने, अपनी अंतर्निहित विशेषताओं के कारण, तीसरे विश्व का शोषण किया। पूँजीवादी विश्व पिछड़े विश्व को एक अपरिहार्य आंतरिक प्रदेश के रूप में रखती है और आर्थिक अधिशेष का निस्सारण करती है।

बैरन का तर्क है कि अविकसित और विकसित देशों के बीच ऐतिहासिक संपर्क ने न केवल अविकसित देशों में पूर्व–पूंजीवादी संरचनाओं के अपघटन को तेज किया, बल्कि इसने अविकसित देशों के अधिशेष के एक महत्वपूर्ण हिससे का भी निस्सारण किया; औद्योगीकरण की संभावनाओं को रोका; वर्ग विन्यास को प्रतिबंधित किया और विकसित देशों की आवश्यकताओं के अनुरूप अविकसित देशों विकास प्रक्रिया को विकृत कर दिया।

बैरन स्पष्ट करते हैं कि अविकसित विश्व में वृद्धि के लिए 'उत्कृष्ट' स्थितियों के उद्भव को रोकने वाला सबसे महत्वपूर्ण कारक, उत्पादन और आय की कम मात्रा का कारण आर्थिक अधिशेष की लघुता नहीं है अपितु यह आर्थिक अधिशेष के उपयोग का तरीका है। अधिशेष व्यापारियों, साहूकारों और सभी प्रकार के बिचौलियों द्वारा विनियोजित किया जाता है और परिसंचरण के क्षेत्र से उत्पादन के क्षेत्र तक पूंजी का निकास है, इसके अलावा अन्य बाधाएं औद्योगिक उत्पादन के क्षेत्र में व्यापारिक संचय के प्रवेश को रोकती हैं। बैरन का मानना है कि तीसरी दुनिया के देशों की मौजूदा वर्ग संरचना भी उनकी निर्भर होने की स्थिति के लिए जिम्मेदार है। अविकसित देशों को एक स्वतंत्र विकास दिया गया होता तो अपने प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग अपने दम पर प्रारंभ किया होगा और वो भी उन विदेशी निवेशकों से प्राप्त संसाधन की तुलना में अधिक लाभकारी शर्तों पर। बैरन की तरह, अन्य निर्भरता सिद्धांतकारों ने यह भी तर्क दिया कि चूंकि अविकसित देशों के खर्च पर पश्चिमी विकास हुआ था, इसलिए विकासित देशों का एकमात्र समाधान साम्राज्यवाद प्रणाली से 'मुक्त' होकर समाजवाद में आना है। आर्थिक विकास के समाजवादी मॉडल के लिए बैरन का जुनून उन्हें मार्क्स जैसा ही आदर्शवादी बनाता है।

आंद्रे गौंडर फ्रैंक पॉल बैरन से प्रभावित थे और आधुनिकीकरण के सिद्धांत के आलोचक हैं। वे प्रसार के सिद्धांत को खारिज करते है और मैक्लेलैंड और हेगन की आलोचना भी करते है। वे एक एकल, एकीकृत, विश्वव्यापी पूंजीवादी प्रणाली की विशेषताओं का वर्णन करने के लिए एक महानगरीय–उपग्रह मॉडल देता है। यह मॉडल निर्यात–उन्मुख पूंजीवादी विकास के अधिरोपण द्वारा अपने अधिशेषों के स्वमित्वहरण के माध्यम से अविकसित उपग्रहों (मेक्सिको) के औद्योगिक मेट्रोपोल (यूएसए) के वर्चस्व का वर्णन करता है। यह न केवल

विकसित और अविकसित विश्व के बीच संबंधों पर लागू होता है, बल्कि अविकसित अर्थव्यवस्थाओं के बीच और उनके भीतरी संबंधों के लिए भी, और स्वयं विकसित अर्थव्यवस्थाओं के भीतर भी लागू होता है। उदाहरण के लिए इटली में मिलान और ट्यूरिन हो सकते हैं, दक्षिणी इटली के लिए महानगर और आसपास के उपग्रहों के लिए महानगर के रूप में साओ पाउलो (ब्राजील)। दक्षिणी इटली के लिए महानगर के रूप में इटली में मिलान और ट्यूरिन और आसपास के उपग्रहों के लिए महानगर के रूप में साओ पाउलो (ब्राजील) उदाहरण हो सकते है। विकसित देशों के मामले में, स्कॉटलैंड और ब्रिटेन के बीच या दक्षिणी और उत्तरी अमेरिका के बीच संबंध उदाहरण हो सकते हैं। इस प्रकार, इस मॉडल के अनुसार, एक उपग्रह और एक महानगर के बीच प्रत्येक संपर्क एक प्रवाह है जिसके माध्यम से केंद्र उपग्रहों के आर्थिक अधिशेष के एक हिस्से का प्रयोग करता है।

फ्रैंक ने विश्व व्यवस्था के इतिहास की समय–समय पर प्रस्तुति दी है। विकास और अविकसितता की दोनों प्रक्रियाएं व्यापारी अवधि (1500.1770) में शुरू हुई, औद्योगिक पूंजीवाद (1770.1870) में होकर साम्राज्यवाद (1870.1930) के साथ समाप्त हुई। पूरी प्रक्रिया के दौरान, उपनिवेश, अर्ध–उपनिवेश और नव–उपनिवेश मुख्य रूप से पूंजीवादी महानगर के लाभ के लिए अस्तित्व में थे और एक प्रत्यक्ष परिणाम स्वरूप अविकसित हो गए।

फ्रैंक का तर्क है कि विकास और अविकसितता के बीच अंतर अक्सर आमतौर पर अंतरराष्ट्रीय की बजाय राष्ट्रीय स्तर पर अधिक होता है, और यह भी कि एक सम्पूर्ण रूप में एक देश जितना अधिक अविकसित होता है, उतना ही अधिक विकास के तहत इसका आंतरिक विकास होता है। वे अविकसित भागों की बजाय एक अविकसित या विकसित देश में विकसित क्षेत्र द्वारा वर्चस्व का वर्णन करने के लिए 'आंतरिक उपनिवेशवाद' शब्द का उपयोग करते है। वह पारंपरिक मार्क्सवादी तर्क को अस्वीकार करता है कि कृषिगत अविकसित देशों में विकास की कमी का कारण सामंतवाद का बने रहना। इसके बजाय फ्रैंक का तर्क है कि अविकसित देशों के विकास का एकमात्र तरीका पूंजीवादी व्यवस्था से अलग होना है। वे इस पारंपरिक मार्क्सवादी तर्क को खारिज करता है कि कृषिगत अविकसित देशों में विकास की कमी का कारण सामंतवाद की जड़ता है। इसके बजाय फ्रैंक का तर्क है कि अविकसित देशों के विकास का एकमात्र तरीका पूंजीवादी व्यवस्था से अलग होना है।

इस प्रकार, निर्भरता सिद्धांतकारों का मानना है कि तीसरे विश्व यूरोपीय देशों (जैसा कि आधुनिकीकरण सिद्धांत बताता है) द्वारा अपनाये गए मार्ग के साथ विकास के लिए एक परिपक्व क्षेत्र नहीं है, लेकिन इसके बजाय यह, पश्चिमी पूंजीवादी व्यवस्था का एक सहायक हिस्सा है। परिधि अर्थव्यवस्था और समाज की विकृत संरचना देने के लिए उनकी आलोचना की गई।

वालरस्टीन का विश्व प्रणाली सिद्धांत

विश्व प्रणाली सिद्धांत से जुड़े महत्वपूर्ण सिद्धांतकार इमैनुअल वालरस्टीन और समीर अमीन हैं। यह सिद्धांत अविकसित समाजों का ऐतिहासिक विवरण देता है। यह आंतरिक सामाजिक–आर्थिक संरचनाओं के महत्व की अनदेखी करते हुए, असमानता की अंतर्राष्ट्रीय संरचना पर जोर देता है; और अमीर और गरीब देशों के बीच असमान विनिमय पर केंद्रित है। निर्भरता सिद्धांतवादी वैश्विक अर्थव्यवस्था को बनाए रखने के लिए अंतरराष्ट्रीय वर्गों और वर्ग संरचनाओं की शक्ति पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जबकि विश्व प्रणाली विश्लेषक शक्तिशाली राज्यों और अंतरराज्यीय प्रणाली की भूमिका पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रवृत हैं।

इमैनुअल वालरस्टीन का सिद्धांत निर्भरता सिद्धांतकारों के कार्य में निहित है क्योंकि उनकी तरह, यह पूंजीवादी विश्व अर्थव्यवस्था के विकास के परिणामस्वरूप 'अविकसित के विकास' को स्पष्ट करने का प्रयास करता है। यह एक द्वंद्वात्मक प्रक्रिया है – प्रथम विश्व का विकास और परिणामस्वरूप तीसरे विश्व की अविकसितता। विश्व प्रणाली सिद्धांत राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं और राष्ट्र–राज्य को विश्लेषण की एक इकाई के रूप में छोड़ देता है और यह मानता है कि पूंजीवाद और इसके संबंधित अंतर्राष्ट्रीय विभाजन श्रम, शोषण और असमानता राष्ट्रीय स्तर पर नहीं बल्कि विश्व–स्तर पर आयोजित किए जाते हैं। इसकी हाशिए पर रहने वालों के लिए असमानता व पिछड़ापन और केंद्र परिणाति के लिए प्रगति और धन प्राप्ति के रूप में होती है।

विश्व प्रणाली एक स्व–निहित सामाजिक प्रणाली है जिसमें सीमाएं, संरचनाएं, सदस्य समूह, वैधता और सम्बद्धता के नियम हैं। आधुनिक विश्व प्रणाली ने सामंती व्यवस्था के पतन का अनुसरण किया और बताया कि कैसे पश्चिमी यूरोप का प्रभुत्व 1450और 1670के बीच उभरा। यह मूल रूप से प्रकृति में पूंजीवादी है। ये दो प्रकार की विश्व प्रणालियाँ हैं:

1. विश्व साम्राज्य, जिसका आस्तित्व एकल राजनीतिक प्रणाली के साथ में था। उदाहरण के लिए, रोमन साम्राज्य और ब्रिटिश साम्राज्य।

2. विश्व अर्थव्यवस्था, कई राजनीतिक केंद्रों और कई संस्कृतियों के साथ श्रम के एकल, बड़े अक्षीय विभाजन के साथ। पूंजीवादी विश्व प्रणाली कई अलग–अलग राजनीतिक रूपों (लोकतंत्र, राजशाही) और उत्पादन के विभिन्न रूपों (दासत्व, सामंतवाद) को समायोजित कर सकती है।

वालरस्टाइन ने पूंजीवादी प्रणाली का विश्लेषण करने के लिए केंद्र, परिधि और अर्ध–परिधि से मिलकर बनी तीन–स्तरीय प्रणाली प्रस्तुत की। यह राष्ट्र–राज्यों और उनके बीच पदानुक्रमिक रूप से व्यवस्थिति क्रमबद्ध संबंधों को संदर्भित करता है। विकसित केंद्र (इंग्लैंड, फ्रांस) उस क्षेत्र को दर्शाता है जो अविकसित परिधियों (ब्राजील, मैक्सिको) से अधिशेष पर अनाधिकृत रूप से स्वामित्व करता है। विकासशील अर्ध–परिधीय क्षेत्रों (पुर्तगाल, स्पेन) का अस्तित्व प्रणाली का विध्रुविककरण करता है और प्रणाली के निरंतर अस्तित्व में योगदान देता है। वे अल्पसंख्यक केंद्र क्षेत्रों के खिलाफ संख्यक परिधि के राजनीतिक दावे पर नज़र रखते हैं। ये अर्ध–परिधीय राज्य यह सुनिश्चित करते हैं कि ऊपरी स्तर का सामना अन्य सभी के एकीकृत विरोध से नहीं किया जाए क्योंकि मध्य स्तर शोषित और शोषक दोनों होता है। तीन श्रेणियों के अलावा, वालरस्टाइन 'बाहरी क्षेत्रों' की बात करते हैं, जो अपनी स्वयं की आर्थिक प्रणाली को बनाए रखते हैं। इस क्षेत्र के देशों द्वारा आंतरिक व्यापार को महत्व दिया जाता है। रूस इसका सबसे अच्छा उदाहरण है। विश्व प्रणाली के प्रबंध के विरुद्ध मुख्य आलोचना यह है कि यह अत्यधिक यूरोपकेन्द्रित है।

समीर अमीन ने विश्व प्रणालियों को दो क्षेत्रों में विभाजित किया हैः स्व–केंद्रित प्रणालियाँ और परिधीय प्रणालियाँ और अनिक्वल डेवलेपमेंट (1976) की चर्चा करते है। जो देश स्व–केंद्रित होते हैं, उनकी आंतरिक गतिशील प्रणाली बाहरी संबंधों से अप्रभावित होती है, जबकि परिधि पर स्थित देश केंद्र की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। अमीन का मानना है कि तीसरे विश्व के देश पूंजीवादी विश्व के प्रत्यक्ष प्रभाव में हैं। उत्पादन के अपने स्वयं के अनन्य साधनों के बावजूद, पश्चिमी पूंजीवाद के प्रभाव में, इन देशों में अर्थव्यवस्था की लगभग पश्चिमी के समान पूंजीवादी प्रकृति है। उनके लिए, परिधीय पूंजीवाद का इतिहास 'अल्पकालिक चमत्कारों' और 'दीर्घकालिक अवरोधों', अवरूढ़ता और यहां तक कि प्रतिगमन से भरा है। 'एक्युमुलेशन ऑन

ए वर्ल्ड स्केल' में, अमीन ने अर्थव्यवस्था की विसंहितिकरण/विरूपण और वैश्विक स्तर पर वर्ग हित के ध्रुवीकरण के बारे में बात की, जिसने विश्व पूंजीपति वर्ग के खिलाफ विश्व सर्वहारा वर्ग का नेतृत्व किया।

एफ.एच. कार्डोसो ने गौंडर फ्रैंक और वालरस्टीन की आलोचना करते हुए कहा कि उनके सिद्धांत अपर्याप्त और निश्चयात्मक हैं। वे परिधीयों देशों में स्वदेशी सामाजिक ताकतों और औद्योगिकीकरण की संरचनात्मक गतिशीलता की और परिधि के भीतर वर्ग संघर्षों के प्रभाव की अनदेखी करते हैं। उनके विचार विभिन्न देशों में ऐतिहासिक और संरचनात्मक विशिष्टताओं के प्रश्न को नजरअंदाज करते हैं और विश्व पूंजीवादी व्यवस्था का अत्यधिक एकीकृत दृष्टिकोण प्रदान करते हैं।

हमजा अलावी ने परिधीय पूंजीवाद की संरचना के बारे में लिखते हुए कहा कि औपनिवेशिक और गैर–औपनिवेशिक देशों के बीच अंतर उनके उत्पादन के तरीकों में निहित है। उनका तर्क है कि पूर्व–पूंजीवादी संरचनाएं औपनिवेशिक पूंजी और स्वदेशी पूंजी के विकास द्वारा गहनता पूर्वक रूपांतरित होती हैं।

निर्भरता ने क्षेत्र की सामाजिक संरचना को मोड़ दिया, ताकि स्थानीय सत्ता एक छोटे शासक वर्ग के पास रहे, जिसने निवेश के बजाय विलासिता उपभोग के लिए निर्यात से प्राप्त लाभ का उपयोग किया। प्रभावी देशों में नियंत्रण के बाहरी केंद्रों द्वारा वास्तविक शक्ति का प्रयोग किया गया था। प्रदेश के सबसे गतिशील क्षेत्रों के अंतर्राष्ट्रीय स्वामित्व, प्रौद्योगिकी पर बहुराष्ट्रीय निगमित नियंत्रण, और रॉयल्टी, ब्याज और मुनाफे के भुगतान के माध्यम से वर्तमान में निर्भरता जारी है। विश्व पूँजीवादी व्यवस्था से पीछे हटकर और समाजवादी आधार पर अर्थव्यवस्था और समाज का पुनर्निर्माण करके ही विकास हासिल किया जा सकता है।

अर्गिरी इमैनुअल (1972) के थियोरी ऑफ़ अनिक्वल एक्सचेंज का तर्क है कि देशों के बीच श्रम इतना प्रवाहशील नहीं है जितनी पूंजी है। इसका स्वाभाविक परिणाम यह है कि पश्चिम में श्रम की मज़दूरी इतनी कम नहीं है जितनी कि कम विकसित देशों में है। मजदूरी की कम दरों के कारण, विकसित देशों के उत्पादों की तुलना में कम विकसित देशों में उत्पाद सस्ते होते है। अतः, तृतीय विश्व को निर्यात हेतु अधिक उत्पादन के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

निर्भरता सिद्धांत में वर्तमान प्रवृत्ति नव स्वतंत्र देशों (NICs) का विश्लेषण और समालोचना है। नई राजनीतिक अर्थव्यवस्था और अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक अर्थव्यवस्था जैसे दृष्टिकोण, निर्भरता की सोच का नवीनीकरण करते हैं। इस तरह के विश्लेषण में नवउदारवाद और असमान वैश्विक विकास वर्तमान विषय हैं।

5.2.3 विकास पर नव–उदारवादी परिप्रेक्ष्य

ज्ञानोदय के साथ, पश्चिम में 19 वीं सदी में उदारवाद का विकास हुआ। एक विचारधारा के रूप में, इसने दुनिया के इतिहास को आकार दिया है। उदारवाद समाजवाद और राजनीतिक निरपेक्षता के विरोध में खड़ा हो गया है और स्व–विनियमन के बाजार के सिद्धांत के लिए प्रतिबद्ध है। शास्त्रीय उदारवाद के आदर्श, लाईसेज़–फेयर के विचार के आधार पर, 1980 के दशक में आर्थिक प्रक्रियाओं के उदारीकरण और वैश्वीकरण के रूप में फिर से प्रकट हुए। नव–उदारवादी परिप्रेक्ष्य के अनुसार, आर्थिक वृद्धि संरचनात्मक सुधार, अविनियामन, उदारीकरण और निजीकरण के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। इन सभी ने सरकार की भूमिका

को पीछे खदेड़ किया हैं और बाजार की शक्तियों के हस्तक्षेप को बढ़ा दिया हैं। विकास बाजार द्वारा संचालित वृद्धि है और विकास के लिए एक सांख्यिकीविद् दृष्टिकोण से दूर है। दूसरे शब्दों में, 'विकास' का मूल अर्थ कायम रखा गया है, जो कि आर्थिक वृद्धि है, जबकि 'किस प्रकार' और विकास के अभिकरण राज्य से बाजार तक बदलते रहते है। तदनुसार, नवउदारवाद एक विकास–विरोधी परिप्रेक्ष्य है, लक्ष्यों के संदर्भ में नहीं बल्कि साधनों के संदर्भ में (पीटरसे, 2001)।

5.2.4 वैकल्पिक विकास

इसे 'जमीनी स्तर' या 'लोकप्रिय विकास' और 'भागीदारी सहभागी विकास' के रूप में देखा गया, वैकल्पिक विकास मुख्यधारा के विकास की आलोचना है और वैकल्पिक प्रस्तावों, प्रथाओं और कार्यप्रणाली की एक श्रृंखला प्रदान करता है। विकल्प को राज्य और बाजार के संबंध में विकल्प के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। यहां, विकास समाज द्वारा संचालित होना चाहिए। यह वैकल्पिक विकास प्रतिमान स्थानीय विकास से संबंधित होता है। निर्भरता सिद्धांत और मुख्यधारा का आधुनिकीकरण संरचनात्मक वृहद अर्थव्यवस्था के परिवर्तन पर जोर देते हैं, जबकि वैकल्पिक विकास परिवर्तन को प्रभावित करने की लोगों की क्षमता को बढ़ाने वाले अभिकरण पर जोर देता है। यहां आत्मनिर्भरता पर जोर दिया गया है और यह स्थानीय और जमीनी बुनियादी स्वायत्तता को विशेषाधिकार देता है। लाटूश (1993) ने वैकल्पिक विकास के तीन बुनियादी आधारों की जांच कीः खाद्य आत्मनिर्भरता; मौलिक आवश्यकताएं; और उपयुक्त प्रौद्योगिकियां'। वैकल्पिक विकास के तत्वों, जैसे कि भागीदारी, को मुख्यधारा के दृष्टिकोणों में तेजी से सहयोजित किया गया है। इसकी ताकत जमीनी स्तर के समूहों और सामाजिक आंदोलनों से गैर–सरकारी संगठनों तक स्थानीय विकास और सामाजिक अभिकरण को महत्व देना है।

'वैकल्पिक' आम तौर पर तीन क्षेत्रों – घटकों, विधियों और उद्देश्यों या विकास के मूल्यों को संदर्भित करता है। नेरफिन (1977) के अनुसार, वैकल्पिक विकास 'तीसरी प्रणाली' या नागरिक राजनीति का क्षेत्र है, जिसका महत्व सरकार (स्वामी या पहली प्रणाली) और आर्थिक शक्ति (व्यापारी या दूसरी प्रणाली) के असफल विकास प्रयासों के मद्देनजर स्पष्ट दिखता है। इस प्रकार, वैकल्पिक विकास नीचे के स्तर का विकास है। यहाँ, 'नीचे' का अर्थ 'समुदाय' और 'गैर–सरकारी संगठनों' दोनों से है। दूसरे शब्दों में, वैकल्पिक विकास के घटक समुदाय और गैर–सरकारी संगठन हैं। विकास की कार्यप्रणाली सहभागी, अंतर्जातीय और आत्मनिर्भर है। मुख्य उद्देश्य बुनियादी जरूरतों के लिए तैयार रहना है।

वैकल्पिक विकास का दृष्टिकोण मुख्यधारा के विकास की आलोचना पर दंड है और विकेंद्रीकरण और स्थानीय सशक्तीकरण के अलावा उपलब्ध दूसरे विकल्पों पर कमजोर है। विकास में बड़ा अंतराल अब मुख्यधारा और वैकल्पिक विकास के बीच नहीं बल्कि मुख्यधारा के विकास के भीतर ही है। मुख्यधारा का विकास अब कई वैकल्पिक विकास तत्वों और प्रथाओं को शामिल करता है।

गांधीवादी विकास के परिप्रेक्ष्य को वैकल्पिक विकास के उदाहरण के रूप में देखा जा सकता है। यह भौतिक समृद्धि पर विकास और स्व–विकास की प्रक्रिया में स्वदेशी तकनीक पर जोर देता है। असली प्रगति स्वदेशी में निहित है। गांधी ने गांवों और ग्रामीण उद्योगों के विकास को महत्व दिया, और नियंत्रण के विकेंद्रीकरण के माध्यम से आत्म–विकास और आत्मनिर्भरता के पक्ष में तर्क दिया।

5.2.5 मानव विकास परिप्रेक्ष्य

लम्बे समय से, विकास को संवृद्धि के रूप में परिभाषित किया जा रहा था, जिसे प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद (जीएनपी) के माध्यम से मापा जाता है। धीरे–धीरे विकास को लोगों की पसंद और मानव क्षमता (सेन, 1985) के विस्तार और मानव विकास सूचकांक (प्रति व्यक्ति आय, जीवन प्रत्याशा और शिक्षा) में सुधार के रूप में पुनःपरिभाषित किया गया। मानव विकास विस्तृत तौर पर समग्र मानव कल्याण में सुधार को संदर्भित करता है। मानव विकास के दृष्टिकोण के अनुसार, विकास लोगों की चयन क्षमता का विस्तार है। संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी) 1990 की अपनी मानव विकास रिपोर्ट (एचडीआर) में इस अवधारणा को पुनर्जीवित किया। महबूब उल हक (1995) ने इक्विटी, स्थिरता, उत्पादकता और सशक्तीकरण के मानव विकास प्रतिमान का प्रस्ताव रखा। यह उत्पादकता का तत्व है जो इस प्रतिमान को वैकल्पिक विकास प्रतिमान से अलग करता है। मानव विकास दृष्टिकोण अब लिंग (लिंग विकास सूचकांक के रूप में), राजनीतिक अधिकारों (स्वतंत्रता विकास सूचकांक में) और पर्यावरणीय मामलों (स्थायी मानव विकास) तक विस्तृत हो गया है।

वैकल्पिक और मानव विकास एक साथ स्थानीय, जमीनी स्तर और राज्यों के परिप्रेक्ष्यों के संयोजन का प्रतिनिधित्व करते हैं।

विकास के नारीवादी सिद्धांतों ने लिंग संबंधों से जुड़े अतिरिक्त मुद्दों को उठाया, जैसे कि मताधिकार और निर्णय लेने से महिलाओं का बहिष्कार, संसाधनों, स्वास्थ्य, पोषण और शिक्षा तक पहुंच में कमी। नारीवादियों ने विकास के घटक के रूप में महिलओं के सशक्तिकरण का आह्वान किया। नारीवादी विकास सिद्धांत के विभिन्न रूप विकास में महिलाएं (डब्लू आई डी), महिलाएं और विकास (डब्लू ए डी), लिंग और विकास (जी ए डी), महिलाएं, पर्यावरण और विकास (डब्लू ई डी) और उत्तर आधुनिकता और विकास (पी ए डी) जैसे विभिन्न मामलों से निपटते हैं।

5.2.6 विकास विरोधी परिप्रेक्ष्य

विकास विरोधी और विकास के बाद के दृष्टिकोण विकास की दुविधाओं के लिए एक कट्टरपंथी प्रतिक्रिया के रूप में आए। ये इस विचार को नकारते है कि उत्तरी देशों के पास दक्षिण के विकास और लोकतंत्र के प्रबंधन का अधिकार हो उनके लिए, विकास विनाशकारी और सत्तावादी है। विकास को सांस्कृतिक साम्राज्यवाद, पश्चिमीकरण और समरूपता के रूप में खारिज कर दिया जाता है और यह पर्यावरणीय विनाश लाता है। यह न केवल इसके परिणामों के कारण बल्कि इसके इरादों, इसकी विश्वदृष्टि और मानसिकता के कारण अस्वीकार कर दिया जाता है। (पीटरसे, 2001)। इसका स्थानीय स्वायत्तता की वकालत करते हुए स्थानीय स्वायत्तता के लिये चिंतित है। इसका पारिस्थितिक मुक्ति आंदोलनों के साथ एक संपर्क है और यह वैश्वीकरण का विरोध करता है। विकास विरोधी और वैश्वीकरण विरोधी एक दूसरे के पर्याय बनते जा रहे हैं।

बोध प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दें:

1. आधुनिकीकरण सिद्धांत क्या हैं?
2. निर्भरता सिद्धांत क्या हैं?
3. वैकल्पिक विकास परिप्रेक्ष्य की व्याख्या करें।

5.3 सारांश

इस इकाई में हमने विकास के विभिन्न दृष्टिकोणों जैसे आधुनिकीकरण सिद्धांत, मार्क्सवादी और नव–मार्क्सवादी दृष्टिकोण के विकास और अविकसितता, नवउदारवादी दृष्टिकोण, वैकल्पिक विकास, मानव विकास और विरोधी विकास पर चर्चा की। विकास के विभिन्न दृष्टिकोणों को पिटरसे (2001) द्वारा भली प्रकार सारणीबद्ध रूप से संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है, जिसे नीचे दिया गया हैः

विकास के सिद्धांत और परिभाषाएँ	वर्तमान विषय–वस्तु	भविष्य के विकल्प
आधुनिकीकरण विकास राज्य–संचालित संवृद्धि है। मुख्यः औद्योगिकीकरण, पश्चिमी मॉडल, विदेशी सहायता, रैखिक प्रगति, अभिसरण	'परंपरा' का पुनर्मूल्यांकन। नवआधुनिकतावाद विजयीवादी। 'इतिहास का अंत'।	आधुनिकता बहुल्य। उत्तर–आधुनिकतावाद
निर्भरता कंप्रडर बुर्जियो द्वारा विकास अविकसितता (या आश्रित विकास) है; या राष्ट्रीय बुर्जुआ द्वारा राज्य–संचालित निरंकुश विकास (संबद्ध आश्रित विकास)।	एनआईसी की आलोचना है श्रम का नया अंतर्राष्ट्रीय विभाजन, सामाजिक बहिष्कार। नई राजनीतिक अर्थव्यवस्थाः राज्य को वापस लाती है। अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक अर्थव्यवस्थाः शक्ति और अर्थशास्त्र। असमान वैश्विक विकास।	असमान वैश्वीकरण की आलोचना।
नवशास्त्रीय अर्थशास्त्र, नवउपनिवेभावाद विकास बाजार–संचालित वृद्धि है। नोटः संरचनात्मक सुधार (अविनिमय, निजीकरण, उदारीकरण) के माध्यम से राज्य की विफलता को दूर करें और कीमतें सही रखें	बाजार की विफलता, सुरक्षा संजाल, मानव पूंजी, बुनियादी ढांचा, सुशासन, स्थिरता। कर्ज में कमी। नई संस्थागत अर्थशास्त्रः संस्थागत विश्लेषण।	वित्त का विनियमन। नागरिक अर्थव्यवस्था
वैकल्पिक विकास विकास समाज द्वारा संचालित, न्यायसंगत, सह भागी और टिकाऊ होना चाहिए	मुख्य धारा में अपनाया गया। विकेंद्रीकरण। व्यावसायिकता। वैकल्पिक वैश्वीकरण।	सामाजिक अर्थव्यवस्था, सामाजिक विकास। वैश्विक सुधार
मानव विकास सामर्थ्य या मानव संसाधन विकास, विकास का साधन और अंत है, जिसे मानव विकास सूचकांक में मापा जाता है।	लिंग डीआई, स्वतंत्रता डीआई, मानव सुरक्षा, वैश्विक सुधार	सामाजिक और सांस्कृतिक पूंजी। सामाजिक विकास। वैश्विक सुधार

विकास के सिद्धांत और परिभाषाएँ	वर्तमान विषय–वस्तु	भविष्य के विकल्प
विरोधी विकास विकास विनाशकारी, ओजस्वी, अधिनायकवादी, अतीत है।नोटः प्रवचन विश्लेषण, विज्ञान और आधुनिकता की आलोचना	स्थानीय विसंबंधिकरण। पारिस्थितिक आंदोलनों के साथ संबंध। वैश्वीकरण का विरोध	स्थानीय वाद

स्रोतः पीटरसे, जे.एन. 2001, डेवलपमेंट थ्योरी। प्रष्ट 155, तालिका 10।

5.4 शब्दावली

ट्रिकल–डाउनः यह गरीबी की घटनाओं और आर्थिक विकास की प्रक्रिया के बीच नकारात्मक संबंध (लिंक) को संदर्भित करता है

प्रसारः एक जातीय समूह से दूसरे में संस्कृति के तत्वों का प्रसार

वैश्वीकरणः यह विश्व अर्थव्यवस्था के साथ एक अर्थव्यवस्था को एकीकृत करने की एक प्रक्रिया है। वैश्वीकरण में अवरोधरहित व्यापर प्रवाह, पूंजी प्रवाह, तकनिकी प्रवाह और अंतिम अर्थ में राष्ट्र राज्यों के बीच अवरोधरहित श्रम प्रवाह शामिल हैं।

5.5 कुछ उपयोगी पुस्तकें

पीट, आर. 2005ण्डेवलपमेंट थ्योरी, रावत प्रकाशन, जयपुर।

पीटरसन, जे.एन. 2001णविकास सिद्धांतः डीकंस्ट्रक्शन/रीकंस्ट्रक्शन। लंदनः सेज प्रकाशन लिमिटेड

5.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. आधुनिकीकरण का सिद्धांत, जो कि द्वितीय विश्व युद्ध के बाद की अवधि में उभरा, सामाजिक–परिवर्तन और आर्थिक विकास के समस्या–समाधान और नीति–उन्मुख सिद्धांत हैं, जिन्होंने अल्प–विकसित देशों के लिए एक तरह से नियमावली 'कैसे विकसित की जाए' लिखा।

2. निर्भरता के सिद्धांत विकास और अविकसितता के सिद्धांत थे जिन्होंने आधुनिकीकरण के सिद्धांतों की आलोचना की और अमीर और गरीब देशों के बीच असमान संबंधों और वर्चस्व की संरचना पर ध्यान केंद्रित किया।

3. वैकल्पिक विकास मुख्यधारा के विकास की आलोचना है और वैकल्पिक प्रस्तावों, प्रथाओं और कार्यप्रणाली की एक श्रृंखला प्रदान करता है। विकल्प को राज्य और बाजार के संबंध में विकल्प के रूप में संदर्भित किया जाता है। यहां विकास को समाज के नेतृत्व में देखा जाता है।

संदर्भ

अलवी, हमजा और शनिन, टोडर (सं.). 1982. इंट्रोडक्शन टू दा सोशियोलोजी ऑफ़ डवलपिंग सोसईटीज़, मैकमिलन प्रेस।

अमीन, समीर. 1976. अनिक्वल डेवलेपमेंट। न्यूयॉर्कः मंथली रिव्यू प्रेस।

बारां, पॉल. 1957. दा पोलिटिकल इकनोमि ऑफ़ ग्रोथ। न्यूयॉर्कः मंथली रिव्यू प्रेस।

डॉस सैंटोस, टी. 1971. "दा स्ट्रक्चुअल थियोरी ऑफ़ इंपीरियलिज्म"। जर्नल ऑफ पीस रिसर्च।

इमैनुएल, ए. 1972. अनिक्वल एक्सचेंजः ए स्टडी ऑफ़ दा इम्पिरिअलिज़्म ऑफ़ ट्रेड। न्यूयॉर्कः मंथली रिव्यू प्रेस।

फ्रैंक, आंद्रे गौंडर। 1967. "सोशियोलोजी ऑफ़ डेवलेपमेंट एंड अंडरडेवलेपमेंट"। कैटलिस्ट। 3रू20.73।

हक, महबूब उल. 1995. रिफ्लेक्शन ओन ह्यूमन डेवलेपमेंट. न्यूयॉर्क, ऑक्सफ़ोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस।

हॉसेलिट्ज, बर्ट. 1960. सोशियोलोजीकल आस्पेक्ट ऑफ़ इक्नोमिक ग्रोथ. ग्लेन्को. आईएलः फ्री प्रेस।

लाटूश, एस। 1993. इन द वेक ऑफ द एफ्लुएंट सोसाइटीः एन एक्सप्लोरेशन ऑफ़ पोस्ट–डेवलपमेंट। लंदनः जेड बुक्स।

मैक्लेलैंड, डी.सी. 1961. दा अचीविंग सोसईटी. प्रिंसटन. एन जेः वान नॉस्ट्रैंड।

नेरफिन, मार्क. 1977. अनदर डेवलेपमेंट. उप्पसलाः दाग हम्मास्क्र्जोल्ड फाउंडेशन।

पीट, आर. 2005. थियोरीज़ ऑफ़ डेवलेपमेंट, रावत पब्लिकेशन, जयपुर।

पीटरसन, जे.एन. 2001. विकास सिद्धांतः डीकंस्ट्रक्शन / रीकंस्ट्रक्शन । लंदनः सेज प्रकाशन लिमिटेड

रोस्टो, डब्ल्यू.डब्ल्यू. 1960. दा स्टेजिज़ ऑफ़ इकोनोमिक ग्रोथः ए नॉन–कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो. कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।

सिनकेल, ओ. 1969. "नेशनल डेवलेपमेंट पॉलिसी एंड एक्सटर्नल डेवलेपमेंट". जर्नल ऑफ़ डेवलेपमेंट स्टडीज़।

वालरस्टीन, आई. 1974. द मॉडर्न वर्ल्ड सिस्टम (वोल. 1). न्यूयॉर्कः अकैडमिक प्रेस।

इकाई 6 वैश्विक प्रणाली सिद्धांत*

इकाई की रूपरेखा

6.0 उद्देश्य

6.1 प्रस्तावना

6.2 प्रमुख बौद्धिक प्रभाव

6.2.1 आधुनिकीकरण प्रतिमान के विकास का आलोचनात्मक प्रस्तुतीकरण : निर्भरता का सिद्धांत व व्यापक प्रभाव

6.2.2 अन्य प्रेरणास्त्रोत

6.3 प्रमुख परिभाषाएं एवं अवधारणाऍं

6.3.1 वैश्विक प्रणाली सिद्धांत का प्रारूप क्या है?

6.3.2 उद्भव एवं रूपरेखा

6.4 पूॅंजीवादी वैश्विक अर्थव्यवस्था का ऐतिहासिक परिपेक्ष्य : उत्पत्ति एवं विकास

6.5 आलोचना एवं मूल्यांकन

6.6 सारांश

6.7 शब्दावली

6.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

6.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

6.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आपके लिए संभव होगा :–

- वैश्विक प्रणाली सिद्धांत के प्रमुख बौद्धिक प्रभावों की व्याख्या करना।
- आधुनिकीकरण के प्रतिमान को अलोचनात्मक रूप में व्याख्यायित करना।
- पूंजीवादी वैश्विक अर्थव्यवस्था की धारणा को वैश्विक–प्रणाली सिद्धांत के केन्द्रीय स्वरूप में विस्तृत रूप में विश्लेषित करना।
- वैश्विक–प्रणाली सिद्धांत के आधारभूत अध्ययन के प्रक्रम में इस सिद्धांत की मौलिक संकल्पना व रूपरेखा को व्याख्यायित करना।
- यूरोपीय राष्ट्रों के साम्राज्यवादी और औपनिवेशिक परियोजना के परिणामस्वरूप विश्व पूंजीवादी व्यवस्था के विकास की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का विवेचन करना।
- आर्थिक विस्तार तथा वर्चस्व के अन्य स्वरूपों के मध्य इसके अंतर्संबंधों की व्याख्या करनाः यथा सैन्यशक्ति, राजनीतिक व सत्ता शक्ति तथा सांस्कृतिक स्वरूप।
- वैश्विक प्रणाली सिद्धांत की अलोचनात्मक समीक्षा प्रस्तुत करना तथा इस सिद्धांत की प्रभावोत्पादकता पर प्रकाश डालना।

*कनिका कक्कड़, द्वारा लिखित।

6.1 प्रस्तावना

इस इकाई में हम वैश्विक प्रणाली सिद्धांत पर चर्चा करेंगे। वैश्विक प्रणाली सिद्धांत को 1970 के दशक के आरंभ में एक अमेरिकी समाजशास्त्री व आर्थिक इतिहासकार, इमैनुएल वालरस्टीन (1930–2019) ने एक वष्हद समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य के रूप में विकसित किया था। यह सिद्धांत ''वैश्विक पूंजीवादी अर्थव्यवस्था'' की गतिशीलता को ''समग्र सामाजिक प्रणाली'' के रूप में समझाने का प्रयास करता है।'' (मार्टिनेज–वेला 2001)। वर्श 1974 में प्रकाशित वालरस्टीन की कृतियाँ, "द राइज एंड फ्यूचर डिमाइस ऑफ द वर्ल्ड कैपिटलिस्ट सिस्टम : कॉन्सेप्टस् फॉर कम्पैरेटिव एनालिसिस" (*The Rise and Future demise of the World Capitalist System: Concepts for Comparative Analysis*), तथा "द मॉडर्न वर्ल्ड सिस्टम *I* : कैपिटलिस्ट एग्रीकल्चर एंड द ओरिजिन ऑफ द यूरोपियन वर्ल्ड एकोनॉमी इन द सिक्सटीन्थ सेंचुरी" (*The Modern World System I: Capitalist Agriculture and the Origin of the European World Economy in the Sixteenth Century*) वैश्विक–प्रणाली सिद्धांत को विस्तार से अभिव्यक्त करती है।

खंड 6.2 वैश्विक प्रणाली सिद्धांत की उत्पत्ति पर विकास के आधुनिकीकरण प्रतिमान को एक दृष्टिकोण के रूप में प्रस्तुत करता है। यह दर्शाता है कि वैश्विक प्रणाली का सिद्धांत किस प्रकार से आधुनिकीकरण के प्रतिमान का एक विकल्प है तथा मार्क्सवाद, निर्भरता के सिद्धांत और एनलस स्कूल जैसी कई अन्य सैद्धांतिक परंपराओं से आबद्ध होता है। खंड 6.3 वैश्विक प्रणाली सिद्धांत की मूलभूत विशेषताओं तथा प्रमुख अवधारणाओं को विस्तृत रूप में व्याख्यायित करता है। यह विश्लेषण की केंद्रीय इकाई के रूप में वैश्विक अर्थव्यवस्था की अवधारणा को प्रस्तुत करता है। इस खंड में वैश्विक प्रणाली की त्रिस्तरीय संरचना– मूलभूत संकल्पना, परिधि/रूपरेखा (Periphery) व अर्ध–परिरेखीय (semi-periphery) की संकल्पना को प्रतिबिंम्बित किया गया है। वैश्विक–प्रणाली सिद्धांत ऐतिहासिक रूप से विश्व को एकल आर्थिक प्रणाली के रूप में प्रस्तावित करता है जिसमें कुछ प्रमुख देशों का आधिपत्य है जबकि अन्य देश उनके द्वारा शोषित हैं।

खंड 6.4 वैश्विक पूंजीवादी अर्थव्यवस्था की उत्पत्ति का विवरण प्रदान करता है। यह खंड इतिहास से ढूंढता है कि अतीत काल से ही कुछ ऐसे देश थे जो अपनी बेहतर आर्थिक स्थिति के कारण प्रभावी हुए थे और ये अन्य देशों के शोषक की भूमिका में प्रभावी थे। यह यूरोपीय देशों की साम्राज्यवादी और औपनिवेशिक परियोजना में पूंजीवादी वैश्विक–व्यवस्था और अर्थव्यवस्था की उत्पत्ति और विकास का ऐतिहासिक पृष्ठभूमि प्रस्तुत करता है। इस खंड के अध्ययन में हमें औद्योगिकीकरण और तकनीकी प्रगति की प्रक्रियाओं पर एक महत्वपूर्ण परिप्रेक्ष्य मिलता है, इस प्रक्रिया के अन्तर्गत कुछ देश विकसित होने में विफल रहे हैं तथा आर्थिक रूप से अनुसेवी व शोषित बने रहे। खंड 6.5 में वैश्विक–प्रणाली सिद्धांत की कुछ आलोचनाओं का परीक्षण किया गया है। ऐसा दृष्टिगत होता है कि विभिन्न आधारों पर आलोचनाएँ होने के बावजूद, वैश्विक प्रणाली सिद्धांत पूंजीवाद के उदय और विस्तार का अत्यंत समृद्ध और ज्ञानवर्द्धक विश्लेषण है।

6.2 प्रमुख बौद्धिक प्रभाव

विचारक वालरस्टीन के विचारों को प्रभावित करने तथा वैश्विक–प्रणाली सिद्धांत को आकार प्रदान करने में बौद्धिक स्रोतों की एक वृहद् श्रृंखला हैं। वैश्विक–व्यवस्था का सिद्धांत मुख्य रूप से मार्क्सवाद और नव–माक्सवादी सिद्धांतों से प्रभावित रहा है जो पूंजीवाद और

उसके आर्थिक और भौतिकवादी निहितार्थों, निर्भरता के सिद्धांत और एनलस विचाराधारा पर केंद्रित हैं।

वैश्विक प्रणाली सिद्धांत आर्थिक विकास के पारंपरिक व व्यावहारिक विश्लेषण के लिए एक वैकल्पिक पृष्ठभूमि प्रदान करता है। यह आधुनिकीकरण और औद्योगीकरण के विकास की प्रक्रियाओं के पारंपरिक ज्ञान को समझने के लिए एक आलोचनात्मक दृष्टिकोण के रूप में विकसित हुआ है। इस प्रकार वैश्विक प्रणाली सिद्धांत, निर्भरता के सिद्धांत से अत्यधिक निकट है, क्योंकि यें दोनों ही सिद्धांत मार्क्सवादी परंपरा से आरेखण करते हुये विकास की प्रक्रिया का आलोचनात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं। मार्क्सवादी परंपरा से प्रभावित दोनों ही सिद्धांत, विश्व–प्रणाली सिद्धांत और निर्भरता का सिद्धांत, अधीनस्थ वर्चस्व के बीच पूंजी संचयन तथा प्रतिस्पर्धा और संघर्षपूर्ण हितों की प्रक्रिया के रूप में विकास को प्रतिबिंबित करने के लिए एक आधार प्रदान करते हैं। यह खंड समालोचना को रेखांकित करता है कि वैश्विक प्रणाली सिद्धांत विकास के आधुनिकीकरण के प्रतिमान को प्रस्तुत करता है। साथ ही, यह वैश्विक प्रणाली और निर्भरता सिद्धांत के बीच समानता और अंतर को दर्शाता है। इस खंड में वैश्विक प्रणाली सिद्धांत के विकास में योगदान देने वाली विभिन्न अन्य परंपराओं और सैद्धांतिक प्रभावों को भी इंगित किया गया है।

6.2.1 विकास के आधुनिकीकरण प्रतिमान की आलोचनात्मक आवेक्षणः निर्भरता का सिद्धांत व अन्य दृष्टिकोण

वैश्विक प्रणाली का सिद्धांत दुनिया के विस्तार और पूंजीवाद के विकास के साथ ही आधुनिकीकरण के प्रतिमानों पर एक स्पष्ट वैचारिक विराम प्रदान करता है। यह अपने पूर्ववर्ती निर्भरता के सिद्धांत के साथ निकट संबंध दिखाता है, जो आधुनिकीकरण सिद्धांत के लिए एक समालोचक के रूप में उत्पन्न हुआ। वास्तव में, कई मायनों में वैश्विक प्रणाली के सिद्धांत को निर्भरता के सिद्धांत (चिरोट और हॉल 1982) के अनुकूलन के रूप में माना जाता है। वर्ष 1970 के दशक में जर्मन–अमेरिकी समाजशास्त्री एन्द्रे गौंडर फ्रैंक, जो कि नव–मार्क्सवादी, जर्मन–अमरीकी समाजशास्त्री तथा आर्थिक इतिहासकार थें, विश्व–प्रणाली सिद्धांत की वकालत की। वर्ष 1984 के बाद के वर्षो में इन्होंने इस सिद्धांत के प्रचार में एक मौलिक भूमिका निभाई थी।

बॉक्स 1

निर्भरता का सिद्धांत

निर्भरता सिद्धांत का उदभव 1950 के दशक में हुआ जब सर हैन्स वोल्फगैंग सिंगर, जो जर्मन मूल के ब्रिटिश विकासवादी अर्थशास्त्री थें तथा राउल प्रीबिश जो कि लैटिन अमेरिका के "संयुक्त राष्ट्र आर्थिक आयोग" के निदेशक थें, ने प्रस्तावित किया था कि औद्योगिक देशों और गरीब देशों के मध्य आर्थिक विकास के नकारात्मक सहसंबंध है। प्रसिद्ध सिंगर–प्रीबिश थीसिस में यह बताया गया था कि व्यापार की शर्ते अधिकांशतः प्राथमिक उत्पादों के उत्पादकों के विपरीत कार्य करती है। औद्योगिक दुनिया की आर्थिक वृद्धि का मतलब गरीब देशों के लिए निहितार्थ अहित ही था। यह नवशास्त्रीय विश्लेषण और आधुनिकीकरण सिद्धांत के विपरीत था, जिसने यह माना कि आर्थिक विकास सभी के लिए सकारात्मक परिणाम है, यद्यपि इसके हितकर परिणाम सभी को समान रूप से साझा नहीं किए जा सकते हैं।

निर्भरता के सिद्धांत के सिद्धांतकारों के समान ही वालरस्टीन ने आधुनिकीकरण प्रतिमान पर प्रश्न उठाया कि यह दुनिया भर में पूंजीवाद के विकासवादी पक्ष का एकल सार्वभौमिक मार्ग प्रस्तुत करता है।

आधुनिकीकरण सिद्धांत इस धारणा पर आधारित था कि विकास पूंजीवादी के विभिन्न चरणों की एक श्रृंखला में होता है और अविकसित देश अभी भी प्रारंभिक चरण में हैं, जिस चरण से विकसित देश बहुत पहले गुजर चुके थे। दूसरे शब्दों में, यह बात प्रकाश में लाकर इसने विकास की एक बहुत ही आशावादी धारणा प्रदान की, जिसमें अविकसित देश पिछड़ रहे हैं क्योंकि वे विकास के पहले चरण में हैं जिस चरण से पश्चिम, विशेष रूप से यूरोप बहुत पहले गुजर चुका था। विकास के चरणों के संदर्भ में ऐसा मानचित्रण त्रुटिपूर्ण है क्योंकि यह विश्व अर्थव्यवस्था के विचार को समग्र रूप में एक वैश्विक व्यवस्था बनाने में विफल है। यह 16 वीं शताब्दी के बाद से आरंभ हुयी ऐतिहासिक विश्व पूंजीवाद की उत्पत्ति और विस्तार से विकसित और अविकसित देशों के बीच आर्थिक और अन्य पारस्परिक संबंधों का ब्यौरा देने में विफल रहा है, जैसा कि पहले खंड में देखा गया था।

इस संबंध में निर्भरता के सिद्धांत की तरह वैश्विक प्रणाली सिद्धांत भी मार्क्सवाद के पूर्ववर्ती संस्करणों की तुलना में एक परिष्कृत समझ प्रदान करता है, जो समग्रता के कुछ हिस्सों को स्वीकार करने की प्रवृत्ति रखता है जैसे कि वे स्वतंत्र इकाइयाँ थीं और फिर उनके बीच तुलना करता है। यह, निर्भरता के सिद्धांत के समान, दोहरी अर्थव्यवस्था जैसी अवधारणाओं के संदर्भ में विकास की प्रक्रिया की समझ पर सवाल उठाता है जिसका कई उदारवादी अर्थशास्त्रियों और पारंपरिक मार्क्सवादियों द्वारा प्रयोग किया गया है। इस अवधारणा के अनुसार, दुनिया के अल्पविकसित देशों का गठन दो अलग–अलग अर्थव्यवस्थाओं द्वारा किया जाता है, जिनमें से प्रत्येक के पास एक अलग संरचना, स्वयं का इतिहास और उत्पादन का भिन्न स्वभाव होता है। अविकसित देशों में दो अलग–अलग हिस्से क्रमशः पूर्व–पूँजीवादी/पारंपरिक और पूँजीवादी/उत्पादन की आधुनिक विद्या की मौजूदगी को दर्शाते हैं जो क्रमशः स्थानीय निर्वाह की आवश्यकताओं और वैश्विक निर्यात/नकदी अर्थव्यवस्था की ओर अग्रसर होते हैं। ये अलग–अलग हिस्से उत्पादन के पूंजीवादी पक्ष के साथ विकास और एकीकरण के विभिन्न चरणों का प्रतिबिंब हैं। पूर्व–पूंजीवादी हिस्सा अलग–थलग होने के कारण पिछड़ रहा है, जिसका ''बाहरी'' पूंजीवादी दुनिया से संपर्क नहीं है और वहाँ पारंपरिक और सामंती मूल्यों और विचारधाराओं का प्रसार है। इसके विपरीत, निर्भरता के परिप्रेक्ष्य में वैश्विक प्रणाली का सिद्धांत इस बात पर प्रकाश डालता है कि किसी देश या उसके हिस्से की अविकसितता और पिछड़ेपन को एक विलक्षण विश्व पूंजीवादी व्यवस्था में उसकी भागीदारी के उत्पाद के रूप में समझा जाना चाहिए। दोनों अपनी अर्थव्यवस्था, समाज और राजनीति के साथ एक स्वतंत्र संस्था के रूप में राष्ट्र–राज्य के विचार को चुनौती देते हैं। ऐसा वे विश्व पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के उद्विकास और विकास के परिणामस्वरूप राष्ट्र–राज्यों के निर्माण और पुनर्गठन का प्रतिबिंबित करके दर्शाते हैं।

वैश्विक प्रणाली के सिद्धांत यथा निर्भरता सिद्धांत वैश्विक–पैमाने पर पूंजीवादी प्रणाली को एक संपूर्ण प्रदर्शन के रूप में देखता है कि समकालीन अविकसितता बड़े स्तर पर अतीत के अविकसित और विकसित देशों के बीच चलते आ रहे आर्थिक और अन्य संबंधों का एक ऐतिहासिक उत्पाद है (फ्रैंकः 1989)। विकास के मुद्दे को घरेलू कहानी समझने के स्थान पर, जैसा कि आधुनिकीकरण का दृष्टिकोण, राष्ट्रीय संस्थागत व्यवस्थाओं के आधार पर एक स्थानीय सवाल प्रस्तावित करता है कि, वैश्विक प्रणाली के सिद्धांत ने अंतरराष्ट्रीय संरचनाओं और संस्थानों को स्थानीय और राष्ट्रीय विकास के लिये बाधा उत्पन्न करने वाली और नियंत्रणकारी रूप में देखा। दूसरे शब्दों में, यह सुझाव देने के लिए आधुनिकीकरण सिद्धांत पर सवाल उठाता है जो यह सुझाव देती है कि अविकसित देश पूंजीवादी संस्थानों और विकसित पूंजीवादी देशों (ibid) से मूल्यों को आत्मसात करके विकसित हो सकते हैं।

वैकल्पिक रूप से, वैश्विक प्रणाली का सिद्धांत यह सुझाव देता है कि अविकसित देशों में विकास केवल पूंजीवादी विकसित दुनिया से स्वतंत्र होकर ही हो सकता है।

वैश्विक प्रणाली सिद्धांत, आधुनिकीकरण के परिप्रेक्ष्य की आलोचनात्मक व्याख्या प्रस्तुत करता है, जैसा कि इसके पूर्ववर्ती सिद्धांत, निर्भरता के सिद्धांत द्वारा सबसे प्रभावशाली रूप में स्थापित किया गया है। हालांकि, विश्व–प्रणाली सिद्धांत वैश्विक रूप से एकीकृत प्रक्रिया के रूप में विकास और अविकसितता को समझने के लिए अधिक उन्नत आधार प्रदान करता है। पूंजीवाद के विकास की प्रक्रिया को अभिव्यक्त करने के लिए वॉलरस्टीन ने सम्पूर्ण विश्व को तीन–स्तर में विभाजित किया यथा मुख्य देश, सीमांत देश और अर्ध–सीमांत देश, ये विभाजन विचारक फ्रैंक के द्विपदीय ढांचे की तुलना में विश्व पूंजीवादी विकास के संबंधों को समझने के लिए अधिक सूक्ष्म आधार प्रदान करता है, जो कि दुनिया के विकसित और अविकसित क्षेत्रों को क्रमशः महानगर और उपग्रह क्षेत्रों में विभाजित करता है। इस प्रकार, निर्भरता से विलग होते हुए मौलिक प्रस्ताव यह है कि प्रमुख अग्रणी देश व राज्य अविकसित गरीब देशों का शोषण करते हैं, वॉलरस्टीन ने माना कि सभी अग्रणी व विकसित देश न केवल सीमांत क्षेत्रों वरन् समस्त आर्थिक क्षेत्रों में श्रमिकों का शोषण करते है। वैश्विक प्रणाली सिद्धांत अधिशेष संसाधन का ही नहीं बल्कि अधिशेष मूल्य के पुनर्वितरण के समकालीन समान प्रश्नों का पता लगाने का प्रयास करता है जो अंतर्राष्ट्रीय श्रम विभाजन का एक हिस्सा था। दूसरे शब्दों में, यह ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य को अपना कर पूंजीवादी विस्तार की अधिक प्रासंगिक समझ प्रदान करता है जो निर्भरतावादी सिद्धांतकारों के सुझाये श्रम के बाह्य और सरल विभाजन के बजाय पूंजीवादी संगठन में श्रम के अंतर–विभागीय अप्रचलित और अंतरराष्ट्रीय विभाजन के संदर्भ में बदलाव को ध्यान में रखते हुये सुझाव देता है।

6.2.2 अन्य प्रेरणाएँ

एनलिस विचारधारा की परंपरा ने वैश्विक प्रणाली के सिद्धांत की ऐतिहासिक पद्धति और पूंजीवाद को विश्लेषित करने के दृष्टिकोण को आकार दिया। इस संबंध में वॉलरस्टीन के विचार को प्रभावित करने में फर्नांड ब्ररूडेल की केंद्रीय भूमिका है। ब्ररूडेल की "लॉन्ग ड्यूरे" की अवधारणा, वालरस्टीन को भू–पारिस्थितिक क्षेत्रों के संविधान और पुनर्गठन सहित विश्व पूंजीवाद के इतिहास का अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया। इसने उन्हें विश्व पूंजीवाद की उत्पत्ति के इतिहास का अधिक व्यापक और वृहद विश्लेषण करने के लिए प्रभावित किया, जो उन दीर्घकालिक संरचनाओं, प्रतिमानों और रुझानों को प्राथमिकता देता है जो धीरे–धीरे विकसित हुए लेकिन कभी भी स्थिर नहीं रहे, इस तथ्य पर ध्यान केंद्रित करने के स्थान पर पारंपरिक इतिहास हिस्तोयरे इवेनमेन्ताइले यानि उल्लेखित अल्पावधि के लिए संभावित तथ्यों के ध्यान दिया गया।

बॉक्स 2

फर्नांड ब्ररूडेल "लॉन्ग्यू ड्यूरे" की संकल्पना एवं वैश्विक प्रणाली सिद्धांत

प्रतिष्ठित व प्रभावशाली फ्रांसीसी इतिहासकार फर्नांड ब्ररूडेल (1902–1985) एनलिस परंपरा के प्रमुख प्रतिनिधियों में से एक हैं। ली (2012:1) ने विस्तार से बताया कि ब्ररूडेल को "एक संरचना के रूप में लॉन्ग ड्यूरे में अनुगृहीत सामाजिक समय की बहुलता पर उनके उदाहरण के लिए जाना जाता है, यह वैश्विक–प्रणाली विश्लेषण के मूलभूत वैचारिक आधार प्रदान करता है। एलेन ब्रूनस लिखते हैं, वर्ष 1977 में इमैनुअल वालरस्टीन द्वारा बिंगहैंटन के न्यूयॉर्क विश्वविद्यालय में फर्डिनेंड ब्रैडेल सेंटर की स्थापना के साथ उनके करियर को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विशेष रूप से अमेरिका में प्रसिद्धि प्राप्त हुयी। ली (2012: 3) बताते हैं कि इमैनुएल वालरस्टीन (2004: 18) ने बताया कि

> ''सामाजिक समय की बहुलता पर ब्ररूडेल का आग्रह और संरचनात्मक समय पर उनका बल देना जिसे उन्होंने "लॉन्ग ड्यूरे" संबोधित किया, वैश्विक प्रणाली सिद्धांत के विश्लेषण के लिए केंद्रीय तथ्य बन गया।

वालरस्टीन का लेखन कार्य अन्य महत्वपूर्ण विद्वानों के शोध–कार्यो से प्रेरित हैं यथा निकोलाई कोंड्रेटिव, जोसेफ स्कॉम्पेटर तथा कॉर्ल पॉलयानी। अर्थशास्त्री, निकोलाई कोंड्रेटिव, और जोसेफ स्कॉम्पेटर द्वारा प्रतिपादित व्यवसाय आवर्तन तथा पूंजीवादी विकास के सिद्धांत, का विश्व–प्रणाली के सिद्धांत पर महत्वपूर्ण प्रभाव रहा है। इन दो सिद्धांतो से प्रभावित वैश्विक प्रणाली के सिद्धांत में यह बताया गया है कि नियमित रूप से चक्रीय गति विश्व अर्थव्यवस्था की विशेषता है और आधुनिक इतिहास के अवधिकरण के लिए एक आधार प्रदान करती है।

इसके अतिरिक्त, समाजविज्ञानी, अर्थशास्त्री व मानवविज्ञानी, कार्ल पॉलीनी का आर्थिक प्रणाली और विनिमय पर आधारित त्रिस्तरीय अनुसंधान, क्रमशः पारस्परिक संबद्धता, पुनर्वितरण और बाजार प्रणाली, वालरस्टीन की लघु व्यवस्थाओं, विश्व–साम्राज्य तथा वैश्विक–अर्थव्यवस्था की धारणा पर चर्चाओं के अनुरूप है। इकाई का खंड 6.3 में इन अवधारणाओं पर परिचर्चा की गयी है।

बोध प्रश्न 1

1. रिक्त स्थानों को भरकर निम्नलिखित वाक्यों को पूरा करें

   अ. आधुनिकीकरण सिद्धांत .... धारणा पर आधारित था

   ख. आधुनिकीकरण के परिप्रेक्ष्य में विश्व–प्रणाली के सिद्धांत की समालोचना स्पष्ट रूप से स्थापित करती है .... सबसे प्रभावशाली प्रणेताओं में से एक के रूप में।

   ग. .... वालरस्टीन को विश्व पूंजीवाद के इतिहास के अध्ययन के लिए प्रेरित किया साथ ही निरंतर भू–पारिस्थितिक क्षेत्रों के संस्थापन तथा पुर्ननिर्माण सहित ।

   घ. आर्थिक–मानवविज्ञानी और समाजशास्त्री, कार्ल पॉलानी का शोध .... वालरस्टीन की चर्चा क्रमशः लघु प्रणाली, विश्व–साम्राज्य और वैश्विक–अर्थव्यवस्थाओं से है।

6.3 प्रमुख अवधारणाएँ और परिभाषाएँ

प्रस्तुत अनुभाग वैश्विक प्रणाली के सिद्धांत में वालरस्टीन द्वारा उपयोग की जाने वाली प्रमुख अवधारणाओं को इंगित करता है। इसकी शुरुआत विश्व–व्यवस्था की धारणा से होती है, जो वैश्विक प्रणाली के सिद्धांत के केंद्र में है। ऐसा करने में, यह पूंजीवादी विश्व अर्थव्यवस्था की अवधारणा को दर्शाता है। इसके अलावा, यह उन तीन आर्थिक क्षेत्रों– मुख्य, सीमांत तथा अर्ध–सीमांत पर विस्तार से व्याख्या करता है जो पूंजीगत विश्व अर्थव्यवस्था का गठन करते हैं। विश्व अर्थव्यवस्था के विभिन्न हिस्सों के बीच श्रम और संबंधों का अंतर्राष्ट्रीय विभाजन राष्ट्र–राज्यों के विचार से एक प्रस्थान प्रदान करता है।

6.3.1 विश्व प्रणाली क्या है?

प्रणाली की धारणा वैश्विक प्रणाली सिद्धांत का केंद्रीय तथ्य है, जो इसे विश्लेषण की मूल इकाई के रूप में प्रस्तुत करती है। वालरस्टीन ने अवधारणा से संबंधित अनेक परिभाषाएं और

स्पष्टीकरण दिए हैं। वह इसे व्यापक रूप से एक सामाजिक–आर्थिक इकाई के रूप में परिभाषित करता है जिसमें श्रम का एकल विभाजन होता है जो अपने सदस्यों को परस्पर निर्भरता के रिश्ते में बांधता है।

वॉलरस्टीन लघु–प्रणाली का खंडन करते हुये वैश्विक प्रणाली पर विस्तार से चर्चा करते हैं। उन के अनुसार लघु–प्रणाली श्रम एक एकल विभाजन पर आधारित है और एक एकीकृत संस्कृति है। साधारण कृषिक या शिकारी समाज, लघु–प्रणाली के उदाहरण हैं। इनका बाहरी लोगों के साथ कोई आर्थिक संपर्क नहीं है। इसके विपरीत, जैसा कि पहले बताया गया है कि वैश्विक प्रणाली में श्रम के एकल विभाजन की विशेषता पायी गयी है, जो भिन्न संस्कृतियों को एक साथ बांधती हैं। उनमें आर्थिक समूह और रिश्ते शामिल हैं जो राजनीतिक सीमा और समाज से परे होते हैं। विश्व प्रणाली विश्लेषण लघु प्रणाली को विगत युग और अतीत की विशेषताओं के रूप में प्रतिबिंबित करता है। यह सामाजिक–वास्तविकता की सक्रिय इकाइयों के रूप में वैश्विक प्रणालियों पर ध्यान केंद्रित करता है जिनके नियमों का व्यक्तियों और समाज पर प्रभाव पड़ता है।

वालरस्टीन ने मुख्यतः दो प्रकार की वैश्विक प्रणालियों क्रमशः वैश्विक प्रभुत्व तथा वैश्विक अर्थनीति का वर्णन किया है। वैश्विक साम्राज्य एक वृहद् सत्तावादी संरचना है जो विजय से प्रभुत्व प्राप्त एक सशक्त राजनैतिक केन्द्र पर आधारित है, उदाहर्णाथ प्राचीन काल में रोमन साम्राज्य और आधुनिक इतिहास में ब्रिटिश साम्राज्य। इसके विपरीत, विश्व अर्थव्यवस्था में विभिन्न राजनीतिक संरचनाओं और संस्कृतियों की विशेषता मिश्रित है। इसमें सामान्य राजनीतिक संरचना नहीं है। वालरस्टीन का प्रमुख केन्द्र बिन्दु विश्व अर्थव्यवस्था है। उनके अनुसार आधुनिक काल की विशेषता राजनीतिक हितों के स्थान पर एकीकृत पूंजीवादी अर्थव्यवस्था हो गयी है। विश्व पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के संगठन में आर्थिक लाभ और प्रसार महत्वपूर्ण हैं, न कि राजनीतिक संरचनाएँ। खंड 6.4 आगे बताता है कि विश्व अर्थव्यवस्था ने 16 वीं शताब्दी से बाजार आधारित पूंजीवाद के विकास के साथ आकार लेना शुरू किया। उत्तर पश्चिमी यूरोप बढ़ती हुई कृषि विशेषज्ञता और विविधीकरण के साथ विश्व अर्थव्यवस्था के लिए आर्कशण का केंद्र बन गया और इसे वस्त्र तथा धातु जैसे विनिर्माण उद्योगों के विकास द्वारा अनुपूरक बनाया गया। विनिर्माण क्षेत्र की वृद्धि से व्यापारियों और नवविकसित पूंजीपतियों के बीच विशेष प्रकार के श्रम, कच्चे माल और नए बाजारों की मांग का उदय हुआ। व्यापारिक प्रतंत्रों का विस्तार और बाद में उपनिवेशवाद ने इन मांगों को पूरा करने के लिए एक आधार प्रदान किया। विस्तार मूल कारण राजनैतिक न होकर आर्थिक था। (Tonkiss 2006)

6.3.2 (अग्रणी) सीमांत तथा अर्ध–सीमांत

वैश्विक प्रणाली सिद्धांत यह विश्लेषण करता है कि पूंजीवाद की उत्पत्ति और विस्तार के साथ ही, श्रम के अंतर्राष्ट्रीय विभाजन ने विश्व अर्थव्यवस्था को चार आर्थिक क्षेत्रों क्रमशः मुख्य, सीमांत, अर्ध–सीमांत तथा बाह्यय क्षेत्रों में विभाजित किया। विश्व अर्थव्यवस्था का यह स्तरीकरण वर्ग के मॉक्र्सवादी और वेबरवादी वर्ग विश्लेषण पर प्रतिबिंबित होता है। मॉक्र्स के अनुसार वर्ग, उत्पादन के साधनों के अधिकार–अनाधिकार तथा उत्पादन की शक्ति पर आधारित है। वेबर ने उत्पादन प्रक्रिया में स्वामित्व और व्यावसायिक कौशल दोनों के संबंध में वर्ग को समझा। विश्व अर्थव्यवस्था के तीन आर्थिक क्षेत्र, मुख्य, अर्ध–सीमांत और सीमांत विश्व अर्थव्यवस्था में आर्थिक तथा वर्ग के रूप में विशिष्ट पृथक स्थिति रखते हैं, जिसके आधार पर उपयुक्त अवसर तथा लाभ अर्जित करते हैं या नुकसान और शोषण से पीड़ित होते हैं। आगे विश्व अर्थव्यवस्था के तीन आर्थिक क्षेत्रों की विशेषताओं पर चर्चा की गई हैः

प्रमुख (अग्रणी) देश

अग्रणी देशों की संकल्पना विश्व के आर्थिक तथा सैन्य रूप से सबसे शक्तिशाली और प्रमुख देशों के रूप में की गयी है। प्रमुख देश अत्यधिक औद्योगीकृत हैं, उत्पादन के साधनों पर उनका स्वामित्व हैं साथ ही उत्पादन कार्य में भी अग्रणी हैं। वास्तव में, औद्योगिकीकरण और तकनीकी उन्नति का उनका उच्च स्तर दूसरे आर्थिक क्षेत्रों से कुशल व पारंगत श्रम को आकर्षित करता है। मुख्य देश कच्चे माल के स्थान पर विनिर्मित वस्तुओं के उत्पादक हैं। वे सभी तकनीकी नवाचारों और औद्योगिक विकास के अग्रणी हैं। ये ऐसे देश हैं जो पूंजी के गहन उत्पादन पर ध्यान केंद्रित करते हैं और पूंजीवादी अर्थव्यवस्था से अधिकतम लाभान्वित हुए हैं। उनके पास स्थानीय रूप से मजबूत प्रमुख पूंजीपति वर्ग है जो उन्हें अंतर्राष्ट्रीय वाणिज्य पर नियंत्रण प्राप्त करने और अपने स्वयं के लाभ के लिए इस व्यापार से पूंजी अधिभार निकालने में सक्षम बनाता है।

मुख्य देश गैर–प्रमुख देशों को विशिष्ट रूप से प्रभावित करते हैं। वे सीमांत देशों पर हावी होकर और उनका शोषण करके फायदा उठाते हैं। वे सीमांत देशों से कच्चे माल और सस्ते श्रम लेने बाजार हैं। वे उच्च लागत पर अपने विनिर्मित वस्तुओं को सीमांत देशों में विक्रय कर वहाँ से लाभ अर्जित करते हैं। इसके अतिरिक्त, वे सीमांत देशों में पूंजी निवेश करके अत्यधिक लाभ अर्जित करते हैं, ये गतिविधियां कालान्तर में सीमांत देशों को आश्रित और कमजोर बनाती है।

विश्व पूँजीवादी व्यवस्था का इतिहास सुस्पष्ट करता है कि संसाधनों की पहुँच और आर्थिक प्रभुत्व की चाहत के लिए सीमांत देशों पर अपना वर्चस्व स्थापित करने के लिए प्रमुख देशों के समूहों के बीच एक प्रतिस्पर्धा रही है। अनेक अवसर प्रमाण हैं जहां एक मुख्य देश दूसरे पर अपना वर्चस्व स्थापित करने में सक्षम रहा है। विश्व पूंजीवादी अर्थव्यवस्था की उत्पत्ति के इतिहास में हॉलैंड तथा फिर ब्रिटेन का वाणिज्य पूँजीवाद पर वर्चस्व हमारी बात को प्रणामित करता है। विश्व पूंजीवादी व्यवस्था की उत्पत्ति के इतिहास पर निम्नलिखित खंड तथ्यों को समझने में सहायक होगा। वालरस्टीन ने कहा कि एक अग्रणी राष्ट्र उत्पादन, व्यापार और वित्तीय/बैंकिंग गतिविधि के क्षेत्र में अग्रणी होकर ही दूसरों पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर सकता है। सैन्य प्रभुत्व प्राप्त प्रमुख देश ही इन तीनों क्षेत्रों में प्रभुत्व करता है। हालांकि, विश्व पूंजीवादी व्यवस्था के इतिहास में बेहतर सैन्य और सशस्त्र शक्ति एक अग्रणी देश के आर्थिक प्रभुत्व का आधार नहीं रही है, अपितू सैन्य विस्तार से आर्थिक प्रभुत्व को नुकसान ही हुआ है।

सीमांत देश

सीमांत देश आर्थिक तथा सैन्य रूप से दुनिया के हाशिए पर स्थित शोषित देश हैं। वे हाँ न्यूनतम औद्योगीकरण हैं, उत्पादन के साधन बहुत कम हैं साथ ही वहाँ अकुशल श्रम का एक समुच्चय होता है। सीमांत देश मुख्य रूप से कृषि अर्थव्यवस्था नकदी फसलों के उत्पादक होते हैं जिनके पास किसान आबादी का एक बड़ा आधार होता है। इन देशों में मजबूत केंद्रीय सरकारों का अभाव है साथ ही ये अग्रणी देशों के लिए कच्चे माल के प्राथमिक निर्यातक होते हैं। वे श्रम–साध्य उत्पादन कार्यो में संलग्न होते हैं तथा उन्हें अधिकांशतः अग्रणी देशों की सरकारों द्वारा बाह्यय रूप से निर्धारित किए गए प्रतिरोधी श्रम प्रथाओं पर निर्भर होना पड़ता है। वे अग्रणी देशों के बहु–राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय माध्यमों से निवेश प्राप्ति के लिए विवश होते हैं, जो असमान व्यापार के माध्यम से अधिशेष का स्वामित्वहरण करते हैं। सीमांत देश सामाजिक असमानता का उच्च स्तर प्रकट करते हैं। उनके पास एक छोटा पूंजीपति वर्ग है,

जो बहुराष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय निकायों के साथ संबंध स्थापित करके अपने निहित स्वार्थों को पूरा करता है।

विश्व का इतिहास ऐसे पूंजीवादी व्यवस्था के उदाहरणों से भरा पड़ा है, जिसके तहत, अग्रणी देशों ने अपने लाभ को अधिकतम करने के लिए सीमांत देशों पर अपना एकाधिकार स्थापित करने का प्रयास किया है। इस संदर्भ में, वालरस्टीन की व्यापार एकाग्रता और निवेश एकाग्रता की अवधारणा, जिसके अनुसार सीमांत देश कुछ प्रमुख देशों (या केवल एक) से निवेश प्राप्त करते हैं, प्रासंगिक हो जाती है। एक उच्च व्यापार और निवेश एकाग्रता सीमांतीय देश की कमजोर बेध्य स्थिति को और कमजोर करता है। सीमांत देश के साथ अग्रणी देश के व्यापार और निवेश लेनदेन को समाप्त करने का निर्णय लेने के मामले में, आर्थिक रूप से, सीमांत देश पर सख्त आघात होगा। सीमांतीय देश लेटिन अमेरिका की अमेरिका के साथ व्यापार और निवेश की केन्द्रीकरण की नीति इस बिन्दु को बखूबी से व्याख्यायित करती है।

अर्ध–सीमांत देश

अर्ध–सीमांत देश, ऐसे देश हैं जो मध्यवर्ती हैं और, प्रमुख तथा सीमांत के मध्य में स्थिर हैं। ये ऐसे देश हैं जिन्हें स्वयं को सीमांत की स्थिति में आने से बचाना है, साथ ही साथ अग्रणी वर्ग की श्रेणी में लाने का प्रयास करना है। दूसरे शब्दों में, अर्ध–सीमांत देश, अधोगति वाले अग्रणी देश तथा विकासशील सीमांत देशों के कारण अस्तित्व में आते है। ये औद्योगिक और विकासशील देश हैं, जो विविधता पूर्ण अर्थव्यवस्था बन रहे हैं। सीमांत देशों की अपेक्षा अर्ध–सीमांतीय देशों में अपेक्षाकृत विकसित तथा विविधता पूर्ण अर्थव्यवस्थाएं हैं। हालांकि, वे अंतरराष्ट्रीय व्यापार में प्रमुख देशों के रूप में प्रभावी नहीं हैं। उनके पास सीमांतीय और अग्रणी देशों के साथ क्रमशः निर्यात और आयात द्वारा संबंद्ध है। वालरस्टीन के अनुसार वैश्विक प्रणाली की स्थिरता के लिए अर्ध–सीमांतीय देशों का अस्तित्व अत्यंत महत्वपूर्ण है। अर्ध–सीमांतीय प्रमुख तथा सीमांती देशों के मध्य प्रतिरोधक के रूप में कार्य करते हैं, तथा दो आर्थिक क्षेत्रों का विरोध करते हैं। वे सीमांतीय क्षेत्रों में राजनीतिक दबाव, तनाव और समूहों के विरोध को कम करते हैं जो अग्रणी राज्यों के प्रभुत्व को खतरे में डाल सकते हैं और उन्हें विघटित कर सकते हैं।

सोचें और करें 1

विचार कर उन तरीकों पर प्रकाश डालें, जिसमें सीमांतीय तथा अर्ध–सीमांतीय देश मुख्य देशों द्वारा शोषण से खुद को सुरक्षित कर सकते हैं और अंतर्राष्ट्रीय श्रम विभाजन की स्थिति में अपनी दशा में सुधार कर सकते हैं।

बाह्य क्षेत्र

इसके अतिरिक्त, वालरस्टीन बाह्यय क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। ये ऐसे क्षेत्र हैं जो विश्व पूंजीवादी अर्थव्यवस्था से बाहर हैं। ये क्षेत्र स्वतंत्र रूप से श्रम के विभाजन को बनाए रखते हैं साथ ही उनका विदेशी वाणिज्यिक प्रभाव बहुत कम है। वे बाहरी दुनिया के साथ व्यापार में संलग्न होने के बजाय आंतरिक वाणिज्य में संलग्न हैं। 20 वीं सदी में यूरोपीय विश्व अर्थव्यवस्था में प्रवेश करने तक रूस काफी समय तक इसका उपयुक्त उदाहरण बना रहा।

बोध प्रश्न 2

i. वालरस्टीन विश्व व्यवस्था को कैसे परिभाषित करता है? (दो वाक्यों में बतायें)

....

....

ii. विश्व अर्थव्यवस्था का गठन करने वाले तीन क्षेत्रों की सूची बनाएं?

....

iii. बाहरी क्षेत्रों से आप क्या समझते हैं?

....

6.4 पूंजीवादी विश्व अर्थव्यवस्था का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्यः उत्पत्ति और विकास

वालरस्टीन ने पूंजीवादी विश्व आर्थिक व्यवस्था की उत्पत्ति के लिए एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य प्रदान किया है। उनके अनुसार 16 वीं सदी के बाद उत्पादन के पूंजीवादी प्रणाली ने विश्व की अर्थव्यवस्था में नया आकार लिया, साथ ही वाणिज्य व्यापार का भी उद्भव हुआ। (टान्किस 2006)। वह विश्व की अर्थव्यवस्था को श्रम के एकल विभाजन के साथ आर्थिक रूप से एकीकृत के रूप में देखता है, साथ ही विभिन्न सांस्कृतिक और राजनीतिक प्रणालियों को भी शामिल करता है।

वालरस्टीन (1974) ने उत्तरी यूरोप में लंबे समय से प्रभावी सामंतवाद के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुये संकट के एक अनपेक्षित परिणाम के रूप में पूंजीवाद की उत्पत्ति का पता लगाया। यूरोप ने औद्योगिक और तकनीकी रूप से मजबूत होने के लिए पूंजीवाद को आसानी से अपनाया और विश्व आर्थिक व्यवस्था में अपना प्रभुत्व और आधिपत्य स्थापित करने के लिए इसका उपयोग किया। यूरोप की औपनिवेशिक और साम्राज्यवादी परियोजनाएँ पूँजीवादी आर्थिक व्यवस्था के विश्वव्यापी प्रसार के प्रमाण हैं, जिससे दुनिया के कई विकासशील देशों में अविकसितता का विकास होता है।

यूरोप ने दुनिया भर में व्यापार करने के लिए औद्योगीकरण और तकनीकी विकास के रास्ते पर कदम रखा। इसकी बेहतर सैन्य स्थिति ने उसे व्यापार मार्गों पर नियंत्रण पाने और विश्व आर्थिक व्यवस्था में अपना प्रभुत्व स्थापित करने की सुविधा प्रदान की। वालरस्टीन के अनुसार, यूरोप की उपनिवेशवादी अन्वेषण ने पहली बार इतने बड़े पैमाने की आर्थिक व्यवस्था की स्थापना की, जिसमें दुनिया की अधिकांश राष्ट्रीय सीमाओं और राजनीतिक सीमाओं को शामिल किया गया था। इतिहास में ऐसी बड़ी आर्थिक प्रणालियाँ प्राचीन काल में रोमन साम्राज्य के रूप में साम्राज्यों में विद्यमान थीं, हालाँकि ये नई विश्व अर्थव्यवस्था से भिन्न थीं क्योंकि खंड 6.3 में इनमें से एक भी राजनीतिक इकाई का वर्णन नहीं है। यह भी बताया गया कि ये विश्व–साम्राज्य थे, जिन्होंने सरकारों की प्रणाली को परिभाषित किया था और नियंत्रण तथा विशिष्ट राजनीतिक सीमाओं के भीतर आर्थिक लाभ को आकर्षित किया था। दूसरे शब्दों में जैसा कि पूर्व की खंड में विस्तार से व्याख्यायित किया गया है, कि वैश्विक–साम्राज्य, सामूहिक राजनीतिक संरचना द्वारा संचालित होता है जो कि प्रायः प्रभावशाली शक्ति द्वारा निर्धारित होती है। (टान्किस 2006)। इसके अतिरिक्त, विश्व–साम्राज्य में व्यापारियों के विशाल समूह लंबी दूरी के व्यापार में संलग्न थे, वे समग्र अर्थव्यवस्था के लिए बहुत कम महत्व रखते थे। साथ ही ये व्यापारी वर्ग बाजार व्यापार नहीं 'प्रशासित व्यापार' में लगे हुए थे तथा व्यापार के बंदरगाहों का उपयोग कर रहे थे, जो आधुनिक विश्व अर्थव्यवस्था में केवल वृद्धि के साथ शुरू हुआ था (वालरस्टीन 1974 एः 391)। विश्व–साम्राज्य मुख्यतः पुनर्वितरण के आर्थिक स्वरूप थे। (वही)

इसके विपरीत, आधुनिक पूंजीवाद के उदय के कारण वैश्विक अर्थव्यवस्था तथा बाजार

व्यापार की प्रवृत्ति का उदय हुआ, जिसकी सीमा किसी भी एक साम्राज्य की राजनीतिक और प्रशासनिक सीमाओं से परे थी। राजनीतिक रूप से एकीकृत विश्व साम्राज्य से वैश्विक अर्थव्यवस्था में अंतर वैश्विक आर्थिक प्रणाली के रूप में उभरा। यह श्रम के एक अंतरराष्ट्रीय विभाजन पर आधारित था, जो दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों, उनके श्रम संगठनधस्थितियों और राजनीतिक प्रणालियों की प्रकृति के बीच संबंधों को निर्धारित करने के लिए एक आधार प्रदान करता था।

जैसा कि पहले खंड में उल्लेख किया गया है, वालरस्टीन (1974 ए और बी) के अनुसार श्रम के अंतर्राष्ट्रीय विभाजन ने वैश्विक प्रणाली को तीन व्यापक आर्थिक क्षेत्रों अर्थात् प्रमुख, सीमांत, अर्ध–सीमांत में विभाजित किया है। पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में अग्रणी प्रमुख क्षेत्र है, अर्ध–सीमांत मध्यवर्ती अर्थव्यवस्थाएं हैं और सीमांतीय अविकसित या आश्रित अर्थव्यवस्थाएं हैं। वालरस्टीन ने पूंजीवादी विश्व अर्थव्यवस्था के ऐतिहासिक विकास पर ध्यान केंद्रित किया है जो एक प्रणाली (1974ः 406) के रूप में इसके विकास के चरणों को दर्शाता है। सोलहवीं शताब्दी के आरंभ में यूरोप में इसकी शुरुआत से, अंतर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के तीन या तार्किक रूप से चार, अंतर्राष्ट्रीय श्रम के विभाजन हैं।(हचिंसन 2004ः 3)

16 वीं शताब्दी में यूरोपीय उपनिवेश के शुरुआती दौर में श्रम का पहला अंतर्राष्ट्रीय विभाजन, अग्रणी देशों के बीच अल्पविकसित विनिमय और आर्थिक परिधि (निष्कर्षण) से निकासी पर आधारित था। अग्रणी देशो का गठन प्रमुख आर्थिक क्षेत्र के रूप में किया गया था। जैसा कि पूर्व में बताया गया है कि ये अग्रणी शक्ति मुख्य रूप से उत्तर पश्चिमी यूरोप में स्थित थे। (टान्किस 2006)। अग्रणी देश, यूरोप के उत्तर पश्चिम में, सैन्य और व्यापार नियंत्रण के अगुआ थे। ये राष्ट्र विशेष रूप से कृषि, खनिज, और मूल वस्तु उत्पादन में लगे हुए थे, जिसका व्यापार आस–पास के देशों (हचिन्सन 2004ः 3) के साथ किया जाता था। पूंजीवादी विस्तार के शुरुआती चरण में आर्थिक परिधि, में अमेरिका और कैरिबियन सहित पूर्वी यूरोप और पश्चिमी गोलार्ध के देश शामिल थे। अग्रणी देशों के साथ उनके संबंधों को उनकी बड़ी किसान आबादी द्वारा दासता, गिरमिटिया श्रम और नकदी–फसल उत्पादन द्वारा चिह्नित किया गया था। ये देश कच्चे माल, अपरिश्कृत कृषि वस्तुओं और खनिज संपदा और सस्ते श्रम के स्रोत थे। भूमध्यसागरीय यूरोप ने पूंजीवादी विस्तार के शुरुआती दौर में अर्ध–सीमांतीय का गठन किया। अग्रणी राज्यों को मजबूत राज्य संगठन और एक शक्तिशाली पूंजीपति वर्ग द्वारा चिह्नित किया गया था, जिन्होंने सीमांतीय देशों के साथ असमान विनिमय को लागू करके विश्व–बाजार में अपनी स्थिति को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, जो कमजोर राज्य की विशेषता थी।

यूरोप की विश्व–अर्थव्यवस्था का एक और समेकन 18 वीं शताब्दी में आधुनिक विश्व अर्थव्यवस्था के दूसरे चरण में देखा जाता है। इस स्थिति को ब्रिटेन के उद्‌भव के रूप में चिह्नित किया गया था, जो कि नीदरलैंड को वाणिज्यिक प्रधानता से बाहर करने वाला मुख्य राष्ट्र था। ब्रिटेन आर्थिक रूप से मजबूत होने के साथ ही फ्रांसीसी प्रयासों का प्रतिरोध करने में भी सक्षम था।

पूंजीवादी विश्व अर्थव्यवस्था का तीसरा चरण 19 वीं शताब्दी की शुरुआत में कृषि पूंजीवाद के स्थान पर औद्योगिक चरण के रूप में शुरू हुआ। यह यूरोप में विनिर्माण उद्योग के तेजी से विकास द्वारा चिह्नित किया गया था। अग्रणी देशों ने सीमांतीय देशों के कृषि उत्पादों के बदले विनिर्मित उत्पाद का आदान–प्रदान किया, इसलिए 1815–1873 तक ब्रिटेन दुनिया की कार्यशाला के रूप में उभरा। '(वालरस्टीन 1974 एः 410)। बेहतर सैन्य और नौपरिवहन सुविधाओं ने ब्रिटेन के लिए व्यापार को अधिक व्यवहार्य और सस्ता बना दिया था। ब्रिटेन में

इस अवधि के दौरान फ्रांस, जर्मनी, बेल्जियम और अमेरिका के अर्ध–सीमांतीय देशों को उनकी आधी जरूरतें की आपूर्ति कीं जिन्होंने कुछ निर्माण कार्य किये थे।

यह अवधि यूरोपीय विश्व–अर्थव्यवस्था के भौगोलिक विस्तार में समस्त विश्व को समाहित करने का प्रमाण देती है। यूरोपीय विश्व अर्थव्यवस्था और उपनिवेशी विजय के भौगोलिक विस्तार ने 19 वीं सदी के उत्तरार्ध में अफ्रीका और दक्षिणी एशिया को सीमांतीय क्षेत्रों में शामिल किया। 19 वीं शताब्दी के अंतिम दो दशकों के दौरान 'अफ्रीका के लिए संघर्ष' यूरोपीय देशों के बीच विस्तारित हुई और दुनिया की सबसे दूरस्थ क्षेत्रों के एकीकरण के लिए यूरोपीय शक्तियों के बीच अपने कब्जे और विभाजन का नेतृत्व किया।

यूरोपीय वैश्विक अर्थव्यवस्था के सीमा–क्षेत्र से बाहर सबसे शक्तिशाली देश रूस के अर्ध–सीमांतीय देश की स्थिति में उसमें प्रवेश किया। स्पेन से स्वतंत्र लैटिन अमेरिकी देश ने सीमांतीय क्षेत्र की अपनी स्थिति को बदलने में विफल रहे। जापान अपने राज्य यंत्रीकरण की ताकत के संयोजन के कारण, आधारभूत संसाधन की उपलब्धता तथा प्रमुख देशों से भौगोलिक दूरी के कारण अर्ध–सीमांतीय की स्थिति से आगे बढनें में सक्षम था। सीमांतीय के रूप में विशाल क्षेत्रों का निर्माण कुछ अन्य देशों की स्थिति में महत्वपूर्ण बदलाव लाया। विनिर्माण क्षेत्र में अमेरिका और जर्मनी ने बढ़त हासिल की, प्रथम विश्व युद्ध से पहले अमेरिका काफी हद तक औद्योगिकीकरण करने में सक्षम हो गया था।

प्रथम विश्व युद्ध और 1917 में रूसी क्रांति का अंत नए युग की शुरुआत थी, जो विश्व अर्थव्यवस्था का चौथा चरण था। यह औद्योगिक पूंजीवादी वैश्विक अर्थव्यवस्था के समेकन का चरण है। रूसी क्रांति के रूप में यह आकार ले रहा था रूस की स्थिति में अर्ध–सीमांतीय से सीमांतीय तक गिरावट आई थी। हालांकि, द्वितीय विश्व युद्ध के अंत तक स्थिति को बदलना था, रूस अर्ध–सीमांतीय देशों के एक शक्तिशाली सदस्य के रूप में उभरा जो पूर्णरूप से अग्रणी की स्थिति की ओर अन्वेषण आरंभ कर सकता था।

19 वीं शताब्दी के अंतिम दो दशकों में ब्रिटेन की आधिपत्य की स्थिति में अधोगति देखी गई तथा प्रथम विश्व युद्ध के बाद संयुक्त राज्य अमेरिका की आर्थिक रूप से प्रभावी भूमिका को स्वीकृति मिली। ब्रिटेन की आर्थिक गिरावट का महत्वपूर्ण कारण औपनिवेशिक प्रणाली और युद्ध में भाग लेना था जिसने अपनी सेना पर दबाव डालना शुरू कर दिया था। फिर से, ब्रिटेन द्वारा अपना स्पष्ट प्रभुत्व खो देना मुख्य संघर्ष का एक बड़ा कारण था। इस बार यह जर्मनी था, और बाद में इटली और जापान ने नया खतरा उत्पन्न किया।

हालांकि, प्रथम विश्व युद्ध में हार से जर्मनी की लोकप्रियता और वैश्विक बाजारों में उसके प्रभुत्व में गिरावट आई। मध्य पूर्व और दक्षिण अमेरिका में नए औद्योगिक केन्द्र खोजने के लिए 1920 के दशक में विभिन्न जर्मन प्रयास ब्रिटेन के निरंतर सापेक्ष ताकत के साथ से संयुक्त राज्य अमेरिका के जोर के सामने असफल रहे थे। द्वितीय विश्व युद्ध के विनाश के बाद, जापान और यूरोप के साथ, यू0एस0ए0 ने प्रभुत्व प्राप्त किया तथा किसी भी अन्य देश की अपेक्षा में आधुनिक विश्व प्रणाली पर हावी होने के लिए उभर कर आया। इस अवधि के दौरान यू0एस0ए0 ने अपने औद्योगिक उत्पादन में जबरदस्त वृद्धि हासिल की और इसके विक्रय के लिए उसे बाजारों की आवश्यकता थी। यू0एस0ए0 की आर्थिक प्रबलता इस बात से स्पष्ट हुई कि उसने दुनिया के औद्योगिक उत्पादन का आधा हिस्सा बनाना शुरू कर दिया और दुनिया के एक तिहाई निर्यात की आपूर्ति की।(कैनेडी, पॉल 1987)

हालाँकि, शीत युद्ध ने यू0एस0ए0 को पूर्वी यूरोप में बाजारों से वंचित कर दिया। विकल्प के रूप में यू.एस.ए ने पश्चिमी यूरोप, लैटिन अमेरिका, दक्षिण एशिया और मध्य पूर्व के बाजारों

की खोज का प्रयास किया। हालांकि, इसके लिए पश्चिमी यूरोप के पुनर्निर्माण और दक्षिण एशिया, मध्य पूर्व और अफ्रीका के विघटन की आवश्यकता थी। नतीजतन, द्वितीय विश्व युद्ध के बाद लैटिन अमेरिका, यू0एस0ए0 के निवेश के लिये आरक्षित हो गया और व्यापार के लिए ब्रिटेन और जर्मनी से पूरी तरह कट गया।

शीत युद्ध की समाप्ति और 20 वीं शताब्दी के अंत ने यू0एस0ए0 की विषम स्थिति में एक बदलाव को चिह्नित किया गया, क्योंकि यह केवल यू0एस0ए0 ही नहीं था, बल्कि इसके साथ पश्चिमी यूरोप और जापान के अन्य औद्योगिक देशों ने विश्व प्रणाली का मूलभूत गठन किया था। अर्ध–सीमांतीय देशों का समुच्चय साधारणतः सिंगापुर, हांगकांग, दक्षिण कोरिया, भारत और चीन जैसे स्वतंत्र राज्यों से बनी थी, जिन्होंने औद्योगिकीकरण और प्रभाव के पश्चिमी स्तर को प्राप्त नहीं किया था, जबकि बांग्लादेश, अफगानिस्तान, श्रीलंका और मध्य अफ्रीकी गणराज्य सबसे अधिक सीमांत तथा आर्थिक रूप से निर्भर देश बन कर रह गये थे।

सोचें और करें 2

भारत में श्रम के अंतर्राष्ट्रीय विभाजन में उसकी अर्ध–सीमांतीय स्थिति पर प्रकाश डालते हुए एक लघु निबंध लिखें।

बोध प्रश्न 3

रिक्त स्थानों को भरकर निम्नलिखित वाक्यों को पूरा करें:

i. वालरस्टाइन ने पूँजीवाद की उत्पत्ति का पता लगाया ....

ii. श्रम का पहला अंतर्राष्ट्रीय विभाजन .... सीमांतीय देशों के बीच अल्पविकसित विनिमय और आर्थिक परिधि से निष्कर्षण पर आधारित था।

iii. 18 वीं शताब्दी में आधुनिक विश्व अर्थव्यवस्था का दूसरा चरण .... द्वारा चिह्नित किया गया था।

iv. पूंजीवादी विश्व अर्थव्यवस्था के तीसरे चरण को .... द्वारा चिह्नित किया गया था।

v. प्रथम विश्व युद्ध का अंत तथा 1917 में रूसी क्रांति आरंभ था ....

6.5 आलोचना और मूल्यांकन

हालांकि वालरस्टीन की वैश्विक प्रणाली का सिद्धांत प्रभावशाली है, इसने कई आलोचनाओं को आकर्षित किया है। ये निम्नांकित हैं:

- वैश्विक प्रणाली के सिद्धांत पर आरोप है कि यह पूंजीवादी वैश्विक अर्थव्यवस्था की उत्पत्ति और विस्तार को समझने के लिए यह एक यूरोप केंद्रित दृष्टिकोण है। यह यूरोप के साथ शुरू होता है, और यह वैश्विक अर्थव्यवस्था के रूप में पूंजीवाद के प्रसार को यूरोप के अग्रणी क्षेत्र के प्रभुत्व में ही खोजता है। (Tonkiss 2006) । ऐसे भी सिद्धांत हैं जो इस दृष्टिकोण पर सवाल उठाते हैं कि यूरोप पूंजीवाद और उसके विकास का केन्द्र में था। इस तरह के कई सिद्धांत यह दावा करते हैं कि यह चीन था, न कि यूरोप जो कि लंबे समय तक विस्तारित एफ्रो–यूरेशियन विश्व प्रणाली का मूल आधार था (वही)।

> 18 वीं शताब्दी में चीन यूरोप के अधिकांश हिस्सों की तुलना में अधिक उन्नत था। 19 वीं सदी में चीन एक महत्वपूर्ण आर्थिक शक्ति बना रहा। (ibid.)। 21 वीं सदी में चीन का उदय नए आर्थिक शक्ति के उद्‌भव को इंगित नहीं करता है, अपितू अपेक्षाकृत संक्षिप्त अवधि के बाद एक पुरानी शक्ति के पुनरुद्धार को दर्शाता है। (ibid.)।

दूसरा, वैश्विक प्रणाली के सिद्धांत की आलोचना यह होती है कि यह आर्थिक प्रक्रियाओं को बहुत महत्व देता है और सांस्कृतिक परिवर्तन की उपेक्षा करता है। आर0 रॉबर्टसन तथा एफ0 लेचनर के अनुसार वैश्विक संस्कृति की एक वैश्विक प्रणाली है जो पूँजीवाद की आर्थिक प्रक्रियाओं से पूरी तरह से स्वायत्त है (एबरक्रॉम्बी, हिल और ट्यूनर 2000ः 398)।

तीसरा, वैश्विक प्रणाली सिद्धांत परिवर्तन लाने के लिए वर्ग संघर्ष जैसे आंतरिक कारकों के महत्व को नजरअंदाज करता है। यह किसी देश के भविष्य के निर्धारण करने में बाहरी शक्तियों और विश्व अर्थव्यवस्था की स्थिति पर अत्यधिक बल देता है।

चौथा, वैश्विक–प्रणाली के सिद्धांत में पूरी तरह से स्पष्ट नहीं है कि सीमांतीय समाज अग्रणी क्षेत्रों द्वारा अविकसित हैं, क्योंकि अधिकांश व्यापार और निवेश उन समाजों के बीच होते हैं जो पहले से ही विकसित और औद्योगीकृत हैं। (वही)

पांचवें, वैश्विक प्रणाली सिद्धांत के अनुसार, सभी गतिविधियां प्रमुख, सीमांत तथा अर्ध–सीमांत देशों द्वारा गठित संरचनात्मक प्रणाली के भीतर होती हैं। हालाँकि, 1990 के दशक से वैश्वीकरण की अवधारणा ने इस दृष्टिकोण को चुनौती दी है। हार्वे और अप्पादुरई जैसे विचारकों के वैश्वीकरण सिद्धांत हैं जो वैश्विक प्रवाह की धारणा की वकालत करते हैं, जो हमें उन अंतरिक्ष की पारंपरिक भौगोलिक समझ से परे ले जाते हैं जैसा कि विश्व–प्रणाली सिद्धांत बताया है। ये प्रवाह व्यक्तियों, पूंजी, प्रौद्योगिकी, सूचना और विचारों के हो सकते हैं, जो कि नृवंशविज्ञान, वित्त, दृष्टिकोण, तकनीकी, के विचारधारा के सिद्धांतों में स्पष्ट हैं। ये प्रवाह कई अग्रणी तथा सीमांतीय देशों के लिये विचारोत्तेजक हैं। कोई भी एक अग्रणी देश सभी प्रवाहों का केंद्र नहीं हो सकता है। वैश्विक प्रणाली में अन्य प्रवाह के संबंध में एक अग्रणी देश एक प्रकार का प्रवाह का केन्द्र हो सकता है और सीमांतीय तथा अर्ध–सीमांतीय देश अन्य प्रवाहों के केन्द्र हो सकते है।

अंत में, यह सिद्धांत विश्व व्यवस्था में समाजवादी समाजों की स्थिति के विशय में समझाने के लिए यथोचित रूपरेखा प्रदान नहीं करता है। इसका प्राथमिक ध्यान आधुनिक पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के उदय पर रहा है।

आलोचनाओं के बावजूद, हम वैश्विक प्रणाली सिद्धांत और वालरस्टीन के काम की प्रासंगिकता और महत्व की अवहेलना नहीं सकते हैं।

1970 के दशक और 1980 के दशक में वालरस्टीन के लेखन कार्य पूंजीवाद और औद्योगीकरण के प्रभुत्व में प्रथम, द्वितीय और तीसरी दुनिया के देशों के पारंपरिक मॉडल का विश्लेषण करने के लिए एक महत्वपूर्ण प्रयास के रूप में उभरा। (Tonkiss 2006)

दूसरा, विश्व–व्यवस्था का सिद्धांत दुनिया भर में पूंजीवाद के विस्तार के परिणाम के रूप में असमान संबंधों को समझाकर पारंपरिक समाजशास्त्रीय समझ का विस्तार करता है। यह अनिवार्य रूप से वैश्वीकरण पर बाद के सिद्धांतों का अग्रदूत है क्योंकि यह श्रम के एक अंतरराष्ट्रीय विभाजन द्वारा एकीकृत एकल विश्व अर्थव्यवस्था का विचार प्रस्तावित कर राष्ट्र–राज्यों की अवधारणा को चुनौती देता है।

बोध प्रश्न 4

i. वैश्विक प्रवाह की धारणा विश्व–प्रणाली के सिद्धांत पर कैसे सवाल उठाती है? (3 वाक्यों में व्याख्यायित करें।)

....

....

ii. आलोचकों ने विश्व–प्रणाली सिद्धांत को यूरो–केंद्रित के रूप में इंगित किया है। (2 वाक्यों में विस्तृत व्याख्या करें।)

....

6.6 सारांश

इस खंड में यह बताया गया है कि विभिन्न बौद्धिक परंपराओं से वैश्विक प्रणाली सिद्धांत पूंजीवादी विश्व अर्थव्यवस्था के उदय और विकास के परिणामस्वरूप असमानता की एक परिष्कृत समझ प्रदान करता है। इसमें विश्व–प्रणाली के सिद्धांत को पूंजीवादी विकास और आधुनिकीकरण के लिए एक महत्वपूर्ण परिप्रेक्ष्य के रूप में केंद्रित किया गया है। सिद्धांत की अंतर्निहित विभिन्न अवधारणाएं तथा विशिष्ट विशेषताएं विस्तृत हैं।

वैश्विक प्रणाली सिद्धांत पूंजीवादी विश्व–अर्थव्यवस्था को प्रमुख, सीमांत तथा अर्ध–सीमांत देशों की स्थिति में परिवर्तन और बदलाव के साथ गतिशील बनाता है। तीन आर्थिक क्षेत्रों द्वारा गठित विश्व अर्थव्यवस्था की अवधारणा: प्रमुख, सीमांत और अर्ध– सीमांतीय देश, विश्व के विभिन्न क्षेत्रों पर आधुनिकीकरण के विविध प्रभावों को प्रतिबिंबित करने के लिए एक आधार प्रदान करती है। यह सिद्धांत एक एकल विश्व–अर्थव्यवस्था पर केन्द्रित राष्ट्र–राज्यों की स्वतंत्र इकाइयों और विकास के बारे में उनकी भूमिका की धारणा की प्रभावकारिता पर प्रश्न करने के लिए महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है।

6.7 शब्दावली

- **पूंजीवाद**: एक आर्थिक संगठन है जहां बाजार सर्वोपरि होते हैं, संसाधनों का निजी स्वामित्व होता है और आर्थिक गतिविधियों को लाभ के अधिकतम की ओर अग्रसर किया जाता है
- **सामंतवाद**: उत्पादन के पूर्व–पूंजीवादी धारणा से संबंधित है जहां प्रमुख वर्ग जमींदार और सर्फ हैं।
- **श्रम का अंतर्राश्ट्रीय विभाजन**: दुनिया भर में बाजारों और उत्पादन गतिविधि के प्रसार से संबंधित है। यह आर्थिक गतिविधियों के बढ़ते भेदभाव की विशेषता है, जो दुनिया के समष्द्ध तथा गरीब देशों के बीच संरचित पदानुक्रम और असमानताओं को बढ़ाता है।
- **बाजार प्रणाली**: पैसे के बदले में सामान खरीदने और बेचने के विचार पर आधारित है।
- **पारस्परिकता** का अर्थ है वस्तुओं और सेवाओं का बाजार प्रत्यक्ष विनिमय, गैर–बाजार के लिए मौलिक आधार प्रदान करना।
- **पुनर्वितरण**: विनिमय का एक रूप है जहां सामान या सेवाएं केंद्रीय प्राधिकरण से गैर–बाजार समाज में समाज के सदस्यों के लिए चलती हैं।

6.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- एबरक्रॉम्बी, निकोलस, स्टीफन हिल और ब्रायन एस टर्नर। 2000. ''विश्व–प्रणाली सिद्धांत'' समाजशास्त्र के पेंगुइन शब्दकोश में। इंग्लैंडः पेंगुइन
- चिरोट, डैनियल और थॉमस डी हॉल। 1982. ''विश्व–प्रणाली सिद्धांत।'' समाजशास्त्र की वार्षिक समीक्षा। वॉल्यूम। 8 पीपी 81–106।
- मार्टिनेज–वेला, कार्लोस ए। 2001 ''वर्ल्ड सिस्टम थ्योरी मैक्ष83.थ्संस 2001 में http://web.mit.edu/esd.83/www/notebook/WorldSystem.pdf

6.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

रिक्त स्थानों को भरकर निम्नलिखित वाक्यों को पूरा करेंः

क. आधुनिकीकरण सिद्धांत इस धारणा पर आधारित था कि विकास पूंजीवादी चरणों की एक श्रृंखला में होता है और अविकसित देश अभी भी इतिहास के मूल चरण में हैं, जिसके माध्यम से विकसित देश बहुत पहले गुजर चुके थे।

ख. विश्व–प्रणाली सिद्धांत के आधुनिकीकरण परिप्रेक्ष्य की आलोचना स्पष्ट रूप से निर्भरता सिद्धांत को सबसे प्रभावशाली पूर्वजों में से एक के रूप में स्थापित करती है।

ग. लॉन्ग ड्यूरे की ब्रूडेल की अवधारणा, वालरस्टीन को भू–पारिस्थितिक क्षेत्रों के संविधान और पुनर्गठन सहित विश्व पूंजीवाद के इतिहास का अध्ययन करने के लिए प्रेरित करती है।

घ. आर्थिक मानवविज्ञानी और समाजशास्त्री, कार्ल पॉलीनी की आर्थिक प्रणाली और विनिमय के त्रिस्तरीय वर्गीकरण पर पारस्परिक, पुनर्वितरण और बाजार प्रणाली क्रमशः वालरस्टीन की मिनी–सिस्टम, विश्व–साम्राज्य और विश्व–अर्थव्यवस्था की चर्चा से मेल खाती है।

बोध प्रश्न 2

क. वालरस्टीन विश्व व्यवस्था को एक सामाजिक–आर्थिक इकाई के रूप में परिभाषित करता है जिसमें श्रम का एकल विभाजन होता है जो अपने सदस्यों को परस्पर अन्योन्याश्रितता के रिश्ते में बांधता है। विश्व व्यवस्था के दो प्रकार हैं–विश्व साम्राज्य और विश्व अर्थव्यवस्था।

ख. प्रमुख/अग्रणी, सीमांत और अर्ध–सीमांत तीन आर्थिक क्षेत्र हैं जो विश्व अर्थव्यवस्था का गठन करते हैं।

ग. बाहरी क्षेत्र वे है जो विश्व पूँजीवादी अर्थव्यवस्था से बाहर हैं और श्रम के एक विभाजन को स्वतंत्र बनाए रखते हैं और उनकी अर्थव्यवस्था पर विदेशी वाणिज्यिक प्रभाव बहुत कम है।

बोध प्रश्न 3

रिक्त स्थानों को भरकर निम्नलिखित वाक्यों को पूरा करें:

क. वालरस्टीन ने दीर्घकाल से चले आ रहे उत्तरी यूरोप में सामंतवाद के एक अनपेक्षित परिणाम के रूप में पूंजीवाद की उत्पत्ति का पता लगाया।

ख. 16 वीं शताब्दी में यूरोपीय उपनिवेश के शुरुआती दौर में फैले श्रम का पहला अंतरराष्ट्रीय विभाजन, कोर देशों के बीच अल्पविकसित विनिमय और आर्थिक परिधि से निश्कर्शण पर आधारित था।

ग. 18 वीं शताब्दी में आधुनिक विश्व अर्थव्यवस्था का दूसरा चरण ब्रिटेन के उद्भव के रूप में चिह्नित किया गया था, जो कि नीदरलैंड को अपनी वाणिज्यिक प्रधानता से बेदखल कर रहा था।

घ. पूंजीवादी विश्व अर्थव्यवस्था के तीसरे चरण को यूरोप में विनिर्माण उद्योग के तीव्र विकास प्रक्रिया द्वारा चिह्नित किया गया था।

ड. प्रथम विश्व युद्ध और 1917 में रूसी क्रांति का अंत नए युग की शुरुआत थी, जो विश्व अर्थव्यवस्था का चौथा चरण था।

बोध प्रश्न 4

1. वैश्विक प्रवाह की धारणा विश्व–प्रणाली के सिद्धांत पर कैसे सवाल उठाती है? (3 वाक्यों में विस्तृत व्याख्या करें।)

   वैश्विक प्रवाह पर हार्वे और अप्पादुरई जैसे विचारको की धारणा यथा वैश्वीकरण सिद्धांतवादी, हमें अंतरिक्ष की पारंपरिक भौगोलिक समझ से परे ले जाते हैं जो कि संरचित और तय किया गया है जैसा कि विश्व–प्रणाली सिद्धांत द्वारा प्रस्तुत किया गया है। ये प्रवाह कई प्रमुख और सीमांतीय देशो के लिये विचारोत्तेजक हैं, जिसका अर्थ है कि कोई भी अग्रणी देश सभी प्रवाह का केंद्र नहीं हो सकता है। वैश्विक प्रणाली में एक प्रमुख देश एक प्रकार के प्रवाह का तथा सीमांतीय और अर्ध–सीमांतीय देश अन्य प्रवाहों का केन्द्र हो सकते है।

2. ये ऐसे सिद्धांत हैं जो इस दृष्टिकोण पर सवाल उठाते हैं कि यूरोप पूंजीवाद और उसके विकास के केंद्र में था और इसके अतिरिक्त, दावा करता है कि चीन लंबे समय तक विस्तारित एफ्रो–यूरेशियाई विश्व प्रणाली का मुख्य केन्द्र था। 18 वीं शताब्दी में चीन यूरोप के अधिकांश क्षेत्रों की तुलना में अधिक उन्नत था, और 19 वीं शताब्दी में एक महत्वपूर्ण आर्थिक शक्ति बना रहा।

संदर्भ (References)

1 एबरक्रॉम्बी, निकोलस, स्टीफन हिल और ब्रायन एस टर्नर। 2000. ''विश्व–प्रणाली सिद्धांत'' समाजशास्त्र के पेंगुइन शब्दकोश में। इंग्लैंडः पेंगुइन

2 चिरोट, डैनियल और थॉमस डी। हॉल। 1982. ''विश्व–प्रणाली सिद्धांत।'' समाजशास्त्र की वार्षिक समीक्षा। वॉल्यूम। 8 पीपी 81–106।

3 फ्रैंक, आंद्रे गौंडर। 1989. अविकसित विकास। मासिक समीक्षा टवस.41, अंक 2।

4 हल्सल, पॉल। 1997. मॉडर्न हिस्ट्री सोर्सबुकः वर्ल्ड सिस्टम थ्योरी पर वॉलरस्टीन का सारांश। https%èèsourcebooks-fordham-eduèmodèwallerstein-asp-download 24 जून, 2020 को डाउनलोड किया गया।

5 हचिंसन, फ्रांसिस। 2004. ''वैश्वीकरण और श्रम का नया अंतर्राष्ट्रीय प्रभाग'' श्रम जर्नल और विकास जर्नल, खंड 4, संख्या 6 में प्रबंधन।

6 केनेडी, पॉल। 1987. द राइज एंड फॉल ऑफ द ग्रेट पावर्सः इकोनॉमिक चेंज एंड मिलिट्री कॉन्फ्लिक्ट 1500 से 2000 तक। न्यूयॉर्कः रैंडम हाउस।

7 ली, रिचर्ड ई। 2012. ''परिचयः फर्नांड ब्रैडेल, द लॉन्ग्यू ड्यूरे एंड वर्ल्ड सिस्टम एनालिसिस'' इन द लॉन्ग्यू ड्यूरी और वर्ल्ड–सिस्टम एनालिसिस। अल्बानी, सनी प्रेस।

8 मार्टिनेज–वेला, कार्लोस ए। 2001 ''वर्ल्ड सिस्टम थ्योरी'' ESD.83-Fall 2001 में http://web.mit.edu/esd.83/www/notebook/WorldSystem.pdf

9 टॉनकिस, फ्रान। 2006. ''पूंजीवाद और वैश्वीकरण'' समकालीन आर्थिक समाजशास्त्र मेंः उत्पादन, वैश्वीकरण और असमानता, लंदनः रूटलेज।

10 वालरस्टीन, इमैनुअल। 2004. विश्व–प्रणाली विश्लेषणः एक परिचय। डरहमः ड्यूक यूनिवर्सिटी प्रेस।

11 वालरस्टीन, इमैनुअल। 1974। विश्व पूँजीवादी व्यवस्था का उदय और भविष्य की माँगः तुलनात्मक विश्लेषण के लिए अवधारणा। सोसायटी और इतिहास में तुलनात्मक अध्ययन, खंड 16, अंक 4, पीपी। 3874–415।

12 वालरस्टीन, इमैनुअल। 1974इ। द मॉडर्न वर्ल्ड सिस्टमः सोलहवीं शताब्दी में पूंजीवादी कृषि और यूरोपीय विश्व अर्थव्यवस्था की उत्पत्ति। न्यूयॉर्कः अकादमिक प्रेस।

13 "लोंग्यू ड्यूरे पर विचार–विमर्श"। एनलिस वॉल्यूम 70, अंक 2, जून 2015 में (कैंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस द्वारा ऑनलाइन प्रकाशितः 03 अगस्त 2017, पीपी। 215–217)। https://www.cambridge.org/core/journals/annales-histoire-sciences-sociales-english- संस्करण / जारी / DC9017ACF3432E5B1F97D1AF33D254D # fn01

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

इकाई 7 मानव और सामाजिक परिप्रेक्ष्य*

इकाई की रूपरेखा

7.0 उद्देश्य

7.1 प्रस्तावना

7.2 मानव विकास

7.3 मानव विकास पर सामाजिक दृष्टिकोण

7.4 विकास का क्षमतावदी दृष्टिकोण

7.5 स्वतंत्रता के रूप में विकास

7.6 मानव विकास की प्रक्रिया

7.7 मानव विकास के दृष्टिकोण से जुड़े विचार

7.8 सारांश

7.9 शब्दावली

7.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

7.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

7.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद, आप सक्षम होंगे:

- विकास की अवधारणा के अर्थ को समझने में;
- मानव विकास पर सामाजिक विकास के प्रभाव की व्याख्या करने में;
- मानव विकास के दृष्टिकोण के सैद्धांतिक आधार पर चर्चा करने में;
- मानव विकास के लिए क्षमता दृष्टिकोण का विश्लेषण करने में; और
- स्वतंत्रता, क्षमता और क्षमता के रूप में मानव विकास के दृष्टिकोण की मुख्य अवधारणाओं का वर्णन करने।

7.1 प्रस्तावना

इस इकाई में हम मानव और सामाजिक विकास के दृष्टिकोण पर चर्चा करेंगे। इससे पहले हम विकास शब्द के विभिन्न अर्थों पर चर्चा करें। कुछ लोगों के लिए विकास का अर्थ लोगों की आय में वृद्धि या व्यक्तिगत कल्याण की बेहतरी के रूप में लोगों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन से है। लेकिन अभी भी अन्य लोग हैं जो मानते हैं कि विकास की विभिन्न परिभाषाओं को उजागर करने की आवश्यकता है क्योंकि इसने विभिन्न राष्ट्रों के बीच असमानताओं को कम नहीं किया है।

विकास की कुछ नैतिकताएँ हैं। विकास का अर्थ है व्यक्तियों के जीवन में सुधार। यह विकास की परिभाषाएं हैं जो विकास पर बनी नीतियों को प्रभावित करती हैं। नीति में निहित मूल्य

*डॉ. चारू साहनी द्वारा लिखित।

निर्णय विकास को प्रभावित करते हैं। इन मूल्य निर्णयों की कोई स्वीकृति नहीं है। उदाहरण के लिए आर्थिक विकास का उद्देश्य समाज में धन या राष्ट्रीय आय को बढ़ाना है। मानव विकास अनिवार्य रूप से एक समाज में व्यक्तियों की भलाई के सुधार के बारे में सम्बन्धित है (अल्केर और डेनेलिन 2009:3)। नीति निर्माताओं को प्रभावित करने वाले मूल्यों का पता लगाने की आवश्यकता है। यह नीति निर्माताओं द्वारा आयोजित विकास की अवधारणाओं की परिभाषा है जो विकास के परिणामों को निर्धारित करती है। गरीबी पर नीतियों के परिणाम इस आधार पर भिन्न होंगे कि नीति निर्माताओं द्वारा गरीबी को कैसे परिभाषित किया जाता है। उदाहरण के लिए यदि गरीबी को व्यक्तियों की आय के आधार पर या व्यक्तियों की बुनियादी जरूरतों को पूरा करने की अक्षमता के आधार पर परिभाषित किया जाये अलग–अलग परिणाम होंगे। इसलिए, विकास नीतियों को तैयार करने वाली सरकारों और अभिक्रमों की मूल्य निर्णयों क्षमताओं की खोज की जानी चाहिए। विकास नीति बनाने में अनिश्चितताएं और समझौते भी हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, सरकारों को उच्च आय और नौकरी के निर्माण के लिए खनन में निवेश करना चाहिए या सरकारों को पारिस्थितिक क्षरण की समस्या से निपटना चाहिए यह ऐसे उद्देश्य हैं कि जिनका विकास अभिक्रमों को बार–बार सामना करना पड़ता है। इसलिए, नीति निर्धारण उस आदर्शवादी ढांचे पर निर्भर करता है जिसे हम धारण करते हैं।

विकास को आर्थिक मानदंडों के संदर्भ में राष्ट्रीय प्रति व्यक्ति आय के रूप में मुख्य रूप से परिभाषित किया गया था। अमर्त्य सेन, मार्था नुसबूम, महबूबुल– हक जैसे अर्थशास्त्रियों ने इस बात पर जोर दिया है कि विकास से लोगों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार होगा और उनकी क्षमताओं और विकल्पों में भी वृद्धि होगी। मानव विकास की इस सोच को अंतर्निहित निर्देशात्मक मानदंड यह है कि आर्थिक विकास की आवश्यकता है लेकिन इसे स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्र के साथ–साथ आगे बढ़ना चाहिए। पाकिस्तानी अर्थशास्त्री महबूबुल– हक और भारतीय अर्थशास्त्री अमर्त्य सेन ने मिलकर मानव विकास सूचकांक (एचडीआई) विकसित करने का काम किया। एचडीआई ने जोर दिया कि लोगों और उनकी क्षमताओं को किसी देश के विकास को मापने का आधार होना चाहिए। यूएनडीपी के अनुसार, ''मानव विकास सूचकांक (एचडीआई) मानव विकास के प्रमुख आयामों में औसत उपलब्धि का एक संक्षेप मापन हैः एक लंबा और स्वस्थ जीवन, ज्ञानवान होना और जीवन स्तर का सभ्य होना''।

7.2 मानव विकास

अब हम मानव विकास के दृष्टिकोण की विशिष्टता पर चर्चा करते हैं। यदि विकास के लिए दृष्टिकोण आर्थिक वृद्धि पर केंद्रित है तो विश्लेषण की इकाई अर्थव्यवस्था है और बाजार की कीमतें विकास से जुड़ी नीति बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। मानव विकास के दृष्टिकोण में व्यक्ति पर ध्यान केंद्रित किया जाता है और अर्थव्यवस्था सिर्फ एक पहलू है जो लोगों को स्वस्थ जीवन जीने, शिक्षा और नौकरियों प्राप्त करने और उनकी भलाई करने में मदद करता है। इस प्रकार मानव विकास का दृष्टिकोण लोगों को सबसे पहले रखता है और उनकी स्वतंत्रता और क्षमता पर ध्यान केंद्रित करता है। हालाँकि विकास के लिए ये दोनों दृष्टिकोण बहिष्करणकारी नहीं हैं, लेकिन ये अतिव्यापी हैं। आर्थिक विकास पर केंद्रित विकास दृष्टिकोण का संबंध व्यक्तियों के जीवन की समृद्धि में सुधार से भी है। इसके विपरीत मानव विकास का दृष्टिकोण जो लोगों के जीवन को बेहतर बनाने पर केंद्रित है वह सतत आर्थिक वृद्धि से संबंधित है (अलकेयर और डेनेलिन 2009ः 23)। मानव विकास दृष्टिकोण बहु–क्षेत्रीय है क्योंकि यह अर्थव्यवस्था, संस्कृति, राजनीति, स्वास्थ्य और शिक्षा से लेकर लोगों के जीवन के कई पहलुओं से संबंधित है।

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी) ने 1990 में मानव कल्याण को बढ़ावा देने के लिए नया दृष्टिकोण को अपनाया था जिसे मानव कल्याण दृष्टिकोण कहा जाता है। मानव विकास का यह विचार यूएनडीपी द्वारा निर्मित मानव विकास रिपोर्ट में मौजूद था। यूएनडीपी रिपोर्ट के अलावा विभिन्न देशों ने अपनी राष्ट्रीय और क्षेत्रीय मानव विकास रिपोर्ट तैयार की। इन रिपोर्टों ने आबादी के जीवन की गुणवत्ता का मूल्यांकन किया और इसके सुधार के लिए तरीके प्रस्तावित किये। यह दृष्टिकोण केवल विकास के आर्थिक पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय लोगों के लिए उपलब्ध अवसरों और विकल्पों को केंद्र में लाता है (अलकेरे और डेनेलिन 2009: 24)। पहली मानव विकास रिपोर्ट 1990 ने मानव विकास को लोगों की पसंद और उनके हासिल किए गए स्तर को व्यापक बनाने की प्रक्रिया के रूप में इस अवधारणा को अपनाया (UNDP, 1990, p9)। विभिन्न मानव विकास रिपोर्टों ने मानवीय चिंताओं जैसे शिक्षा, लोकतंत्र में लोगों की भागीदारी का महत्त्व, स्वास्थ्य और पर्यावरण के बारें में जागरूकता बढ़ाई है।

मानव विकास रिपोर्ट पाकिस्तानी अर्थशास्त्री महबूबुल हक के दृष्टिकोण से प्रभावित थे। उन्होंने तर्क दिया कि एक देश में उच्च सकल घरेलु उत्पाद (जीडीपी) हो सकती है क्योंकि यह हथियार बेचता है और उन्हें निर्यात करता है लेकिन यह मानदंड निर्धारित नहीं करता है कि देश दूसरे देशों से अधिक विकसित है या नहीं। उनके अनुसार लोगों के मामले और आय भी उनकी क्षमताओं को बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण है। आय केवल उन पहलुओं में से एक है जिसके संदर्भ में किसी देश के विकास का आकलन किया जाता है। स्वास्थ्य और शिक्षा के रूप में समाज के अन्य पहलू भी महत्वपूर्ण हैं (अलकेरे और डेनेलिन 2009: 24)। उदाहरण के लिए 2020 में COVID 19 महामारी के प्रकोप के दौरान, दुनिया के सभी देशों की प्रमुख चिंता COVID 19 रोगियों के इलाज के लिए बिस्तर और वेंटिलेटर के रूप में अस्पताल के बुनियादी ढांचे की उपलब्धता थी। स्वास्थ्य सुविधाओं और सेवाओं की उपलब्धता स्वास्थ्य संकट से निपटने में एक परिसंपत्ति थी। इससे यह साबित हुआ कि स्वास्थ्य सुविधाएं राष्ट्रीय आय से अधिक महत्वपूर्ण हो सकती हैं।

7.3 मानव विकास पर सामाजिक दृष्टिकोण (परिपेक्ष्य)

सामाजिक विकास मानव विकास को प्रभावित करता है क्योंकि सामाजिक संस्थान अपनी क्षमताओं का उपयोग करने के लिए व्यक्तियों पर गहरा प्रभाव डालते हैं। खालिद मलिक (2014) ने अपने व्याख्यान में एडवांसिंग, सस्टेनिंग ह्यूमन प्रोग्रेस: फ्रॉम कॉन्सेप्ट क्योंकि टू पॉलिसीज 'में कहा कि सामाजिक संस्थाऐं व्यवहार को प्रभावित करती हैं और लोगों के चुनावों सामाजिक संस्थाओं व्यक्तिगत क्षमता को प्रभावित करती है। सामाजिक क्षमताएँ गैर–लाभकारी संस्थाऐं और गैर–राज्य संस्थाऐं हैं, जैसे गैर–सरकारी संगठन, पड़ोस संघ और खेल क्लब। ये सामाजिक संस्थाऐं राज्य और बाजार दोनों से प्रभावित होते और प्रभावित हैं। 2014 की मानव विकास रिपोर्ट (यूएनडीपी) ने नागरिकों से संबंधित मुद्दों को स्पष्ट करने और सरकार की नीति को मजबूत करने में नागरिक समाज और सामाजिक संस्थाओं की भूमिका पर जोर दिया।

जब हम सामाजिक विकास की बात करते हैं तो हमें मानव अधिकारों के मुद्दों को भलाई, शिक्षा या स्वास्थ्य के रूप में संबोधित करना होगा जो समाज को प्रभावित करते हैं। इसलिए सामाजिक विकास सामाजिक अवसरों का बढ़ाना है जिससे लोग लाभांवित होते है। सामाजिक और आर्थिक एक दूसरे के पूरक हैं। जीन ड्रेज और अमर्त्य सेन (1997: 6) ने अपने अध्ययन 'India: Economic Development and Social Opportunity' में तर्क दिया कि व्यक्तियों और उनके अवसरों को एक सामाजिक संदर्भ में देखा जाना चाहिए। समाज में राज्य

और विभिन्न संस्थाऐं व्यक्तियों के अवसरों पर प्रभाव डालते हैं। उदाहरण के लिए, जाति समाज में किसी व्यक्ति के लिए उपलब्ध अवसर उन अवसरों से भिन्न होते हैं, जो समतावादी समाज के व्यक्ति को उपलब्ध हो सकते हैं।

इसके अलावा सामाजिक परिस्थितियाँ और सार्वजनिक नीति सामाजिक अवसर को प्रभावित करती हैं। इसे स्पष्ट करने के लिए हम भारतीय किसानों पर COVID–19 के दौरान राज्य की नीति के प्रभाव को देख सकते हैं। मार्च 2020 में अपनी आबादी के स्वास्थ्य हितों में भारत द्वारा लागू किए गए राष्ट्रव्यापी तालाबंदी ने भारतीय किसानों को प्रतिकूल रूप से प्रभावित किया क्योंकि वे अपनी सर्दियों की फसल नहीं बेच सके। ग्रामीण श्रम की कमी के कारण परिवहन की अड़चनें थीं। इसके अलावा थोक बाजारों में आपूर्ति श्रृंखला और खरीदारों की अनुपलब्धता की श्रृंखला भी टूट सी गयी थी। जिससे यह राज्य की नीति थी जिसने देश में इस स्वास्थ्य संकट के दौरान भारतीय किसानों के सामाजिक अवसर को सीधे प्रभावित किया। 'सामाजिक' और 'आर्थिक' शब्द एक दूसरे के पूरक हैं। उदाहरण के लिए, एक बाजार शायद अच्छी तरह से काम कर रहा है लेकिन एक व्यक्ति केवल बाजार में उपलब्ध अवसरों का उपयोग कर सकता है यदि कोई व्यक्ति शिक्षित है और स्वस्थ है तभी वह बाजार में उपलब्ध अवसरों का लाभ उठा सकता है। इसके विपरीत एक व्यक्ति अच्छी तरह से शिक्षित और स्वस्थ हो सकता है लेकिन संभवता नौकरशाही नियंत्रण या वित्त की कमी (Dreze और Sen 1997: 6) के कारण आर्थिक अवसरों तक उसकी पहुंच नहीं है।

7.4 विकास का क्षमतावादी दृष्टिकोण

अमर्त्य सेन के क्षमता दृष्टिकोण के अनुसार मानव 'सभी उत्पादन का साधन' है जिसके माध्यम से विकास लाया जा सकता है। (सेन 1990:41)। विकास का अर्थ धन की वृद्धि से नहीं है बल्कि इसका अर्थ लोगों की प्रगति से है। उन्होंने तर्क दिया कि अधिक धन का पीछा केवल एक मध्यवर्ती लक्ष्य है और इसे मानव जीवन को कैसे बेहतर बनाया जाए इस संदर्भ में देखा जाना चाहिए। उदाहरण के लिए देशों में उच्च राष्ट्रीय आय हो सकती है, लेकिन लोगों की भलाई के मामले में कमी हो सकती है। विकास से मानव जीवन की गुणवत्ता में सुधार होना चाहिए। दूसरी ओर मानव जीवन की क्षमता दृष्टिकोण के माध्यम से कल्पना की जा सकती है। विकास के लिए क्षमता दृष्टिकोण में तीन प्रमुख अवधारणाएँ शामिल हैं: कामकाज, क्षमता और अभिकरण।

क्षमता दृष्टिकोण मानव जीवन के 'कार्य' को 'प्राणियों और क्रियाओं के समूह के रूप में देखता है।' इसलिए, मानव जीवन का मूल्यांकन 'कार्य करने की क्षमता' के माध्यम से किया जा सकता है। (सेन 1990:43)। यहाँ कार्य पद्धति का अर्थ में 'होने' और क्या करने से है कि ये लोग उस कार्य को कितना महत्व देते हैं। क्षमता का तात्पर्य उस स्वतंत्रता से है जो किसी व्यक्ति को उनके होने या करने में प्राप्त होती है। लोगों की भलाई में क्षमता का योगदान होता है। कार्य करने के लिए व्यक्तियों की क्षमता के माध्यम से जीवन की गुणवत्ता का आकलन किया जा सकता है। क्षमता दृष्टिकोण केवल जीवन की गुणवत्ता का आकलन करने के लिए सिर्फ आय पर ध्यान केंद्रित नहीं करता है। क्षमतावादी दृष्टिकोण में कर्मों के समूह और प्राणियों या कामकाज का आकलन किया जाना है। जीवन की समृद्धि का मूल्यांकन मूल्यवान गतिविधियों को प्राप्त करने की क्षमता के माध्यम से किया जा सकता है। चूंकि जीवन के तत्व अलग–अलग क्रियाकलापों से बने होते हैं इसलिए एक व्यक्ति को निष्क्रिय व्यक्ति के बजाय एक क्षमता का उपयोग करने के अभिक्रम रूप में देखा जाता है। अभिक्रम किसी व्यक्ति के उन उद्देश्यों का पालन करने की क्षमता को संदर्भित करता है जिनको वे महत्व देते हैं या उनके पास महत्त्व देने का कारण हैं। ऐजेंट के रूप में व्यक्ति

अपनी प्राथमिकताओं और उन्हें प्राप्त करने के साधन निर्धारित कर सकते हैं। लेकिन चूंकि विकास के बारे में निर्णय लोगों के बजाय सामाजिक समूहों द्वारा किए जाते हैं, इसलिए लोगों को शिक्षित होने की आवश्यकता है और उन्हें विकास नीति और इसके कार्यान्वयन के बारे में अपने विचार व्यक्त करने और विकास नीति को संचालित और लागू करने वाली क्षमता का उपयोग करने की स्वतंत्रता भी होनी चाहिए।

7.5 स्वतंत्रता के रूप में विकास

इस प्रकार विकास को आय और आर्थिक विकास के संदर्भ में बाहरी रूप से देख कर यह निश्चित नहीं किया जा सकता कि एक देश समृद्ध जीवन जी रहा है। अमर्त्य सेन आठवीं शताब्दी के संस्कृत ग्रन्थ "बृहदारण्यक उपनिषद" के एक किस्से के माध्यम से इस दृष्टिकोण को स्पष्ट करते हैं। इस पाठ में मैत्रेयी नाम की एक ऋषि पत्नी अपने पति याज्ञवल्क्य ऋषि के साथ वार्तालाप में लगी हुई है। मैत्रेयी उनसे पूछती हैं कि यदि धन से भरी "सम्पूर्ण पृथ्वी" "उनके हो तो क्या वे इसके माध्यम से अमरता प्राप्त कर सकती हैं? उसके पति" याज्ञवल्क्य का जवाब है कि वह अमर नहीं बल्कि केवल अमीर बन जाएगा। मैत्रेयी तब पूछती हैं, मुझे ऐसा क्या करना चाहिए जिससे मैं अमर हो जाऊं? '(सेन, 1999: 13 में उद्धृत)।

अमर्त्य सेन ने अपनी पुस्तक 'विकास के रूप में स्वतंत्रता' में तर्क दिया कि विकास में ध्यान लोगों की स्वतंत्रता की वृद्धि पर होना चाहिए। सकल राष्ट्रीय उत्पाद (जीएनपी) पर केंद्रित विकास का दृष्टिकोण समाज में लोगों द्वारा प्राप्त स्वतंत्रताओं के विस्तार को सुरक्षित करने का केवल एक साधन है। लेकिन स्वतंत्रता का प्रचलन सामाजिक और राजनीतिक अधिकारों और शिक्षा और स्वास्थ्य के लिए सुविधाओं पर भी निर्भर है। सेन के लिए, विकास को सार्वजनिक सुविधाओं की अनुपलब्धता, गरीबी उन्मूलन के लिए अल्प आर्थिक अवसर, दमनकारी राज्यों की कट्टरता और सामाजिक अभावों के रूप में कई आधारों को हटाने की आवश्यकता है। कभी–कभी गरीबी के कारण लोग अपनी पोषण की आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर पाते हैं या स्वास्थ्य देखभाल और शिक्षा तक पहुंच नहीं बना पाते हैं। लेकिन स्वास्थ्य देखभाल कार्यक्रमों की कमी भी अस्वतंत्रता है जिसके कारण 2020 में महामारी में हुआ है। महामारी covid–19 के समय, विभिन्न देशों में व्यक्तियों ने वायरस के प्रसार से लड़ने और प्रतिबंधित करने के लिए एक टीका की अनुपलब्धता के कारण अस्वतंत्रता का अनुभव किया। संयुक्त राज्य अमेरिका जिसके पास सबसे ज्यादा सकल घरेलु उत्पाद है उस के बावजूद 2020 में उस देश ने सबसे अधिक स्वास्थ्य संकट का सामना किया है।

अमर्त्य सेन के अनुसार विकास प्रक्रिया में स्वतंत्रता दो प्रमुख कारणों से महत्वपूर्ण है।

1) मूल्यांकन कारण: विकास का आकलन यह देखकर किया जाता है कि स्वतंत्रता का लाभ लेने वाले व्यक्तिओं की संख्या कितनी बढ़ी है

2) प्रभावशीलता का कारण: विकास का अर्थ है कि लोग कितनी स्वतंत्रता से क्षमताएं का उपयोग रहे है। इसलिए क्षमता का संचालन और स्वतंत्रता का प्रसार एक साथ होता है। वह अभिकर्त्ता को विकास के प्रति प्रतिनिधि उन्मुख दृष्टिकोण देता है। अपने जीवन को ढालने में मानव की स्वयं की भूमिका होती है। वे विकास कार्यक्रमों के निष्क्रिय प्राप्तकर्ता नहीं होते हैं।

लोग अपनी क्षमता का उपयोग केवल तभी कर सकते हैं, जब उनके पास अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, स्वास्थ्य देखभाल तक पहुंचने की स्वतंत्रता, शिक्षा या राजनीतिक रूप से लोकतंत्र में भाग लेने की स्वतंत्रता हो। वे यह भी तर्क देते है कि स्वतंत्रता विकास का साधन है और

विभिन्न स्वतंत्रताएं भी एक–दूसरे के साथ जुड़ी हुई हैं (बॉक्स 7. 1 देखें)

बॉक्स 7.1

स्वतंत्रता के रूप में विकास

स्वतंत्रता केवल विकास के प्राथमिक छोर हैं, वे इसके प्रमुख साधनों में से हैं। स्वीकार करने के अलावा, आधारपरकता, स्वतंत्रता की मूल्यांकन करने के महत्व के साथ, हमें उल्लेखनीय आनुभविक संबंध को भी समझना होगा जो विभिन्न प्रकार की स्वतंत्रता एक दूसरे के साथ जोड़ता है। राजनीतिक स्वतंत्रता (स्वतंत्र भाषण और चुनाव के रूप में) आर्थिक सुरक्षा को बढ़ावा देने में मदद करती है। सामाजिक अवसर (शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं के रूप में) आर्थिक भागीदारी की सुविधा प्रदान करते हैं। आर्थिक सुविधाएं (व्यापार और उत्पादन में भागीदारी के अवसरों के रूप में) व्यक्तिगत बहुतायत के साथ–साथ सामाजिक सुविधाओं के लिए सार्वजनिक संसाधन उत्पन्न करने में मदद कर सकती हैं। विभिन्न प्रकार के स्वतंत्रता एक दूसरे को मजबूत कर सकते हैं।

अमर्त्य सेन के 'Development as Freedom, 1999, पृष्ठ संख्या–11' का अंश

7.6 मानव विकास की प्रक्रिया

महबूबुल हक ने मानव विकास के अनुप्रयोग के लिए चार विचारों को मान्यता दी। ये समानता, दक्षता, भागीदारी और सततता हैं। हालाँकि मानवाधिकारों के सम्मान के रूप में अन्य विचार भी हो सकते है (अल्केर और डेनेलिन 2009: 29)। महबूबुल हक द्वारा विकास की प्रक्रिया का पालन करने के लिए पहचानी जाने वाले चार विचार इस प्रकार हैं: –

- समानता बराबरी के समान नहीं है। समानता का तात्पर्य है कि एक समाज में सभी वर्गों के लोगों के प्रति व्यवहार की निष्पक्षता होनी चाहिए। उदाहरण के लिए समाज के कमजोर वर्ग, गरीब, महिलाओं और दिव्यांग जनो के लिए समृद्ध जीवन जीने के लिए योजनाएं होनी चाहिए।

- दक्षता व्यक्तियों और समाजों की क्षमता का विस्तार करने के लिए मानव और प्राकृतिक संसाधनों के न्यूनतम उपयोग को संदर्भित करती है।

- भागीदारी से तात्पर्य है कि व्यक्तियों और उनके सामाजिक समूहों में विकास प्रक्रिया को प्रभावित करने के लिए व्यक्तियों का सशक्तिकरण। इसलिए यह दृष्टिकोण लोगों को पहले रखता है क्योंकि वे विकास नीति बनाने और लागू करने के हर चरण में शामिल होते हैं।

- सततता का तर्क है कि विकास इस तरह से होता है ताकि परिणाम समय के साथ बरकरार रहें। विकास इस तरह से होना चाहिए कि प्रकृति और पर्यावरण अप्रभावित रहे। सततता सामाजिक, पर्यावरणीय और वित्तीय होनी चाहिए ताकि आने वाली पीढ़ियों के हितों की अनदेखी न हो।

7.7 मानव विकास परिपेक्ष्य से साथ जुड़े हुए विचार

इस खंड में हम कुछ दृष्टिकोणों का अध्ययन करेंगे जो मानव विकास से जुड़े हैं जैसे कि बुनियादी जरूरतें, मानव अधिकार और मानव सुरक्षा। जैसा कि पिछले खंड में चर्चा की गई

थी कि विकास के पहले दृष्टिकोण ने तर्क दिया था कि आर्थिक विकास गरीबी को खत्म करेगा, लोगों के जीवन में सुधार करेगा और जीवन को एक निश्चित तरीके से जीने के अवसरों का विस्तार करेगा। इस दृष्टिकोण में मुख्य रूप से आर्थिक विकास और इससे गरीबों को मिलने वाले लाभों पर ध्यान केंद्रित किया गया था। 1961 में संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा पहला 'विकास दशक' घोषित किया गया था। इसका उद्देश्य राज्यों को आर्थिक विकास प्राप्त करने में सहायता करना था ताकि विकसित और विकासशील दोनों देश निवेश की बचत दर प्राप्त करें (डेनेलिन 2009: 57)। 1970 के दशक में आर्थिक विकास पर प्रश्नचिन्ह लग गया था क्योंकि आर्थिक वृद्धि से संपत्ति का विकेन्द्रीकरण नहीं हो पाया था और कुछ के हाथों में संपति को केन्द्रीकरण हुआ जबकि एक वर्ग के पास संपत्ति नहीं थी।

हम मानव विकास के दृष्टिकोण से जुड़े पहले दृष्टिकोण पर ध्यान केंद्रित करेंगे जो 'बुनियादी जरूरतों से सम्बंधित हैं। यह 1970 के दशक में आर्थिक विकास के दृष्टिकोण के विकल्प के रूप में विकास के लिए 'बुनियादी जरूरतों' का दृष्टिकोण था। बुनियादी जरूरतों के दृष्टिकोण को उन न्यूनतम स्थितियों पर केंद्रित किया गया है जो जीवन के लिए आवश्यक हैं जैसे कि स्वास्थ्य, पोषण, शिक्षा, सुरक्षित पेयजल, आवास, जो मानव विकास दृष्टिकोण बुनियादी जरूरतों के दृष्टिकोण को मानव जीवन में सुधार लाने पर केंद्रित है, न केवल आर्थिक दृष्टि से, बल्कि सामाजिक–सांस्कृतिक दृष्टि से भी। हालांकि, सेन और महबूब–उल–हक द्वारा प्रतिपादित मानव विकास दृष्टिकोण बुनियादी जरूरतों के दृष्टिकोण की तुलना में व्यापक सैद्धांतिक और दार्शनिक आधार पर आधारित है। मानव विकास के दृष्टिकोण ने व्यक्तियों की स्वतंत्रता और क्षमताओं के विस्तार पर जोर दिया और यह भी माना कि विकास प्रक्रिया में व्यक्तियों की क्षमता महत्वपूर्ण थी। मानव विकास का दृष्टिकोण विकसित और विकासशील दोनों देशों में लागू है। दूसरी ओर बुनियादी जरूरतों का दृष्टिकोण अमरीका जैसे विकसित देशों में कम लागू होता है। (Deneulin 2009: 59)

दूसरे, मानव विकास और विकास की क्षमता दृष्टिकोण भी 'मानवाधिकार के दृष्टिकोण के मुद्दे से जुड़े हुए हैं। मानव विकास रिपोर्ट 2000 के अनुसार ये दोनों दृष्टिकोण लोगों की स्वतंत्रता, कल्याण और गरिमा को सुरक्षित करने के लिए काम करते हैं। जबकि मानव विकास दृष्टिकोण व्यक्तियों के लिए उपलब्ध स्वतंत्रता के माध्यम से एक समाज में प्रगति का आकलन करता है मानव अधिकार व्यक्तियों के अधिकारों और दायित्वों पर ध्यान केंद्रित करके मानव विकास को बढ़ाता है। इस प्रकार मानवाधिकार दृष्टिकोण इंगित करता है कि यह सरकारों और अन्य संस्थानों की जिम्मेदारी है कि वे सभी व्यक्तियों के मानवाधिकारों का सम्मान करें और उनकी रक्षा करें। इसलिए मानवाधिकार का दृष्टिकोण उन व्यक्तियों की ओर क्षमताओं का ध्यान आकर्षित करता है जिनके पास शिक्षा या स्वास्थ्य से संबंधित अधिकारों तक पहुँच नहीं हो सकती है। इसलिए मानव अधिकारों का दृष्टिकोण मानव विकास के दृष्टिकोण को संवेदनशील बनाता है।

तीसरा दृष्टिकोण जिस पर हम इस इकाई में चर्चा कर रहे है जो मानव विकास के दृष्टिकोण से जुड़ा हुआ है वह मानव सुरक्षा है। जैसा कि विकासशील देशों ने आंतरिक संघर्षों का सामना किया, मानव विकास दृष्टिकोण में मानव सुरक्षा की धारणा पर प्रकाश डाला गया कि संघर्षपूर्ण समाज में समस्याओं से निपटने के लिए सैन्य समाधान पर्याप्त नहीं हैं। 1994 की मानव विकास रिपोर्ट में कहा गया है की "भूख, बीमारी और दमन जैसे पुराने खतरों से सुरक्षा और दैनिक जीवन के आधार में अचानक और हानिकारक व्यवधानों से सुरक्षा, चाहे घरों, नौकरियों या समुदायों में" होनी चाहिए (यूएनडीपी 1994, पी 1)। मानवीय सुरक्षा को न केवल हिंसक संघर्ष की अनुपस्थिति के रूप में परिभाषित किया गया है, बल्कि आर्थिक सुरक्षा, खाद्य सुरक्षा, स्वास्थ्य सुरक्षा, पर्यावरण सुरक्षा, व्यक्तिगत सुरक्षा, सामुदायिक सुरक्षा और राजनीतिक

सुरक्षा इत्यादि के रूप में भी परिभाषित किया गया है (Deneulin 2009: 62)।

बोध प्रश्न I

i) निम्नलिखित का मिलान करें: –

i) मानव विकास	a) जीवन के लिए आवश्यक न्यूनतम मूलभूत आवश्यकताएं
ii) आर्थिक विकास	b) लोगों को पहले रखता है
iii) क्षमता	c) भूख, बीमारी के रूप में खतरों से सुरक्षा।
iv) बुनियादी जरूरतें	d) आर्थिक विकास पर देता है
v) मानव सुरक्षा	e) परिवर्तन लाना

2. निम्नलिखित पर संक्षिप्त नोट लिखें: –

i) मानव विकास के क्षमता दृष्टिकोण की व्याख्या करें?

....

....

....

....

....

....

ii) मानव विकास के दृष्टिकोण में 'स्वतंत्रता के रूप में विकास' वाक्यांश को समझाइए?

....

....

....

....

....

....

7.8 सारांश

इस इकाई में हमने मानव विकास के दृष्टिकोण पर चर्चा की। हमने विकास नैतिकता के बारें में पढ़ा और नीति निर्माताओं द्वारा आयोजित विकास से सम्बंधित नीति, उसके निहितार्थ और उसके परिणामों के बारे में पढ़ा। हमने समझा कि अतीत में आर्थिक विकास को आर्थिक वृद्धि के संदर्भ में मापा जाता था जबकि मानव विकास को मानव के जीवन की गुणवत्ता में सुधार के संदर्भ में देखा जाता है। मानव विकास का दृष्टिकोण लोगों को सबसे पहले रखता है और

उनकी क्षमता को बढ़ाने की दिशा में काम करता है। हालांकि, मानव विकास का दृष्टिकोण सतत आर्थिक वृद्धि को दूर नहीं रखता है। सैद्धांतिक रूप से मानव विकास का आधार विकास का क्षमता दृष्टिकोण रहा है। क्षमता दृष्टिकोण क्षमता, कामकाज और क्षमता की अवधारणाओं पर आधारित है। यहां क्षमता का उल्लेख ऐसे समारोहों के समूह से किया जाता है जो लोगों के लिए महत्वपूर्ण हैं। चूँकि इस दृष्टिकोण में मुख्य जोर व्यक्ति के क्षमता पर ध्यान केंद्रित है, यह मानव को ऐसे अभिकर्त्ताओं के रूप में देखता है जो अपनी समस्याओं के लिए आवाज उठा सकते हैं और विकास को भी प्रभावित कर सकते हैं। विकास को अशिक्षा, अस्वस्थता और अप्रसन्नता को दूर करने वाले कारक के रूप में देखा जाना चाहिए। इसलिए, विकास को स्वतंत्रता के विस्तार की ओर जाना चाहिए क्योंकि स्वतंत्रता विकास का अंत और साधन है। महबूबुल हक ने समानता, दक्षता, भागीदारी और सततता के रूप में मानव विकास के अनुप्रयोग के लिए चार विचारों को मान्यता दी। हमने बुनियादी जरूरतों, मानवाधिकारों और मानव सुरक्षा के रूप में मानव विकास से जुड़े कुछ दृष्टिकोणों पर भी चर्चा की। हमने चर्चा की कि ये दृष्टिकोण मानव विकास के दृष्टिकोण पर आधारित हैं और मानव विकास का एक अलग सैद्धांतिक और दार्शनिक आधार है। अन्त में, हमने मानव विकास पर सामाजिक दृष्टिकोण पर चर्चा की। हमने यह भी चर्चा की कि मानव क्षमताओं की वृद्धि सामाजिक क्षमताओं और नागरिक समाज पर भी निर्भर है। साथ ही हमने यह भी चर्चा की कि विकास नीति और सामाजिक परिस्थितियों का प्रभाव व्यक्तियों के अवसरों पर भी पड़ता है।

7.9 शब्दावली

कामकाज : अमर्त्य सेन के अनुसार कामकाज वे चीजें हैं जो व्यक्ति करते हैं या कर रहे हैं। कामकाज ऐसी चीजें हैं जिसका मानव जीवन में महत्व है जैसे अच्छा स्वास्थ्य, शिक्षा और सुरक्षा।

क्षमता : क्षमता का अर्थ कार्यों के समूह को निष्पादन करता है। वे कामकाज का एक समूह हैं(कार्य और प्राणी) जिन्हें व्यक्ति प्राप्त कर सकते हैं।

अभिकरण : अभिकरण किसी व्यक्ति की परिवर्तन प्रक्रिया को लाने और विकास प्रक्रिया को प्रभावित करने की क्षमता को संदर्भित करती है।

स्वतंत्रता : स्वतंत्रता विकास का साधन है।

7.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

Dreze, J., A. Sen 1995 *India: Economic Development and Social Opportunity.* New Delhi: OUP.

Gasper, D. 2004.*The Ethics of Development*. Edinburgh University Press: Edinburgh

Sen,A. 1999.*Development as Freedom.* Oxford University Press: New Delhi.

UNDP. 2000. Human Development Report: Human Rights and Human Development. Oxford University Press.

7.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

1) i) B

ii) D

iii) E

iv) A

v) C

2) i) अमर्त्य सेन की क्षमता दृष्टिकोण के अनुसार, मानव विकास का साधन है। विकास के लिए क्षमता दृष्टिकोण में तीन प्रमुख अवधारणाएँ शामिल हैंः कामकाज, क्षमता और क्षमता। क्षमता दृष्टिकोण के अनुसार विकास आय से नहीं होगा लेकिन यह व्यक्तिओं द्वारा लाया जाएगा। सेन ने तर्क दिया कि आय केवल विकास का पर्याप्त उपाय नहीं है और आय केवल व्यक्तियों को अपने जीवन को समष्द्ध करने में सक्षम बनाती है। उदाहरण के लिए देशों में उच्च राष्ट्रीय आय हो सकती है लेकिन लोगों की स्वास्थ्य स्थिति के मामले में कम हो सकती है। विकास को मनुष्य के जीवन को समष्द्ध बनाना चाहिए। क्षमता का दृष्टिकोण मानव जीवन को 'कार्य' को 'प्राणियों और कर्मों के समूह के रूप में देखता है' (सेन 1990: 43)। यहां कार्य का अर्थ उस कार्य को करने या करवाने से है जिसका लोग महत्त्व देते है। क्षमता का तात्पर्य उस स्वतंत्रता से है जो किसी व्यक्ति को उनके मूल्य के होने या करने में प्राप्त होती है। क्षमता में कर्मों के समूह और प्राणियों या कामकाज का आकलन किया जाना चाहिए। विकास को शिक्षा, स्वास्थ्य, विचारों को व्यक्त करने की स्वतंत्रता जैसी मूल्यवान गतिविधियों को प्राप्त करने की क्षमता के माध्यम से मूल्यांकन किया जा सकता है।

ii) पुस्तक में 'विकास के रूप में स्वतंत्रता' अमर्त्य सेन ने तर्क दिया कि विकास में ध्यान लोगों की स्वतंत्रता के विस्तार पर होना चाहिए। सकल राष्ट्रीय उत्पाद (जीएनपी) केवल समाज में लोगों द्वारा प्राप्त स्वतंत्रता के विस्तार को सुरक्षित करने का एक साधन है। विकास तब हो सकता है जब स्वास्थ्य सुविधाओं की अनुपलब्धता, युवाओं के लिए अल्प रोजगार के अवसर, दमनकारी राज्यों की कट्टरता और सामाजिक अभावों के रूप में कई अप्रसन्नताओं को दूर किया जाए। स्वतंत्रताएं विकास के प्राथमिक छोर और साधन दोनों हैं। हम लोगों द्वारा भोगे गए स्वतंत्रता के माध्यम से समाज में विकास का आकलन कर सकते हैं। लेकिन एक दूसरे के साथ विभिन्न प्रकार की स्वतंत्रताएं भी जुड़ी हुई हैं। चुनाव या स्वतंत्र भाषण में भाग लेने की स्वतंत्रता के रूप में राजनीतिक स्वतंत्रता आर्थिक कल्याण को बढ़ावा दे सकती है। स्वास्थ्य और शिक्षा के अवसरों से आर्थिक भागीदारी हो सकती है। इसलिए यदि लोग अपनी क्षमता का उपयोग करते हैं, परिवर्तन लाते हैं, तो समाज में स्वतंत्रता का विस्तार होता है।

संदर्भ (References)

Dreze, J., A. Sen 1995 *India: Economic Development and Social Opportunity.* New Delhi: OUP.

Deneulin, S., S. White, L.Shahani, A. Proochista, S. Johnson, A.Naveed, I.Robeyns, R.Spence and Elaine Unterhalter. 2009. *An Introduction to Human Development and Capability Approach: Freedom and Agency*. New York: Taylor and Francis Group

Gasper, D. 2004.*The Ethics of Development*. Edinburgh University Press: Edinburgh

Malik, K.2014. Inaugural Mahbubul-Haq-Amartya Sen Lecture, UNIGE: Advancing, Sustaining Human Progress: From Concepts to Policies. Retrieved fromhttp://hdr.undp.org/en/content/inaugural-mahbub-ul-haq-amartya-sen-lecture-unige

Sen, A. 1990. *Development as Capability Expansion*.Retrieved frompunarjitroyc. weebly.com

Sen, A. 1999. *Development as Freedom.* Oxford University Press: New Delhi.

UNDP. 1990. Human Development Report, Oxford University Press, New York, Retrieved from httpèè hdr.undp.orgèen

UNDP.Human Development Index (HDI) | Retrieved from hdr.undp.org › content › human-development-index-hdi

UNDP.1994. Human Development Report, New Dimensions of Human Security.Oxford University Press.

UNDP. 2000. Human Development Report: Human Rights and Human Development. Oxford University Press.

इकाई 8 पर्यावरणीय दृष्टिकोण*

इकाई की रूपरेखा

8.0 उद्देश्य

8.1 प्रस्तावना

8.2 पर्यावरण क्या है?

8.2.1 मानव निर्मित पर्यावरण

8.2.2 सामाजिक पर्यावरण

8.3 विकास और पर्यावरण के बीच संबंध

8.4 पर्यावरण दृष्टिकोण

8.4.1 प्रतिष्ठित दृष्टिकोण

8.4.2 सतत विकास का दृष्टिकोण

8.4.2.1 सतत विकासः डिस्कोर्स

8.4.2.2 सतत विकासः परिभाषा और अर्थ, आवश्यकताएँ, नीतिगत उद्देश्य और उपयुक्त रणनीति

8.4.2.3 सतत विकास की अवधारणा की आलोचना

8.5 सारांश

8.6 शब्दावली

8.7 कुछ उपयोगी पुस्तके

8.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

8.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप जा सकेंगेः

- पर्यावरण की अवधारणा को समझेंगे;
- विकास और पर्यावरण के बीच संबंधों पर चर्चा करेंगे;
- पर्यावरण पर प्रतिष्ठित दृष्टिकोण का वर्णन करेंगे; और
- सतत विकास, इसकी उत्पत्ति, अर्थ और आलोचना पर चर्चा करेंगे।

8.1 प्रस्तावना

इस इकाई में हम पर्यावरण और उसके संबंधित पहलुओं को समझेंगे कि पर्यावरण क्या है और इससे क्या बनता है। फिर हम इस बात पर चर्चा करेंगे कि मानव क्रिया और अंत:क्रिया के कारण पर्यावरण में क्यों और क्या परिवर्तन हो रहे हैं। अगले भाग में हम विकास और पर्यावरण डिस्कोर्स पर चर्चा करेंगे और उसके बाद हम भावी चर्चा करेंगे।

*प्रो. बी. बी. मल्लिक द्वारा लिखित

8.2 पर्यावरण क्या है?

पर्यावरण शब्द को फ्रांसीसी शब्द "एनवाइनर" से लिया गया है। जिसका अर्थ है "पड़ोस"। दूसरे शब्दों में किसी भी जीवित जीव के आसपास के लोगों, चीजों और प्रकृति को पर्यावरण कहा जाता है। इसलिए पर्यावरण जीवन के जैविक और अजैविक पहलुओं का कुल योग है। पर्यावरण एक ऐसी प्रणाली है जो मनुष्यों और जानवरों जैसे जीवों के अस्तित्त्व के लिए प्राकृतिक परिवेश प्रदान करती है और जो उनके आगे के उद्‌विकास के लिए एक शर्त है। पर्यावरण के अजैविक घटक (वायु, जल, खनिज और ऊर्जा) और पर्यावरण के जैविक घटक (जीव सरल से जटिल तक) इसके मुख्य तत्त्व है। इस विन्यास (सेटअप) में, जीवों को अपना जीवन मिलता है, वे बढ़ते हैं, उत्पादन करते हैं और एक उपयुक्त वातावरण में पुनरूत्पादन करते है और इस वातावरण से समायोजित करते हैं और उस प्रक्रिया में सुधार लाने का प्रयत्न करते है। प्रजनन रोजमर्रा की जिंदगी में मानवीय क्रियाओं के माध्यम से होता है उनकी जीविका योजना और विकासात्मक पहल को दृष्टिगत करता है। इसके माध्यम से यह पर्यावरण में व्यापक परिवर्तन करता है। इसलिए यह पता लगाना आवश्यक है कि किन मानवीय गतिविधियों के कारण पर्यावरण परिवर्तन होता है और विभिन्न परिवर्तनों, गतिविधियों और कार्यो के मूल विस्तृत कारण क्या है? जो जानबूझकर किए गए हैं और जो अनजाने है, मनुष्य की गतिविधियों के पर्यावरणीय प्रभाव क्या है? संक्षेप में, यह उल्लेखनीय है कि जो कुछ भी हमारे चारों तरफ है, वस्तुतः मानवशास्त्रीय (गैर–जैविक) परिभाषा पर्यावरण को एक व्यक्ति के रूप में मानता है जहां एक आदमी रह सकता है। इसलिए उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर, पर्यावरण को दो तरह से समझा जा सकता है, (i) मानव निर्मित पर्यावरण (ii) सामाजिक पर्यावरण

8.2.1 मानव निर्मित पर्यावरण

मानव अपनी आवश्यकताओं और आवश्यकताओं के अनुसार पर्यावरण के साथ संशोधन कर रहा है। जब मानव जाति शिकारी से बदलकर कृषिविदों और पशुपालकों में परिवर्तित होते हैं, तो वे अपनी आवश्यकताओं और सुविधा के अनुसार पर्यावरण को बदलना शुरू कर देते हैं। वे फसले उगाना सीखते हैं और घरेलु पशुओं का उपयोग करके अपना जीवन यापन करते हैं। वे पैदावार बढ़ाने के लिए उर्वरकों और कीटनाशकों का उपयोग करते हैं। मानव जाति प्राकृतिक संसाधनों का दोहन और प्राकृतिक संसाधनों को निःशेष कर रही है या निप्राकृतिक साधन घटते जा रहे है। जब औद्योगिक क्रांति ने बड़े पैमाने पर उत्पादन, परिवहन, सूचना और संचार को सक्षम किया, तो संचार दुनिया भर में तेजी से और तेज हो गया। विकास की प्रक्रिया में, मानव निर्मित पर्यावरण को कई गुणा में प्रकट किया गया है, जिसमें फसल क्षेत्र, शहर और औद्योगिक स्थान शामिल है। मनुष्य कृत्रिम रूप से अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए इन्हें बनाते हैं। उदाहरण के लिए शहरों और शहरी केन्द्रों में जीवन एक मानव निर्मित संस्कृति इसका एक उदाहरण है लेकिन शहर का माहौल ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में अधिक प्रदूषित हो गया है। कारखानों, बिजली संयंत्रों, उद्योगों और कंपनियों ने वायुमंडल और वायु के प्रदूषण में बहुत योगदान दिया है। इस तरह के मानव निर्मित पर्यावरण के परिणामस्वरूप बहुत सारे स्वास्थ्य संबंधी खतरे, उपभोग या अत्यधिक मात्रा में सामग्री और ऊर्जा का उपयोग और 'जोखिम समाज' के संकट की ओर अग्रसर हो रहा है।

मानव की मूलभूत आवश्यकता आवास, जल, स्वच्छता परिवहन, संचार, भोजन, ऊर्जा, शिक्षा और स्वास्थ्य है। ये प्राकृतिक रूप से स्थापित ग्रामीण क्षेत्रों में मानव के लिए आसानी से

उपलब्ध थे। हालाँकि औद्योगिक और शहरी केंद्रित विकास की धारणा ने मानव को शहरों की ओर पलायन करने के लिए प्रेरित किया। जिसके परिणामस्वरूप शहरों में जनसंख्या प्रदूषण, स्वास्थ्य संबंधी खतरों और वायु मंडलीय असंतुलन और असंतुलित होने के साथ–साथ दिन प्रतिदिन बढ़ती गई। शहरों में जनसंख्या के दबाव ने फुटपाथ निवासियों की संख्या और कई और समस्याओं को जन्म दिया। अत्यधिक यातायात, कारखाने, मिलें और घरेलू धुआं वातावरण को प्रदूषित करते हैं। इस तरह ग्रामीण और शहरी विन्यास (सेटअप) के बीच एक अंतराल उभरा है।

8.2.2 सामाजिक पर्यावरण

जैविक और अजैविक पहलू मानव जीवन का अभिन्न अंग है, उसी तरह सामाजिक विन्यास (सेटअप) और संबंध सामाजिक वातावरण बनाता है। सामाजिक पर्यावरण में सांस्कृतिक मानदंड, मूल्य और राजनीतिक, आर्थिक और धार्मिक संस्थान शामिल हैं। ये सभी संस्थान सामाजिक क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं ये निर्धारित करते हैं कि ये समाज के लाभ और जीविका के लिए पर्यावरणीय संसाधनों का उपयोग कैसे करें? इसके अलावा सामाजिक वातावरण को समाज की व्यापक संरचनात्मक व्यवस्था के संदर्भ में समझा जा सकता है, जिसमें विभिन्न समूह, संस्थान शामिल हैं। समाज के प्रमुख संस्थान और समूह जीवन की ऐसी मूलभूत आवश्यकताओं को लेकर चिंतित हैं और सभी ने मिलकर सामाजिक वातावरण का गठन किया है। सामाजिक संस्कृतिक वातावरण में, एक परिवार सामाजिक संगठन के प्राथमिक संस्थानों में से एक है जो प्रजनन, सामाजिक संगठन एकीकरण जैसे विभिन्न कार्यों को करता है, सांस्कृतिक परंपरा को एक पीढ़ी में स्थानांतरित करता है और इत्यादि। पर्यावरण का मानव निर्मित हिस्सा संस्कृति है और यह सामाजिक वातावरण और सामाजिक क्रिया को भी निर्धारित करता है। सामाजिक मानदंड आर्थिक गतिविधियाँ, राजनीतिक और धार्मिक संस्थान हमेशा सांस्कृतिक पर्यावरण को प्रभावित करते हैं। अर्थव्यवस्था एक अन्य महत्त्वपूर्ण कारक है जो निर्धारित करता है कि आर्थिक गतिविधियों में संसाधनों का अधिग्रहरण और उपयोग कैसे किया जाता है। प्राकृतिक संस्थाधनों के उचित या अनुचित उपयोग या दोहन से पर्यावरण विनाश और क्षरण होगा।

8.3 विकास और पर्यावरण के बीच संबंध

विकास की अवधारणा नई नहीं है। विकास लगातार समाज और स्वयं की अवधारणा की बारीकियों को बदल रहा है। प्रारंभ में, विकास परिवर्तन और वृद्धि को दर्शाता है, हालाँकि इसका व्यापक अर्थों में उपयोग केवल आर्थिक विकास से ही किया जा सकता है। इसके अलावा विकास विशुद्ध रूप से एक आर्थिक घटना नही है, बल्कि एक बहुआयामी प्रक्रिया है। इसमें समृद्धि, शांति और शांति के लिए सम्पूर्ण आर्थिक सामाजिक, सांस्कृतिक ओर राजनीतिक प्रणाली का पुनर्गठन और पुर्नसंरचना शामिल है।

इसके अलावा एक संकीर्ण लेकिन एक सकारात्मक अर्थ में, विकास मानव जीवन पर ध्यान देने के साथ सभी जीवों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने की प्रक्रिया है। यह आधुनिकता की दिशा में ओर विशेष रूप से राष्ट्र निर्माण और सामाजिक आर्थिक समृद्धि और बड़े पैमाने पर समाज की प्रगति दिशा में विकास की प्रक्रिया है। विकास लोगों की बेहतरी की प्रक्रिया है। विकास कई कारकों से जुड़ा होता है और प्रत्येक कारक एक दूसरे को प्रभावित करता है। विकास के कई अर्थ हैं लेकिन यह एक समस्याग्रस्त, वाद–विवादित, अस्पष्ट और भ्रांतिजनक शब्द है। हालाँकि सरल शब्दों में हम कह सकते हैं कि विकास सामाजिक

परिवर्तन है। इसका मतलब है कि विकास लोगों को उनकी मानवीय क्षमता प्राप्त करने की अनुमति देता है। एक और प्रासंगिक बिन्दु जो विकास पर जोर देता है वह भी एक राजनीतिक शब्द है और इसके कई अर्थ है। विभिन्न लोगों या संगठनों द्वारा रखे गए एजेंडे का एक विविध रूप उनके संदर्भ में परिलक्षित और उचित हो सकता है। उदाहरण के लिए विकास का विचार विश्व बैंक द्वारा व्यक्त किया गया है, जो ग्रीनपीस के कार्यकर्ताओं द्वारा प्रस्तुत विचार से बहुत अलग और पदोन्नत है। इस बिन्दु के विकास को समझने के लिए महत्त्वपूर्ण प्रभाव है, क्योंकि स्थायी विकास के अर्थ के बारे में बहुत भ्रम पैदा होता है, क्योंकि लोग 'विकास' के अर्थ के बारे में बहुत अलग विचार रखते हैं। (अडमस 2009)

सामग्री और सामाजिक गरीबी को पर्यावरणीय तबाही के दो प्रमुख कारणों के रूप में पहचाना जाता है। हालाँकि, दूसरी ओर, पर्यावरण की खराब गुणवत्ता गरीबी का कारण हो सकती है। पर्यावरण और विकास दोनों को अन्योन्याश्रित के रूप में चित्रित किया जा सकता है। एक उपयुक्त जीवन के वातावरण के बिना विकास असंभव है, इसलिए ससत् विकास के बिना पर्यावरण को शांत और बनाए नहीं रखा जा सकता है।

पर्यावरण विकासात्मक संभावनाओं पर प्रभाव डालने वाले आवश्यक निर्णायक कारकों में से एक है। विकास की विविध रणनीतियों को शहरीकृत, औद्योगिक और ग्रामीण क्षेत्रों में अलग–अलग तरीके से लागू किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, विकास के विभिन्न तरीकों को तटीय क्षेत्रों में किया जाना चाहिए, जो पहाड़ी या बंजर क्षेत्रों में उपयोग नहीं किए जा सकते हैं। इसलिए यह समाज संस्कृति और भौगोलिक रूप से विशिष्ट है। हालाँकि, आर्थिक विकास के सन्दर्भ में विकास के लिए कच्चे माल और ऊर्जा के प्राकृतिक संसाधनों की गुणवत्ता और पहुँच महत्त्वपूर्ण है। यदि हम सतत् विकास में विकास को समझते हैं तो पर्यावरण की गुणवत्ता और इसकी स्थायी स्थिति प्रमुख प्राथमिकताओं में से एक बन जाएगी। पर्यावरण पर विकास के प्रभाव को दो तरीकों से देखा जा सकता है : (अ) सकारात्मक और (ब) नकारात्मक

सकारात्मक प्रभाव

छोटे पानी के बांध, पर्यावरण के अनुकूल प्रौद्योगिकियों और संबद्ध विकासात्मक पहलों को निर्माण पर्यावरण के लिए सकारात्मक होगा। इस प्रकार के विकास और इसके प्रभाव सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ में परिदष्य को समृद्ध करेगा और वर्तमान और भावी पीढ़ियों के लिए पर्यावरण का स्थायी उपयोग करेगा।

नकारात्मक प्रभाव

बड़े पैमाने पर परिवहन अवसंरचना, महान जल बांधो, कच्चे माल के प्राकृतिक संसाधनों के खनन और ऊर्जा के विकास का नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इन प्रभावों से पर्यावरण प्रभावित होता है। जैसे प्राकृतिक आवास का विखंडन, उपजाऊ मिट्टी का क्षरण, पर्यावरण का प्रदूषण स्थानीय जलवायु परिवर्तन और इत्यादि। अनियंत्रित शहरीकरण, औद्योगिकीकरण, वनों के विनाश और कृषि के बड़े पैमाने पर होने के कारण भारत में पर्यावरण के मुद्दे बढ़े। प्रमुख पर्यावरण मुद्दे वन और रेत, चट्टानें इत्यादि हैं। पर्यावरणीय गिरावट, सार्वजनिक स्वास्थ्य, जैव विविधता की हानिए परिस्थितिक तंत्रो में लचीलापन, गरीब के लिए आजीविका सुरक्षा को प्रभावित कर रही है। पानी की कमी मिट्टी और कटाव, वनों की कटाई, हवा कई पर्यावरणीय मुद्दो से संबंधित है।

बोध प्रश्न I

टिप्पणी

1) पर्यावरण से आप क्या समझते हैं?

....

....

....

....

....

....

8.4 पर्यावरणात्मक दृष्टिकोण

8.4.1 प्रतिष्ठित दृष्टिकोण

पर्यावरण इस बात से निर्धारित होता है कि हम अपने दैनिक जीवन में इसे किस तरह से देखते और मानते हैं। पर्यावरण पर लोगों का अनुभव और दृष्टिकोण और प्रकृति के साथ उनके संबंधों को पारंपरिक रूप से चार श्रेणियों में विभाजित किया गया है : नेतृत्त्व, साम्राज्यवाद, रोमांटिकतावाद और उपयोगितावाद। ये दृष्टिकोण आज भी पर्यावरण के लिए प्रासंगिक हैं।

(i) प्रबंधक की दृष्टिकोण का मतलब है कि मानव अपने पर्यावरण के बारे में पूर्ण विशेषाधिकार और जिम्मेदारी रखता है। यह दृष्टिकोण बताता है कि मनुष्य सभी जीवों चीजों की देखभाल करें और उन्हें सम्मान के साथ व्यवहार करें। इस तरह के रवैये कुछ ईसाई और यहूदी समाजों के भीतर प्रचलित है, और इस व्यवहार को बाइबिल को मानने वाले अपनाते हैं। चूंकि प्रकृति को पवित्र माना जाता है, पारंपरिक प्रबंधक अक्सर विज्ञान और प्रौद्योगिकी के खिलाफ होते हैं क्योंकि वे प्रकृति को नियंत्रित करने में लगे होते हैं।

(ii) **साम्राज्यवाद :** यह यहूदी और ईसाई धर्म और इसकी प्रबंधन में रचा बसा है। हालाँकि सामाज्यवादी इस दृष्टिकोण का समर्थन करते हैं। कि ईश्वर ने मनुष्यों को प्रकृति नियंत्रित करने का अधिकार दिया है और उन्हें लगता है कि प्रकृति और ईश्वर अलग है। इसके विपरीत, प्रबंधकों को लगता है कि प्रकृति और भगवान के बीच पवित्र बंधन मौजूद है। साम्राज्यवादी का मानना है कि भगवान उन्हें सम्मान देंगे अगर वे पृथ्वी को अधीन करें और प्रकृति को नियंत्रित करें। साम्राज्यवादी और उनकी संस्कृति के ऐतिहासिक दृष्टिकोण में, पौधे और पशु की बलि भगवान के लिए आवश्यक है। फ्रांसिस बेकन का सुझाव है कि प्रकृति पर विजय पाने की महत्वाकांक्षा मानव में सबसे अधिक है। उन्होंने विज्ञान के आधुनिक दृष्टिकोण का विकास इस धारणा के आधार पर किया कि विज्ञान का उद्देश्य प्रकृति को अनुशासित करना है। साम्राज्यवादी ने प्रकृति का विश्लेषण किया, जो 18वीं और 19वीं शताब्दी के दौरान प्रमुख थी और आज भी कुछ तिमाहियों में प्रचलित है।

(iii) **प्राक्रितवाद :** अठारहवीं शताब्दी के अंत तक कलाकारों, कवियों और लेखको के एक समूह ने साम्राज्यवादी (इंपीरियलिस्टिक) दृष्टिकोण को अपनाया कि प्रकृति करे नियंत्रित

और प्रबंधित किया जाना चाहिए। नए औद्योगिक परिदृश्य, ज्यामितीय रूप से बनाये उद्यान की रोमांटिक लोगों द्वारा घृणा के पात्र माने जाता है। उनकी खातिर पर्यावरण और उसकी मूल्य को रोमांटिक लोगों द्वारा नहीं माना जाता है, हालाँकि, साम्राज्यवादी पर्यावरण को महत्त्व और मूल्य देते हैं जो मनुष्यों के लायक है। इसके अलावा, प्रकृति को बदसूरत और खतरनाक मानने के बजाए, रोमांटिक लोग प्रकृति ईश्वर स्वरूप को मानते हुये उस की सुंदरता के बारे में भगवान की तरह व्यवहार करके उत्साहित हो गए। प्रकृति सुंदर है, जब यह अपनी शुद्धतम स्थिति में है, मनुष्यों द्वारा अप्रभावित है, जैसे कि रोमांटिक लोगों द्वारा समझाया गया है।

(iv) प्रकृति को समझने के लिए चौथा परिप्रेक्ष्य उपयोगितावादी है। इस दृष्टिकोण में, जीवन को खुश और संतोष माना जाता है और इसे मानवीय भावनाओं से परे नहीं समझा जा सकता है। यहाँ खुशी और संतोष जीवन में आवश्यक चीजें हैं, यह मायने नहीं रखता कि इस भावनाओं की सराहना हो सकती है या नहीं। मनुष्य ऐसी भावनाओं का अनुभव करने में अधिक सक्षम है, इसलिए उन्हें हर प्रकार से महत्व दिया जाना चाहिए। जानवरों का मूल्य हो सकता है क्योंकि वे दबाव और दर्द महसूस करते हैं, लेकिन पौधों पेड़ों में कोई भावना नहीं होती है और वे केवल कमाई का साधन होता है। हालाँकि कई कारण है कि पेड़ पौधे और पर्यावरण उपयोगितावादी के लिए आवश्यक है। लोग खाद्य श्रृंखला और विविध परिदृश्यों का आनंद लेते हैं और उपयोग करते हैं। जिसमें पर्यावरण अपनी मौलिक भूमिका निभाता है। उपयोगितावादी इन कारणों से पर्यावरण की रक्षा और संरक्षण करना चाहते हैं। उपयोगितावादी स्वीकार करते हैं कि दीर्घकालिक सुख को अल्पकालिक सुख से समझौता करना पड़ता है, हालाँकि वे आनंद की तलाश करते हैं।

8.4.2 सतत विकास का दृष्टिकोण

1972 में "मानव पर्यावरण" पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन स्टॉकहोम, स्वीडन में हुआ। स्टॉकहोम सम्मेलन ऐतिहासिक था क्योंकि वैश्विक स्तर पर पहली बार पर्यावरणीय समस्याओं को औपचारिक मान्यता मिली। आधुनिक औद्योगिक समाज यह महसूस कर सके कि केवल "एक ही दुनिया" है। इसने यह भी माना कि पर्यावरणीय समस्याएँ वैश्विक समस्याऐं है जिन्हें अंतर्राष्ट्रीय समाधान की आवश्यकता है। हालाँकि उत्तर के विकसित देश और दक्षिण के विकासशील देश आवश्यक रूप से समान पर्यावरणीय चिंताओं को साझा नहीं करते हैं। फिर 1981 में "सतत विकास" की अवधारणा पहली बार सामने आई है। यह एक महत्वपूर्ण दस्तावेज–विश्व संरक्षण रणनीति के शीर्षक में निहित था : सतत विकास के लिए जीविका संसाधन का संरक्षण और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए अंतर्राष्ट्रीय संघ (आई यू सी एन) विश्व वन्यजीव कोष (डब्ल्यू डब्ल्यू एफ) और संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम द्वारा प्रकाशित है। 1983 में, संयुक्त राष्ट्र ने नार्वे के प्रधानमंत्री, ग्रो हार्लेम ब्रुन्डलैंड की अध्यक्षता में स्वतंत्र निकाय के रूप में पर्यावरण और विकास पर विश्व आयोग की स्थापना की। इसका उद्देश्य ग्रह पर समीक्षात्मक पर्यावरण और विकास की समस्याओं की फिर से जांच करना और उन्हें हल करने के लिए यथार्थवादी प्रस्ताव तैयार करना और यह सुनिश्चित करना था कि भविष्य की पीढ़ियों के संसाधनों को दोहन किए बिना विकास के माध्यम से मानव प्रगति को बनाए रखा जाएगा। डब्ल्यू सी ई डी ने वर्ष 1987 में ऑवर कॉमन फ्यूचर" शीर्षक से अपनी रिपोर्ट प्रकाशित की। इस रिपोर्ट ने "सतत विकास" की अवधारणा की पहली आधिकारिक परिभाषा प्रस्तुत की। एक अन्य दस्तावेज, "केयरिंग फॉर द अर्थ सस्टेनेबल लिविंग" के लिए एक रणनीति (आई यू सी एनए यू एन ई पी और डब्ल्यू डब्ल्यू एफ द्वारा 1991 में प्रकाशित) ने प्रकृति के संरक्षण के लिए एक संशोधित वैश्विक रणनीति का सुझाव

दिया है। इससे भी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इस अध्ययन द्वारा यह माना गया कि वैश्विक प्रकृति संरक्षण के लिए स्थानीय लोगों की भागीदारी की आवश्यकता है। 1992 में, पर्यावरण और विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (यू एन सी ई डी) के लिए रियो डी जनेरो, ब्राजील में 150 से अधिक देशों के प्रतिनिधियों ने मुलाकात की, जिसे "अर्थ समिट" के रूप में जाना जाता है। अर्थ समिट सम्मेलन ने पर्यावरण और विकास के बीच महत्वपूर्ण संबंध स्थापित किए। इसने "द अर्थ चार्टर" 21वीं सदी के लिए आचार संहिता या कार्ययोजना का निर्माण किया, यानि एजेंडा 21, स्थानीय एजेंडा 21 (LA 21), स्थानीय मुद्दो की व्याख्या (जो बाद में आई) जलवायु सम्मेलन (एक सम्मेलन वायुमंडलीय प्रदूषण के कारण जलवायु परिवर्तन को नियंत्रित करने के लिए) और जैव विविधता सम्मेलन) रियो घोषणा ने बातचीत और वनों के उपयोग की रूप रेखा को भी निर्धारित किया। इसने पर्यावरणीय रूप से स्थिर और स्थायी ग्रह (पर्यावरण का हिंदू सर्वेक्षण 2002 : 5–6) सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक कदम उठाए।

अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर ध्यानाकर्षण (फोकस) "सतत विकास" पर है। "सतत विकास" की दिशा में प्रगति तक पहुँचने के लिए "रियो +5" बैठक 1997 में न्यूयॉर्क में आयोजित की गई थी। फिर से, सतत विकास पर विश्व शिखर (डब्ल्यू एस एस सी) पर विश्व शिखर सम्मेलन 26 अगस्त से 4 सितंबर, 2002 तक जॉन्सवर्ग में आयोजित किया गया है, जिसे जान्सवर्ग शिखर सम्मेलन के रूप में जाना जाता है और इसे (रियो+10" के रूप में प्रलेखित किया गया है। एजेंडा में पर्यावरण और विकास से संबंधित प्रत्येक मुद्दे जैसे कि ऊर्जा, जल, स्वच्छता, स्वास्थ्य, वन, उपभोग पैर्टन, गरीबी व्यापार और वैश्वीकरण शामिल है। फलस्वरूप, सतत/स्थायी विकास का दायरा व्यापक हो गया है।

बोध प्रश्न II

1) एजेंडा 21 क्या है?

....

....

....

....

....

....

8.4.2.1 सतत विकास : एक विमर्श (डिस्कोर्स)

सतत विकास की अवधारणा के प्रारंभिक मूल को जानने के लिए विकास पर्यावरण पर बहस में वापस जाना होगा। विकास के आर्थिक विकास मॉडल को वैश्विक स्तर पर अधिकांश देशों ने अपनाया और पर्यावरण क्षरण को विभिन्न रूपो में उत्पन्न किया, और विकास पर्यावरणीय बहस के उदय के लिए ऐतिहासिक संदर्भ भी प्रदान किया है।

आधुनिक तकनीक, उत्पादन की कारखाना प्रणाली, तेजी से औद्योगिकीकरण और नगरीकरण विकास के इस आर्थिक विकास मॉडल की गुणवत्ता है। पश्चिमी देशों ने शुरू में विकास के इस मॉडल का पालन किया और इसे कम विकास वाले लोगों के लिए निर्धारित किया, समय के साथ–साथ वे विकास और अनिश्चित काल के लिए औद्योगिकरण के लिए उसी मार्ग का अनुसरण करेंगे।

कम विकसित देशों/अविकसित देशों द्वारा विकास के पश्चिमी मॉडल को अपनाने के सभी परिणाम सकारात्मक नहीं थे। आर्थिक विकास हुआ, लेकिन उत्तर और दक्षिण के देशों के बीच एक व्यापर खाई बन गई और इसने विशेष समाजों के भीतर अमीर और गरीब वर्गों के बीच आर्थिक विषमताओं को बढ़ावा देने में भी मदद की। यह महसूस किया गया कि "विकास" की कल्पना केवल "आर्थिक विकास" के रूप में की गई थी जो एक अपर्याप्त धारणा थी। आर्थिक विकास जरूरी नहीं कि समाज के निचले तबके के विकास के लिए हो। इस अहसास के कारण विकास की सोच में बदलाव आया। अंततः इसने विकास के कुछ अतिरिक्त मानदंडों को शामिल किया, जैसे कि वितरणात्मक न्याय या समानता और जनता के जीवन की समग्र गुणवत्ता में सुधार (धनगारे 1996 : 7–9)

इसके अलावा, यह ध्यान रखना अधिक महत्त्वपूर्ण है कि वैश्विक पर्यावरण की गुणवत्ता पर विकास के पश्चिमी मॉडल के प्रभाव की जांच करने से विकास के इस मॉडल पर महत्त्वपूर्ण पुनर्विचार हुआ है। यह महसूस किया जाता है कि औद्योगिकीकरण की लापरवाह खोज और विकास के लिए संसाधन शोषक आधुनिक तकनीक के उपयोग से पर्यावरणीय गिरावट इस हद तक हुई है कि सभी जीवित प्रजातियों का अस्तित्त्व संकटग्रस्त हो गया है। एक सामान्य समझौता है कि आर्थिक विस्तार विशेष रूप से युद्ध के बाद की अवधि के दौरान, वैश्विक पर्यावरण के लिए खतरनाक परिणाम हुए हैं। (मुंशी 2000 : 253) प्रकृति से ऊर्जा और सामग्री की निरंतर आपूर्ति के बिना औद्योगीकरण संभव नहीं है। निरंतर औद्योगिक उत्पादन उपभोग के बढ़ते स्तर के परिणामस्वरूप कचरे के निरंतर संचय की समस्या उत्पन्न हुई, धीरे धीरे प्रकृति बिगड़ रही थी। आधुनिक, औद्योगिक रूप से उत्पादन ने सामाजिक असमानता की बढ़ती सेवा और बढ़ती पर्यावरण अस्थिरता और गिरावट को प्रेरित किया जिसकी हाल ही में, "आधुनिकता के संकट" (एडुआर्डो और वुडगेट 1997 : 85) के रूप में अवधारणा की गई है। जो पर्यावरणीय क्षरण हुआ है वह प्राकृतिक संसाधनों के एक बड़े पैमाने पर निष्कर्षण द्वारा चिंहित है। वनों की हानि, जानवरों और पौधों की प्रजातियों का विलुप्त होना, ओजोन परत का ह्रास, वायु, जल और मृदा प्रदूषण, समुद्री जीवन और जैव विविधता की हानि आदि खतरनाक दर पर हुआ है और इस ग्रह पर जीवन के अस्तित्त्व के लिए खतरा पैदा कर दिया है।

विकासशील राष्ट्रों के पारिस्थितिकी तंत्र और अर्थशास्त्र के संदर्भ में विकास के पश्चिमी मॉडल के परिणामों की जांच करते हुए, सुनीता नारायण (2000: 13) टिप्पणी करती है कि "पश्चिमी आर्थिक और तकनीकी मॉडल अत्याधिक सामग्री और ऊर्जा गहन है, यह प्राकृतिक संसाधनों की बड़ी मात्रा में कायांतरण करता है और विषाक्त निम्नकृत और परिवर्तित पारिस्थितिकी तंत्र बनाता है। यह वह मॉडल है जिसका विकासशील राष्ट्र भी आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए अनुसरण कर रहे हैं, जिससे बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं, प्रदूषण और बड़े पैमाने पर पारिस्थितिक विनाश के साथ गरीबी और असमानता का एक असाधारण मिश्रण (कॉकटेल) हो रहा है।" यह माना जाता है कि अपने सबसे विजयी क्षणों में पश्चिमी विकास मॉडल न तो वांछनीय है औ न ही सार्वभौमिक रूप से लागू होता है क्योंकि यह स्थायी नहीं है। (बर्नहार्ड 1997 : 113) इस प्रकार विकास के पश्चिमी मॉडल की दो बुनियादी धारणाएं "पहला, विकास को अंतरिक्ष में सार्वभौमिक रूप दिया जा सकता है और दूसरा, यह स्थायी होगा (सचस 1997 : 71) जिसने अपनी वैधता खो दी थी।

आर्थिक विकास के लिए अपनाई गई रणनीतियों के कारण, पर्यावरणीय गिरावट और प्राकृतिक संसाधनों का दोहन वैश्विक घटना बन गई है। अंततः पर्यावरणीय समस्याओं की बढ़ती जागरूकता ने पर्यावरणवाद ने चल रहे विकास के कथन (डिस्कोर्स) में एक आवश्यक

आयाम जोड़ा है। यह विकास की हमारी दृष्टि में बदलाव का कारण बना है। इसने संबंधित बुद्धिजीवियों को सोचने पर मजबूर कर दिया है कि विकास के नाम पर इस ग्रह के पारिस्थितिकी तंत्र का क्या किया जा रहा है। बिगड़ती पर्यावरणीय स्थिति ने नीतियों, रणनीतियों और विकास के कार्यक्रमों की फिर से जांच और पुनर्विचार किया है। परिणामस्वरूप, पर्यावरण विकास की बहस उभरी और समय के साथ तीव्र हो गई।

शुरू में, विकास और पर्यावरण को अलग अलग अस्तित्वों के रूप में देखा गया था और जो पर्यावरण पर विकास का समर्थन करते थे और जो विकास पर पर्यावरण के लिए तर्क देते थे, उनके बीच एक विभाजन था (बविस्कर 1997 : 196) एक अन्य विद्वान ने देखा कि प्रवक्ता के दो अलग अलग शिविर उभरे, जिसने दो अलग अलग मानसिकता रखी और अपने आप को एक दूसरे का विरोधी माना। (आई बी आई डी : 71–72) इसने पर्यावरण बनाम विकास के द्वंद्ववाद को जन्म दिया।

हालाँकि, अंततः एक जागरूकता भी सामने आई कि मनुष्य को विकास और पर्यावरण दोनों की आवश्यकता है। जैसा कि बैलेथमस ने व्यक्त किया, एक बढ़ती हुई मान्यता थी कि पर्यावरण और विकास के समग्र लक्ष्य में संघर्ष नहीं है, लेकिन उसी में, अर्थात, वर्तमान या भविष्य की पीढ़ियों के जीवन पर कल्याण की मानव गुणवत्ता में सुधार के लिए है। (सी एफ मोहंती 1998:82)। इस तरह की सोच के कारण यह देखा गया कि "विकास" बनाम "पर्यावरण" एक झूठा द्वैतवाद है। यह दृश्य विश्व विकास रिपोर्ट 1992 – विकास और पर्यावरण में अच्छी तरह से व्यक्त किया गया है। इस रिपोर्ट में यह तर्क दिया गया है कि आर्थिक विकास और ध्वनि पर्यावरण प्रबंधन एक ही एजेंडे के पूरक पहलू हैं। पर्याप्त पर्यावरण संरक्षण के बिना, विकास कम आंका जाएगा : विकास के बिना, पर्यावरण संरक्षण विफल हो जाएगा, आय में वृद्धि बेहतर पर्यावरण प्रबंधन के लिए संसाधन प्रदान करेगी (विश्व बैंक 1992 : 25)। वास्तव में इस तरह के एक दृश्य ने "विकास" और "पर्यावरण" के बीच सामंजस्य की आवश्यकता को रेखांकित किया। सतत विकास की अवधारणा जैसा कि पर्यावरण और विकास पर विश्व आयोग (डब्ल्यू सी ई डी) की रिपोर्ट में परिभाषित किया गया है, जिसका शीर्षक "ऑवर कॉमन फ्चूचर" (1987) है, जो विकास के लक्ष्यों के साथ साथ पर्यावरण संरक्षण पर भी पुनर्विचार करने का प्रयास करता है। आइए अब हम "सतत विकास" की अवधारणा की परिभाषा और अर्थ को "ऑवर कॉमन फ्यूचर" (1987) में प्रस्तुत और व्याख्यायित रूप से समझते हैं।

8.4.2.2 सतत विकास : परिभाषा और अर्थ, आवश्कताएं, नीतिगत उद्देश्य और उपयुक्त रणनीति

सतत विकास शब्द की परिभाषा इसका अर्थ, आवश्यकताओं, नीतिगत उद्देश्यों और उपयुक्त रणनीति, जैसा कि रिपोर्ट ऑवर कॉमन फ्यूचर में उल्लेख किया गया है, को संक्षेप में नीचे दिया गया है।

(a) सतत विकास : परिभाषा और अर्थ की अवधारणा

सतत विकास एक ऐसा विकास है जो भविष्य की पीढ़ियों की जरूरतों को पूरा किए बिना वर्तमान की जरूरतों को पूरा करता है। इसमें दो प्रमुख अवधारणाएँ शामिल हैं।

"जरूरतों" की अवधारणा जिसके लिए विशेष रूप से दुनिया के गरीबों की आवश्यक जरूरतों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। और

वर्तमान और भविष्य की जरूरतों को पूरा करने की पर्यावरण की क्षमता पर प्रौद्योगिकी और सामाजिक संगठन के राज्य द्वारा लगाए गए सीमाओं का विचार। (सी एफ साइंस एज 1987: 30)

आइए उपरोक्त परिभाषा में दिए गए मुख्य मुद्दों को समझाते हैं। पहला आर्थिक विकास का मुद्दा है। आर्थिक विकास को न केवल गरीबी में कमी के लिए आवश्यक माना जाता है, बल्कि मानवीय जरूरतों और बेहतर जीवन के लिए आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए भी आवश्यक है। दूसरा वर्तमान और भावी पीढ़ियों की जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्यावरण की क्षमता की सीमाओं का मुद्दा है। बढ़ती सामाजिक आवश्यकताओं से उत्पन्न दबाव के कारण, समाज सीमित प्राकृतिक संसाधनों को निकालने और उनके उपयोग के लिए आधुनिक तकनीकों का उपयोग कर रहे हैं। अगर हम मौजूदा बचे–खुचे प्राकृतिक संसाधनों का दोहन करना जारी रखते हैं, तो आने वाली पीढ़ियां अपनी जरूरतो को पूरा नहीं कर पाऐंगे। इस प्रकार वर्तमान और भावी पीड़ियों की जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्यावरण की क्षमता की कुछ सीमाएं हैं। यह अहसास परिभाषा में परिलक्षित होता है।

(b) सतत विकास : आवश्यकताऐं

अवधारणा पर विस्तार से बताते हुए, रिपोर्ट ऑवर 'कॉमन फ्चूचर (1987)' "सतत विकास" की आवश्यकताओं को भी सामने लाती है। एक बेहतर समक्ष के लिए "सतत विकास" की महत्वपूर्ण आवश्यकताओं पर प्रकाश डाला जा सकता है :

सतत विकास के लिए सभी की मूलभूत जरूरतों को पूरा करना और बेहतर जीवन के लिए अपनी आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए सभी अवसरों का विकास करना आवश्यक है। मूल्यों का प्रचार जो उपभोग मानकों को प्रोत्साहित करते हैं, जो पारिस्थितिक सांभव्य की सीमा के भीतर है। और जिसकी सभी उचित रूप से आकांक्षा कर सकते हैं कि समाज उत्पादक जरूरतों को बढ़ाकर और सभी के लिए सैन्य अवसरों के साथ इसे सुनिश्चित करके मानव की जरूरतों को पूरा करता है। जनसांख्यिकी विकास पारिस्थितिकी तंत्र की बदलती उत्पादक क्षमता के अनुरूप है। कम से कम, विकास को प्राकृतिक प्रणालियों को खतरे में नहीं डालना चाहिए जो पृथ्वी पर जीवन का समर्थन करते हैं : वातावरण, पानी, मिट्टी और जीवित प्राणी, दबाव को दूर करने के लिए विश्व को उपलब्ध संसाधन और पुनरावर्ती तकनीकी प्रयासों के लिए समान पहुंच सुनिश्चित करनी चाहिए। गैर नवीकरणीय संसाधनों की कमी की दर को पौधे और जानवरों की प्रजातियों के संरक्षण के भविष्य के कुछ विकल्पों के रूप में इस्तेमाल करना चाहिए कि पारिस्थितिकी तंत्र की समग्र अखंडता को बनाए रखने के लिए हवा, पानी और अन्य प्राकृतिक तत्त्वों की गुणवत्ता पर प्रतिकूल प्रभाव कम से कम पड़ता है। (सी एफ साइंस एज 1987 : 30–31)

यह भी जोड़ा गया है कि, संक्षेप में, सतत विकास परिवर्तन की एक प्रक्रिया है, जिसमें संसाधनों का दोहन, निवेश की दिशा, तकनीकी विकास का उन्मुखीकरण और संस्थागत परिवर्तन सभी सद्भाव और वर्तमान और भविष्य की मानवीय आवश्यकताएं और आकांक्षाएं दोनों को पूरा करने की क्षमता में है। (सी एफ साइंस एज 1987 : 31)

(c) सतत विकास : नीति का उद्देश्य

यह भी अनुग्रह करता है कि सभी राष्ट्र सतत विकास की और बढ़ने के लिए विशिष्ट नीतिगत परिवर्तन करें। यह नोट किया गया है कि पर्यावरण और विकास नीतियों के महत्वपूर्ण उद्देश्य जो सतत विकास की अवधारणा से आते हैं, उनमें शामिल है :

(i) विकास को पुनर्जीवित करना

(ii) विकास की गुणवत्ता को बदलना

(iii) नौकरी, भोजन, ऊर्जा, पानी और स्वच्छता के लिए आवश्यक जरूरतों को पूरा करना

(iv) जनसंख्या का स्थायी स्तर सुनिश्चित करना

(v) संसाधन आधार का संरक्षण और संवर्द्धन

(vi) प्रौद्योगिकी को पुनः प्रस्तुत करना और जोखिम का प्रबंधन करना

(vii) निर्णय लेने में पर्यावरण और अर्थशास्त्र का विलय (वही : 32)

(d) सतत विकास : उपयुक्त रणनीति

सतत विकास के लिए रणनीति का उद्देश्य मानव और मानवता और प्रकृति के बीच सद्भाव को बढ़ावा देना है। विकास और पर्यावरण के विशिष्ट संदर्भ में सतत विकास की आवश्यकताऐं है :

(i) एक राजनीतिक प्रणाली जो निर्णय लेने में प्रभावी नागरिक भागीदारी को सुरक्षित करती है।

(ii) आर्थिक प्रणाली जो आत्मनिर्भर और निरंतर आधार पर अधिभार और तकनीकी ज्ञान उत्पन्न कर सकती है।

(iii) सामाजिक प्रणाली जो असमान विकास से उत्पन्न तनावों के लिए समाधान प्रदान करती है।

(iv) उत्पादन प्रणाली जो विकास के लिए परिस्थितिक आधार को संरक्षित करने के दायित्त्व का सम्मान करती है।

(v) तकनीकी प्रणाली जो नए समाधान के लिए लगातार खोज कर सकती है।

(vi) अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली जो व्यापार और वित्त के स्थायी पैटर्न को बढ़ा देती है।

(vii) प्रशासनिक प्रणाली जो लचीली है और इसमें आत्म सुधार की क्षमता है।

ये आवश्यकताएं उन लक्ष्यों की तरह है, जो विकास पर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय क्रिया में अंतर्निहित हैं।

आईए अब हम सतत विकास की अवधारणा की आलोचना पर चर्चा करते हैं।

8.4.2.3 सतत विकास की अवधारणा की आलोचना

ब्रेंडलैड कमीशन द्वारा परिभाषित सतत विकास की अवधारणा कई विद्वानों के द्वारा आलोचनात्मक व गंभीर रूप से जांच की गई है। वे आलोचना है :

(a) सतत विकास : तार्किक विरोधाभास और अर्थ संबंधी महत्वाकांक्षा

रमेश दीवान जैसे विद्वानों ने एक उग्र अतिवादी रूख अपनाया और व्यक्त किया कि सतत विकास की अवधारणा शब्द में ही एक विरोधाभास का प्रतिनिधित्व करती है। उन्होंने कहा कि विकास और सततता एक दूसरे के साथ असंगत है; वे विरोधाभासी भी है। दूसरे शब्दों में स्थिरता विकास नहीं है। (सी एफ धनगारे 1996 : 10) इस तरह के विचार का अर्थ है कि किसी भी अर्थ में उपयोग किए जाने वाले विकास शब्द – आर्थिक विकास या इक्विटी के साथ वृद्धि या आधुनिकीकरण पर जीवन की गुणवत्ता में सुधार कहते हैं – अनिवार्य रूप से उपभोग के स्तर में वृद्धि प्राकृतिक संसाधनों के शोषण की ओर जाती है।

(b) सतत विकास की परिभाषा : अस्पष्ट और संदिग्धार्थक

विलियम एफ फिशर के अवलोकन अलग–अलग दृष्टिकोण वाले व्यक्तियों को दिखाते हैं, जिन्होंने विभिन्न दार्शनिक स्थिति का धारण करके विभिन्न लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए और वांछित अंत को प्राप्त करने के लिए विभिन्न माध्यमों की हिमायत करते हुये सामाजिक न्याय की समान नैतिक शब्दावली का उपयोग किया है और सतत विकास के वही आर्थिक बयानबाजी की है। न केवल सतत् विकास शब्द का भिन्न व्यक्तियों या समूहों के लिये संबंध भिन्न वस्तुओं से है बल्कि इसका अर्थ राष्ट्रों के एक समूह (सेट) से दूसरे समूह के लिए भी भिन्न है। सेविला–गुज़्रमैन एडुराडो और ग्राहम वुडगेट (1997 : 86) ने सतत विकास के अर्थ के बीच उस भेदभाव को उजागर किया है जो यह औद्योगिक धारणाओं और उन देशों के लिए इसके निहितार्थ पर लागू होता है, जिनकी अर्थव्यवस्था अपेक्षाकृत कम औद्योगीकृत है। कम औद्योगीकृत के लिए, पहले, इसका अर्थ है आर्थिक विकास की क्षमता का एहसास; दूसरा यह उपभोग के स्तरों में सामान्यीकृत वृद्धि को बढ़ावा देता है। अत्यधिक औद्योगिक राष्ट्रों के लिए सतत विकास एक राष्ट्र की विकास क्षमता की निरंतर प्राप्ति के लिए अनुमति देता है, जब तक यह दूसरों के खर्चों पर हसिल नहीं होता हो। इस तरह की वृद्धि औद्योगिक रूप से जारी रहेगी, जैसा कि पर्यावरण और विकास पर विश्व आयोग (1987) के अनुसार, औद्योगिक उत्पादन "आधुनिक समाजों की अर्थव्यवस्थाओं के लिए मूलभूत रूप से महत्त्व रखती है और विकास का एक अनिवार्य संचालन यंत्र है जो कुछ भी करता है और उसके द्वारा औचित्य साबित करता है" निहितार्थ के रूप उन लोगों की आलोचना करें, जो भिन्न लक्ष्यों रणनीतियों और विचारों (1997:9) को रखते हैं।

(c) पदार्थ परिचालन से संबंधित आलोचना

अनिल अग्रवाल परिभाषा के परिचालन पदार्थों से संबंधित शंकाओं के बारे में पूछते हैं। भविष्य की पीढ़ियों के अधिकारों को कौन सुनिश्चित करेगा। जब हम जिस उच्च विभाजित दुनिया में रहते हैं, उसे देखते हुए, वर्तमान पीढ़ी का एक बड़ा हिस्सा भी अपनी सभी जरूरतों को पूरा नहीं कर सकता है? इस तरह के सामाजिक और राजनीतिक संदर्भ को देखते हुए, यह परिभाषा यह कहने में विफल है कि किसकी आने वाली पीढ़ियों की जरूरतों को सुरक्षित और संरक्षित करने की मांग की जा रही है। क्या हम केवल आने वाली पीढ़ियों की बात कर रहे हैं या गरीबों की भी? फिर से सी.आर. (2002:10) रेड्डी ने टिप्पणी की कि "जबकि संयुक्त राष्ट्र की एक संपूर्ण मशीनरी "सतत विकास" के इर्द गिर्द बनाई गयी है, दुनिया अभी भी एक सहज अर्थ में आकर्षक लेकिन अभी तक अस्पष्ट अवधारणा के परिचालन अर्थ की प्रतीक्षा कर रही है।

(d) सतत विकास से संबंधित आलोचना

के.आर. नारायण (1994:1327) एक राजनीतिक उपकरण के रूप में "सतत विकास को देखते हैं। उनका तर्क है सतत् विकास की अवधारणा उन देशों से उभर कर आई है, जो स्वयं अस्थायी संसाधनों का उपयोग करते हैं।" (आई बी आई डीः 1327) वह आगे कहते हैं कि "सतत विकास की राजनीति यह है कि वर्तमान में यह दक्षिण विरोधी है, गरीब विरोधी है, और इस तरह पारिस्थितिक विरोधी है। (आई.बी.आई.डीः 1328:29)

वह यह भी टिप्पणी करते हैं कि सतत् विकास के संबंध में "आवश्यकता" मौलिक के बजाए संपन्नता है, या निर्धन मलिन के बजाए दिखाने वाली समृद्ध है। क्योंकि जब मूलभूत जरूरतें एक विकास मॉडल का एक अभिन्न अंग बन जाती हैं तो अस्थिरता का सवाल ही नहीं उठता। वे आगे कहते हैं कि "गरीबी और पर्यावरणीय गिरावट के बीच के चक्रीय संबंध ने सरल शब्दों में यह अवधारणा बनाई है।

धारणा यह है कि जैसे–जैसे गरीबी बढ़ती है, प्राकृतिक वातावरण में गिरावट आती है और जब वातावरण में गिरावट आती है, तब आजीविका में कमी की संभावना कम हो जाती है, पर्यावरणीय गिरावट और अधिक गरीबी उत्पन्न करती है, इस प्रकार चक्र में तेजी आती है। जबकि मूलभूत कारक जो गरीबी पैदा करते हैं, उन्हें ढांचे के बाहर रखा गया है, यह असमान विकास की भूमिका पर भी विचार नहीं करता है, जो 'प्राकृतिक' पुंजी का ह्रास करता है, और गरीबी के अलावा अन्य कारकों द्वारा गति में निर्धारित 'प्राकृतिक पुंजी' की पहल से ही निम्न गुणवत्ता पर गरीबों के कृत्रिम रूप से बढ़ा चढ़ाकर रखे प्रभाव का मुद्दा सामने लाता है।

बोध प्रभन II

1) सतत विकास क्या है?

....

....

....

....

....

....

8.5 सारांश

इस इकाई में, हमने पर्यावरण का अर्थ और पर्यावरण और विकास के बीच संबंधों पर चर्चा करी है। हमने प्रतिष्ठित दृष्टिकोण और सतत विकास दृष्टिकोण के रूप में पर्यावरणीय दृष्टिकोण का विश्लेषण किया है। इस भाग में, अर्थ आवश्यकताओं, नीति उद्देश्यों, रणनीति और स्थायी विकास की आलोचना पर भी चर्चा होगी।

8.6 शब्दावली

जैविक : जीवों की दुनिया उदाहरण : पौधे और जानवर

अजैविक : निर्जीव तत्त्वों की दुनिया उदाहरण : भूमि

8.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- सचनईबर्ग, ए (1980) द इंवायरमेंटः फराम सरपल्स टु स्कार्सीटी न्यूयॉर्क : ऑक्स फोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस
- कैटोन जे आर, डब्ल्यू. आर. डुनलप आर.ई. (1978) इंवायरमेंटर सोशलॉजीः ए न्यु पैराडीगम द अमेरिकन सोशियोलॉजिस्ट, 41–49.

8.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न I

1. फ्रेंच शब्द "एनवाइनर" का अर्थ "पड़ोस" है। दूसरे शब्दों में, जगह, लोगों, चीजों और प्रकृति और परिवेश और जीवित जीव को पर्यावरण कहा जाता है।

बोध प्रश्न II

1. 1992 में रियोज डी जेनेरियों और ब्राजील में पर्यावरण और विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (यु एन सी ई डी) में विश्व नेताओं द्वारा एजेंडा 21 की घोषणा की। इसका उद्देश्य वैश्विक स्थायी विकास और पर्यावरणीय क्षति, गरीबी बीमारी से निपटने के लिए साझा हितों आपसी जरूरतों और साझा जिम्मेदारियों पर वैश्विक सहयोग के माध्यम से कार्य करना है।

बोध प्रश्न III

1. सतत विकास का मतलब पर्यावरण को नुकसान पहुँचाए बिना विकास होना चाहिए और वर्तमान में विकास भविष्य की पीढ़ी की जरूरतों को शामिल नहीं करना चाहिए।

संदर्भ (References)

- बुटेल, एफ.एच. (1987). न्यु डायरेक्शनस इन इनवायरमेंटर सोशियोलॉजिएनवल रिव्यु ऑफ सोशियोलॉजी, 13(1), 465–488.
- बुटेल, एफ, एच. (1997) सोशल इंस्टीट्यूशन एण्ड एनवायरमेंटर चेन्ज द इंटरनेशनल हैंडबुक ऑफ इनवायरमेंटल सोशियोलॉजी, 2
- कैटोन जे.आर, डब्यु.आर.एण्ड डुनलेप, आर.ई. (1980) ए न्यु इकोलॉजिकल पैराडग्मि फॉर पोस्टर एज्युबर्नट सोशलॉजी, अमेरिकन बिहेवियरल नाइंटिस्ट, 24(1), 15–47
- टुनलेप, आर.ई. एण्ड कैटोन डब्ल्यु.आर. (1994) स्ट्रगलिंग विथ ह्यूमन एजमशिलजिमः द राईज, डिकलाईन एण्ड रिविटलाइजेशन ऑफ इनवायरमेंटर सोशोलॉजी। द अमेरिकन सोशोलाजिस्ट, 25(1) 5–30.
- सचनाईबर्ग, ए (1975) सोशल सिंथेसेस ऑफ द सोसाईटीयल इनवायरमेंटर डेलेक्कीवः द रोल ऑफ डीस्टीब्युशनल इमपैक्ट सोशल साइंस क्वाटरली 5–20.
- अगवाल, अनील, 1992 "वाट इज़ सस्टेनेबल डवलपमेंट", डाऊन टु अर्थ, जून 15:50–51.
- फिशल, डब्ल्यु.एुफ. 1997 डवलपमेंट एण्ड रजिस्टेंस इन द नर्मदा वेली" इन फिशर डब्ल्यु एफ. (संपादक) टुवर्डस संस्टेनेबल डवलपमेंट स्टगलिंग ऑवर इंडियाज नर्मदा रीवर, रावत पब्लिकेशन नई दिल्ली
- सलुखे, एस, ए 2003, द कॉस्पेट ऑफ सस्टेनेबल डवलपमेंट : रूट, कोनोटेशन एण्ड क्रिटीकल इवेलुएशन, "सोशल चेंज वाल्युम. 33 No. 1, pp 67.80।

इकाई 9 नारीवादी परिप्रेक्ष्य*

इकाई की रूपरेखा

9.0 उद्देश्य

9.1 प्रस्तावना

9.2 1970 के दशक : विकास में नारियों की भूमिका और नारी तथा विकास के दृष्टिकोण का उदय

9.3 1980 का दशकः जेंडर व विकास की अवधारणा तथा मोजर का मॉडल

9.4 नवउदारवाद और उत्तर उपनिवेशवादी नारीवाद

9.5 इकोफेमिनिज्म : विकास की एक नारीवादी अलोचना

9.6 आर्थिक नारीवाद : विकास के विचार में 'दायित्व' की अनुपस्थिति

9.7 विकास में महिलाओं के स्थान का मापन

9.7.1 मानव विकास सूचकांक

9.7.2 लिंग संबंधी मानव विकास सूचकांक

9.7.3 लैंगिक सशक्तीकरण उपाय

9.8 विकास में महिलाओं को एकीकृत करने का दृष्टिकोण

9.8.1 लोक – कल्याणकारी दृष्टिकोण

9.8.2 समानता का दृष्टिकोण

9.8.3 निर्धनतारोधी दृष्टिकोण

9.8.4 दक्षता दृष्टिकोण

9.8.5 सशक्तीकरण दृष्टिकोण

9.9 सारांश

9.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

9.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

9.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपके लिए संभव होगा :–

- विकास के विमर्श के साथ महिलाओं की विकसित पारस्परिक क्रिया को समझना;
- विकास के विशेष संदर्भ में विभिन्न नारीवादियों और उनके कार्यों का विवरण देना;
- विकास के विमर्श में महिलाओं का स्थान निर्धारण करने वाले विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोणों का विस्तारपूर्वक वर्णन करना;
- महिलाओं के विकास को मापने के लिए वैश्विक सूचकांक पर चर्चा करना; और
- विकास की राजनीति की नारीवादी आलोचना की व्याख्या करना।

*गीतांजली अत्री द्वारा लिखित।

9.1 प्रस्तावना

विश्व विकास रिपोर्ट, 2012, विकास के मूल उद्देश्य के रूप में लैंगिक समानता को परिभाषित करता है। इसमें बताया गया है कि, ''विकास का अर्थ है, गरीबी को कम करना, न्याय तक बेहतर पहुंच होने के साथ–साथ पुरुषों और महिलाओं के हितों के बीच में कम अंतराल होना चाहिए''। इस प्रकार महिलाएं सतत विकास की अभिन्न अंग हैं। फिर भी, वास्तविकता बिल्कुल अलग है। विश्व स्तर पर, भले ही शिक्षा, स्वास्थ्य, अधिकार और रोजगार के क्षेत्र में महिलाओं की प्रगति में सुधार हुआ है। इस प्रगति की दर समान रूप से नहीं विस्तारित है। बदलावों का सभी महिलाओं पर समान रूप से प्रभाव नहीं पड़ा है। विकसित देशों की तुलना में कम विकसित देशों की महिलाएँ विकास वर्णक्रम के निचले छोर पर रहती हैं।

1950 और 60 के दशक के उत्तरार्ध में, महिलाओं से संबंधित मुद्दों को केवल सामान्य मानव अधिकारों के एक भाग के रूप में संबोधित किया गया था। इस प्रकार, उनके समग्र विकास पर बहुत विशेष ध्यान नहीं दिया जा सका। एक तरफ, आर्थिक प्रक्रिया में महिलाओं के योगदान को स्वीकार नहीं किया गया। और दूसरी ओर, उनके पास अभी भी राजनीतिक और सामाजिक शक्तियों का अभाव था। हालांकि, 1970 के दशक तक अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य में परिस्थितियाँ बदल गईं। यह माना गया कि विकास की नीतियों का महिलाओं पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। इस प्रसंग में अनेक नारीवादी कार्यकर्ता और विचारकों के प्रयास धन्यवाद के पात्र है। यह मान्यता नारीवाद की दूसरी लहर के दौरान आई। विभिन्न नारीवादियों ने विकास के मुद्दे को एक एकीकृत दृष्टिकोण अंगीकार करते हुये अर्थशास्त्र, पारिस्थितिकी, उत्पादक मॉडल, पितृसत्ता और उपनिवेशवाद के माध्यम से संबोधित किया।

9.2 1970 का दशक : विकास में महिलाओं का योगदान तथा महिला और विकास दृष्टिकोण का उदय

लिंग और विकास के प्रतिच्छेदन को पहली बार डेनमार्क की एक नारीवादी एस्टर बोसेरुप ने 1970 में अपनी पुस्तक "वुमनेस् रोल इन इकोनॉमिक डेवलपमेंट" में संबोधित किया था। अफ्रीका के उनके अनुभवजन्य शोध के आधार पर, उन्होंने 1945 के बाद के पश्चिमी विकास जो कि महिलाओं के प्रति बेरूखी वाला था, इसकी आलोचना की। उनके द्वारा अवलोकन किए गए विकास मॉडल में, महिलाओं को केवल निष्क्रिय लाभार्थियों के रूप में शामिल किया गया था यथा गृहिणियों के रूप में या माताओं के रूप में। मॉडल ने पुरुषों को कृपापात्र बनाते हुये परिवार के पालनकर्त्ता के रूप में पसंद किया तथा कृषि व खाद्य उत्पादन में महिलाओं के योगदान को पूरी तरह से नकार दिया। बोसरूप और उनके समकालीनों द्वारा किए गए इस तरह के टिप्पणियों को संयुक्त राष्ट्र द्वारा मान्यता दी गई थी।

संयुक्त राष्ट्र ने 1975 में मेक्सिको में महिलाओं पर एक विश्व सम्मेलन का आयोजन किया और अगले दशक को 'महिलाओं का दशक' घोषित किया। इसका उद्देश्य विकास के विमर्श में महिलाओं के बहिष्कार का खंडन करना साथ ही उनके उत्पादक और पुर्नउत्पादकता के कार्यों को राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं का हिस्सा बनाना था। इसके कारण "वूमन इन डेवलपमेंट" (डब्लयूआईडी) दृष्टिकोण की उत्पत्ति हुई। यह विकास के कार्यक्षेत्र के विभिन्न खिलाड़ियों यथा गैर सरकारी संगठनों, नीति निर्माताओं, आदि द्वारा अपनाया गया एक दृष्टिकोण था, जो कि महिलाओं की निश्क्रिय लाभार्थी के स्थिति से कार्यक्रम के लाभार्थी बनाने तथा उन्हें विकास के लिए निर्धारित फंड तक पहुंचने में मदद करें। यह दृष्टिकोण महिलाओं के

समाजीकरण को प्रभावित किया गया और इसे इस तर्क पर रखा गया कि, महिलाएं अच्छी प्रशासक और बेहतर संसाधन प्रबंधक हो सकती हैं।

सोचें और करें 1

संयुक्त राष्ट्र द्वारा 1975 से महिलाओं पर आयोजित विश्व सम्मेलनों की सूची बनाने के लिए पुस्तकों, पत्रिकाओं और ऑनलाइन स्रोतों के माध्यम से अन्वेषण करें। इन सम्मेलनों के प्रमुख उद्देश्यों और परिणामों की सूची बनाने का भी प्रयास करें। यदि संभव हो, तो अपने अध्ययन केंद्र में साथी छात्रों के साथ अपनी सूची पर चर्चा करें और तुलना करें।

"वूमन इन डेवलपमेंट" (डब्लयूआईडी) संकल्पना में महिलाओं को विशेष रूप से विकास में एकीकृत करने की रणनीति विकसित करने पर ध्यान केंद्रित किया गया। इस दृष्टिकोण की विशिष्टता ने "वूमन इन डेवलपमेंट" (डब्लयूआईडी) को बड़े सामाजिक–आर्थिक ढांचे में आवश्यक बदलावों को देखने के लिए नियंत्रित किया, जिसमें वह महिलाओं के एकीकरण की मांग कर रही थी। यह अन्य सांस्कृतिक और कानूनी कारकों को संबोधित करने की अपनी अक्षमता के साथ–साथ मुख्यधारा के विकास में महिलाओं की असमान स्थिति के कारण, "वूमन इन डेवलपमेंट" (डब्लयूआईडी) दृष्टिकोण की सबसे बड़ी कमी बन गई।

"वूमन इन डेवलपमेंट" (डब्लयूआईडी) दृष्टिकोण में यह सीमा 1970 के दशक के उत्तरार्ध तक एक अन्य दृष्टिकोण के उदय का कारण बनी, जिसे 'महिला और विकास' (वूमेन एंड डेवलपमेंट) के दृष्टिकोण के रूप में जाना जाता है। इसमें एक मॉर्क्सवादी नारीवादी दृष्टिकोण का अनुसरण किया गया। घर के अंदर और बाहर महिलाओं के श्रम के महत्व पर जोर देते हुए, इस दृष्टिकोण ने तर्क दिया कि महिलाएं हमेशा महत्वपूर्ण आर्थिक सक्रियकर्त्ता रही हैं। इसके अलावा, इस दृष्टिकोण के अनुसार वास्तविक समस्या समाज के आर्थिक ढांचे के भीतर नहीं होती है बल्कि इसके वर्ग अलगाव और धन वितरण प्रक्रियाओं में होती है। इन संरचनाओं की असमानताओं को चुनौती देने के लिए, विकास में महिलाओं के उत्पादक और पुर्नउत्पादकता के योगदान को पहचानना महत्वपूर्ण था। हालांकि, पुरुषों और महिलाओं के बीच सामाजिक संबंधों और विकास पर उनके प्रभाव को संबोधित करने के लिए यह दृष्टिकोण भी अपर्याप्त प्रतीत होने लगा था।

1. अपनी प्रगति की जाँच करें

1. उस नारीवादी तथा उसके काम का विवरण दें जिन्होंने पहली बार महिलाओं के दृष्टिकोण से 'विकास' को संबोधित किया था।

   ....

2. महिलाओं पर पहला विश्व सम्मेलन कब और कहाँ आयोजित किया गया था और किसके द्वारा किया गया था?

   ....

3. इस सम्मेलन के मुख्य उद्देश्य और परिणाम क्या थे?

   ....

   ....

4. विकास के दृष्टिकोण में महिलाएँ क्या थीं और इसकी कमियाँ क्या थीं?

....

....

5. महिला और विकास दृष्टिकोण क्या था और इसकी सीमाएँ क्या थीं?

....

9.3 1980 का दशकः लैंगिक एवं विकास (जेंडर एंड डेवलपमेंट) (जीएडी) दृष्टिकोण तथा मोजर का मॉडल

1980 के दशक को नारीवाद की तीसरी लहर के उदय से चिह्नित किया गया। लैटिन अमेरिकी और अन्य विकासशील देशों में महिलाओं को अभी भी पूर्ण नागरिकता प्राप्त नहीं थी और उन्हें महत्वपूर्ण सामाजिक–आर्थिक विषय के रूप में नहीं माना जाता था। अभी भी पुरुषों के वेतनभोगी श्रम और महिलाओं के गैर–मान्यता प्राप्त उत्पादक और प्रजनन श्रम के बीच एक अंतर मौजूद था। इस अंतर की मान्यता के कारण विकास में महिलाओं को देखने के लिए एक और दृष्टिकोण का उदय हुआ, जिसे 'जेंडर एंड डेवलपमेंट' (जीएडी) दृष्टिकोण कहा जाता है। यह समाजवादी नारीवादी विचार से प्रभावित था। यह महिलाओं पर विशेष रूप से केन्द्रित नहीं रहा तथा विकास के प्रभाव को महिलाओं और पुरुषों दोनों पर देखा व समझा गया। इसने यह सुनिश्चित करने की कोशिश की कि दोनों की विकास नीतियों में समान भागीदारी हो और दोनों ही समान रूप से लाभान्वित हों। "डब्लयूआईडी" तथा "डब्लयूएडी" दृष्टिकोण के विपरीत इस दृष्टिकोण ने विकास में महिलाओं की भागीदारी को मान्यता प्रदान की लेकिन भूमिकाओं और जिम्मेदारियों के लिंग–वितरण के रूप में महिलाओं को कोई लाभ नहीं हुआ और अंततः उनके हित के लिए हानिकारक रहा।

यह दृष्टिकोण, समाज में प्रचलित सामाजिक व लैंगिक संबंधों में बदलाव तथा विकास से जुडा हुआ था, निजी क्षेत्रों तथा परिवारों में महिलाओं का उत्पीड़न भी इस दृष्टिकोण में प्रमुखता से शामिल था, इस दृष्टिकोण के माध्यम से महिलाओं के साथ हिंसा को संबोधित करने के लिए विकासशील कार्यक्रमों पर ध्यान केंद्रित किया गया। इसने पुरुषों और महिलाओं के बीच श्रम विभाजन को संबोधित करने के लिए परियोजनाओं को विकसित करने की भी मांग की और उनके बीच संसाधनों के उपयोग और नियंत्रण से संबंधित मुद्दों को भी संबोधित किया। इसके पीछे तर्क यह रहता है – जिस तरह से इन भूमिकाओं का विश्लेषण किया जाता है और मापा जाता है, वह इस बात को करता है एक विकास परियोजना के भीतर प्राथमिकता क्या बन जाती है। उदाहरण के लिएः भले ही शिशु देखभाल का प्रावधान महिलाओं के लिए विकास परियोजना के लाभ को बढ़ाने के लिए एक महत्वपूर्ण उपाय है मगर हो सकता है कि यह पुरुष योजनाकारों द्वारा डिजाइन की गई परियोजना में महत्वपूर्ण के रूप से नहीं शामिल नहीं हो।

महिलाओं की उत्पादक और प्रजनन भूमिकाओं पर जोर देने में, जीएडी दृष्टिकोण ने कहा कि राज्य को बच्चों के वहन, देखभाल और पोषण के रूप में महिलाओं द्वारा निभाई गई सामाजिक प्रजनन भूमिका का समर्थन करने की जिम्मेदारी लेनी चाहिए। विकास के विमर्श के एक भाग के रूप में महिलाओं के सामाजिक हित पर इस तरह का ध्यान, पहले के उन दो दृष्टिकोणों की तुलना में एक बदलाव था, जो लैंगिक और विकास के बीच अन्तक्रिया में विशुद्ध रूप से आर्थिक थे। पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए समान विकास सुनिश्चित

करने में राज्य की भूमिका को स्वीकार करते हुए, इस दृष्टिकोण ने विकास की गतिशील प्रकृति को इसकी सभी जटिलताओं के साथ, यथा राजनैतिक और सामाजिक कारकों से प्रभावित के साथ स्वीकार किया।

एक अन्य स्तर पर, महिलाओं के कानूनी अधिकारों को मजबूत करने के लिए, जीएडी दृष्टिकोण ने महिलाओं की आवश्यकता के लिए उनकों और अधिक प्रभावी तरीके से राजनीतिक स्वर में संगठित होने की वकालत की। यह 1980 के दशक में विकास के सिद्धांत में परिवर्तन के अनुरूप था, जब वैश्वीकरण और उदारीकरण के उद्भव के साथ, विकास के केंद्रीय रूप में रणनीतिक जरूरतों की स्थापना के लिए बुनियादी जरूरतों के विस्तार से विमर्श स्थानांतरित हो गया। इसने एक अन्य नारीवादी कैरोलिन मोजर द्वारा विकसित विकास कार्यक्रमों के लिए एक विभेदित लिंग योजना मॉडल का आधार तैयार किया। उनके प्रशंसित शोधपत्र "जेंडर प्लानिंग इन द थर्ड वर्ल्डः मीटिंग प्रैक्टिकल एंड स्ट्रैटेजिक जेंडर नीड्स" 'शीर्षक में उन्होंने महिलाओं की व्यावहारिक और रणनीतिक जरूरतों के बीच अंतर किया। व्यावहारिक आवश्यकताओं का अर्थ है महिलाओं की भोजन, आश्रय जैसी मूलभूत आवश्यकताओं तक पहुँच, सामरिक जरूरतों ने समाज की लिंग व्यवस्था के भीतर उनकी अधीनता पर सवाल उठाया। इसमें समान काम के लिए समान वेतन, उनकी कामुकता पर नियंत्रण, प्रजनन अधिकार, लिंग आधारित हिंसा से सुरक्षा जैसी जरूरतों को शामिल किया गया था। मोजर के मॉडल को संयुक्त राष्ट्र और विश्व बैंक जैसी केन्द्रीय एजेंसियों द्वारा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त हुई। यह अभी भी विकास की योजना के लिए हेगामोनिक कैनन यानि नायकत्व का एक अभिन्न अंग बना हुआ है।

साचें और करें 2

अपने परिवार और पड़ोस की कम से कम 10 महिलाओं से बात करें और मोजर के मॉडल के आधार पर उनकी बुनियादी और सामरिक जरूरतों की एक सूची बनाएं और अन्य छात्रों के सामने अपने अध्ययन केंद्र में अपनी टिप्पणियों और निष्कर्षों पर प्रस्तुति दें।

बोध प्रश्न 2

1. लैंगिक एवं विकास के दृष्टिकोण की व्याख्या करें।

   ....

   ....

   ....

2. मोजर का महिलाओं की जरूरतों का मॉडल क्या था?

   ....

9.4 नवउदारवाद तथा उत्तर औपनिवेशिक नारीवाद

नवउदारवाद के तहत, महिलाएं अंतोगत्वा विकास के विषय के रूप में दिखाई दीं, लेकिन सामाजिक नीतियों के अंर्तगत उन्हें अभी भी मान्यता से अलग ही रखा गया है। श्रम बाजार में, महिलाओं को विषम परिस्थितियों और मजदूरी में भेदभाव का सामना करना पड़ा। घरेलू मोर्चों पर, परिवार को खाना खिलाना, जो पारंपरिक रूप से महिलाओं का काम था, क्रमशः मुश्किल होता गया। यह विकास नीतियों में शामिल होने के बावजूद सार्वजनिक और निजी

दोनों क्षेत्रों में महिलाओं के खिलाफ पितृसत्तात्मक भेदभाव के नए रूपों की ओर संकेत करता है। इसके कारण महिलाओं की गरीबी तथा नारीवादीकरण के क्षरण का अनैतिक दुष्चक्र शुरू हो गया। नतीजतन, 1985 में नैरोबी में महिलाओं पर दूसरे विश्व सम्मेलन में, एक महिला संघ "डेवलपमेंट ऑल्टरनेटिवस् विद वूमेन फॉर ए न्यू एरा" (DAWN) ने आर्थिक विकास के रूप विकास की संकीर्ण परिभाषा को खारिज कर दिया। इसके स्थान पर, यह तर्क दिया कि महिलाओं के जीवन स्तर में संकट का कारण उपभोक्तावाद और ऋणग्रस्तता थे।

DAWN ने विकास को ''सामाजिक रूप से जिम्मेदार प्रबंधन और संसाधनों के उपयोग, लैंगिक अधीनता और सामाजिक असमानता के उन्मूलन और संगठनात्मक पुनर्गठन जो इनके विशय में ला सकता है'' के रूप में पुनर्परिभाषित किया। इसने दृडता से कहा कि आर्थिक विकास को व्यापक मानव विकास को प्राप्त करने के लिए एक उपकरण के रूप में देखा जाना चाहिए न कि इसके विपरीत। उपनिवेशवाद–विरोधी नारीवादियों ने इसलिए उपनिवेशवाद के सतत रूप में विकास नीतियों की आलोचना की। उदाहरण के लिए: भारतीय नारीवादी चंद्रा तलपड़े मोहंती ने अपने 1997 के अध्ययन में, 'फेमिनिस्ट जीनोलॉजिस्, कॉलोनियल लीगेसीस्, डेमोक्रेटिक फ्यूचर्स' तर्क दिया है कि महिलाओं की पहचान के लिये महत्वपूर्ण कारकों जैसे वर्ग और प्रजतियता की अनदेखी करते हुये एक एकल श्रेणी में 'महिलाओं' को समरूप बनाना महिलाओं को उनके लिंग की श्रेणी में कमतर बना देता है, जातीयता, नृवंशविज्ञान, सार्व भौमिकतावादी नारीवाद पश्चिमी मानकों को अपने परिवार प्रणालियों, कानूनी और आर्थिक मूल्यांकन जैसे दक्षिण की सांस्कृतिक संरचनाओं को देखने के लिए संदर्भ बिंदुओं के रूप में लेता है। इस प्रकार, यह 'अल्पविकसित' या 'विकासशील' प्रतीत होता है। मोहंती के अनुसार, इसका उत्तर पार सांस्कृतिक नारीवाद है, जो नारीवादी एकजुटता पर आधारित है, जो न तो उपनिवेशवादी है और न ही नस्लवादी है। इसी तरह, उपनिवेशवाद के बाद की नारीवादी गायत्री स्पीवॉक, अपने लेखन 'ए क्रिटिक्स ऑफ पोस्ट–कॉलोनियल रीजन' (1995) में साम्राज्यवाद के सभ्यता मिशन के नव–औपनिवेशिक उत्तराधिकारी के रूप में विकास को परिभाषित करती है।

बोध प्रश्न 3

1. DAWN के अनुसार, विकास की परिभाषा क्या है?

   ....

   ....

2. नारीवादी चंद्रा तलपड़े मोहंती द्वारा की गयी विकास की आलोचना की समीक्षा करें।

9.5 पारस्थिकी नारीवाद (इकोफेमिनिज्म) : विकास की एक नारीवादी आलोचना

विभिन्न नारीवादी आंदोलनों में, एक और सिरा जो महिलाओं और विकास के बीच के संबंधों को असंतोषजनक मानता है, वह है इकोफेमिनिज्म। विचार के इस विचारधारा के अनुसार, मानव सभ्यता के इतिहास में महिलाओं और प्रकृति के शोषण या उत्पीड़न के बीच कई सांस्कृतिक और प्रतीकात्मक समानताएं हैं। 1970 के दशक में इकोफेमिनिज्म पितृसत्तात्मक तर्क के प्रति–संस्कृति के रूप में उभरा था कि महिलाओं और पुरुषों के बीच द्वंद्ववाद अक्सर भावना और कारण, प्रकृति और सभ्यता और यहां तक कि परंपरा और आधुनिकता के बीच अंतर से मेल खाता है। इस तरह की तुलना को, संयोजन के पूर्वाद्ध में इकोफैमिनिस्ट ने अस्वीकृत कर दिया। दूसरे शब्दों में, इसने महिलाओं और प्रकृति के बीच अपमानजनक जुड़ाव की निंदा

की, जिसे उन्होंने पितृसत्तात्मक कहा। सिर्फ पितृसत्ता ही नहीं, इस आंदोलन ने कम्युनिस्ट पार्टियों की आलोचना भी की, जिन्होंने पितृसत्तात्मक विरोधी होने के बावजूद इस तुलना को चिंता का विषय नहीं बनाया।

विकास की नारीवादी समालोचना इकोफेमिनिज्म में दो अलग–अलग प्रकारो के बीच बहस में उभरती है, अर्थात तत्ववाद और उसकी अस्वीकृति। तत्ववाद के समर्थकों का तर्क है कि स्त्रियोचित गुणों के कारण, महिलाएं पुरुषों की तुलना में प्रकृति के अधिक निकट हैं। तत्ववाद के अनुसार, प्रकृति के संरक्षण के लिए, महिलाएं आशा की किरण के रूप में उभरती हैं। कारण सरल है – अपने मातृ प्रवृत्ति की वजह से महिलाऐं देखभाल की नैतिकता और जीवित प्राणियों की रक्षा करने की भावना रखती है। लेकिन फिर मारिया मिज, बीना अग्रवाल और वंदना शिवा जैसे इकोफैमिनिस्टों का एक वर्ग तत्ववाद को अस्वीकार करता है। वे इस बात से सहमत हैं कि महिलाओं की प्रकृति के साथ अधिक अनुकूलता है लेकिन इसका कारण प्रकृति में ही नहीं है, बल्कि एक संस्कृति में लिंग का निर्माण सामाजिक और ऐतिहासिक रूप से किया जाता है। उनके अनुसार लिंग पर आधारित पर्यावरण जागरूकता, श्रम और सामाजिक भूमिका निर्माण का विभाजन है। उदाहरण के लिए: अधिकांश समाजों में महिलाएं पारंपरिक रूप से घरेलू कामों को करती रही हैं, जिनमें जलाऊ लकड़ी, पानी का संग्रह, पशुओं, बागों का संग्रह शामिल है। यह उन्हें पुरुषों की तुलना में प्रकृति से अधिक सुगम्य करता है, जिससे उनकी प्रकृति के साथ धीरे–धीरे निकटता होती है।

अपने उत्तर–औपनिवेशिक समकक्षों की तरह, गैर तत्ववादी भी विकास को पश्चिमी उपनिवेश की रणनीति के रूप में देखते हैं, इसकी जड़ें महिलाओं और प्रकृति पर वर्चस्व में हैं। वंदना शिवा का तर्क है कि बीसवीं शताब्दी के पिछले पांच दशकों को वह 'बुरी तरह से निर्देशित विकास' के रूप में देखती है। इसमें, वह मानती है कि विकास के नाम पर, दक्षिण में अस्थिर पश्चिमी औद्योगिक प्रतिमान निर्यात किया गया है। जर्मन पारिस्थितिकीविज्ञानी, मारिया मिज के अनुसार, एक तरह के पर्यावरणीय रंगभेद में, पश्चिमी बहुराष्ट्रीय कंपनियां, जो आर्थिक रूप से प्रभुत्वशाली देशों की सरकारों द्वारा समर्थित हैं, तीसरी दुनिया को पर्यावरणीय लागतों का निर्यात करके उत्तर के आर्थिक विकास को संरक्षित करने का प्रयास करती हैं।

मिज का तर्क है कि प्रकृति के अधीन होने और राज्यों के उपनिवेशीकरण के बाद, महिलाओं के शरीर साम्राज्यवादी शक्तियों के लिए एक तीसरा उपनिवेश बन गए हैं। वह विकास के विकल्पों को देखती है। वे विकल्प जो महिलाओं के पर्यावरण संबंधी जागरूकता को पसंद आये। विकास के उनके वैकल्पिक मॉडल के अनुसार, प्रजनन गतिविधियों को केवल महिलाओं और पुरुषों द्वारा साझा नहीं किया जाएगा वरन् इसमें प्रकृति जैसे अन्य हितधारक भी शामिल होंगे, जिन्हें विकास के विमर्श में शामिल नहीं किया गया था। वह आगे प्रकृति और श्रम के बीच की दुश्मनी पर काबू पाने का सुझाव देती है तथा विकास के विमर्श में महिलाओं के स्थान को पुर्नप्राप्त करने के लिए वैश्विक बाजारों पर स्थानीय और क्षेत्रीय अर्थव्यवस्थाओं को प्राथमिकता देती हैं।

बोध प्रश्न 4

1. पारिस्थितिकी नारीवाद (इकोफेमिनिज्म) के अंतर्गत क्या तर्क है, जिससे विकास की आलोचना उत्पन्न हुयी ?

   ....

   ....

2. मारिया मिज द्वारा सुझाए गए विकास का विकल्प क्या है?

....

....

चित्र 1. वीमेन्स् लिबरेशन मार्च, सिडनी,1972

9.6 आर्थिक विचारः विकास के विमर्श में 'देखभाल' की अनुपस्थिति

मारिया मिज की तरह, नारीवाद अर्थशास्त्री भी एक मान्यता के साथ कहतें हैं कि घरों में अवैतनिक कार्य आर्थिक मूल्य उत्पन्न करते हैं। बाजार सभी पुरुषों और महिलाओं के लिए समान रूप से काम करने की दिशा में निष्पक्षता से काम करते हैं उस सामान्य परिकल्पना का समर्थन करने की बजाय नारीवादी अर्थशास्त्री पूछते हैं कि अर्थशास्त्र में किन मूल्यों का निर्माण हो रहा है और किसके लिए। वे बाजार केंद्रित अर्थशास्त्र से आगे बढतें हैं और तर्क देते हैं कि यह केवल उन बाजारों में नहीं है जहाँ आर्थिक गतिविधियां होती हैं यह निजी क्षेत्रों या घरों में भी घटित हो सकता है। इस प्रकार, वे दो काम करने का लक्ष्य रखते हैं – सबसे पहले, घरेलू काम के आर्थिक मूल्य को राष्ट्रीय आर्थिक स्तर पर दृष्टिगत होना चाहिए। और दूसरा, महिलाओं के अति–शोषण के बारे में जागरूकता बढ़ाना, जो अभी भी घरेलू मोर्चे पर सक्रिय श्रम करते हुए, वेत्तानिक आर्थिक क्षेत्रों में भी काम करती हैं। इस प्रकार, उनका उद्देश्य निजी क्षेत्रों में श्रम के वितरण में समानता का निर्माण करना है।

इसका विकास की अवधारणा पर सीधा असर पड़ता है। यह महिलाओं और उसके श्रम की चिंताओं को दूर करने में वृहत्–नीतियों तथा सूक्ष्म अर्थशास्त्र दोनों की विफलता को उजागर करता है। विकास के विमर्श में आर्थिक पक्ष के अभाव के कारण, इसने दायित्व के अर्थशास्त्र को पूरी तरह से बाहर कर दिया है, जो हमेशा महिलाओं के हिस्से में आता था और इसमें बच्चों के पोषण और बुजुर्गों की देखभाल करने की प्रथाओं को गरिमापूर्ण जीवन जीने के लिए महत्वपूर्ण मानवीय जरूरतों के रूप में शामिल किया गया था साथ ही नारीवादी अर्थशास्त्री उल्रिक नॉब्लोच अपने शोधपत्र 'एथिक्स ऑफ फेमिनिस्ट इकोनॉमिक्स' में, अर्थशास्त्र के लिए एक वैकल्पिक नैतिकता का प्रस्ताव करती है जो श्रम के संदर्भ में दक्षता की कसौटी से आगे जाती है और उस अर्थ पर सवाल उठाती है जिसमें प्रत्येक आर्थिक गतिविधि का आकार होता है ताकि विकास के मूलभूत उद्देश्यों पर प्रश्न किया जा सके। उनके अनुसार, विकास अर्थशास्त्र के एक उच्च छोर का साधन है यह विशुद्ध आर्थिक विज्ञान से परे एक दार्शनिक प्रश्न है।

इस प्रस्ताव के आधार पर, दायित्व का अर्थशास्त्र व्यैक्तिकरण के विरोध में, सार्वजनिक नीति की मांग करता है। तात्पर्य यह है कि राज्य को समाज की देखभाल की आवश्यकता के अनुरूप कई प्रदाताओं के साथ व्यापक व्यवस्था करनी चाहिए। यह न केवल सुझाव देता है कि राजनीतिक रणनीतियों को उनके केन्द्रीय देखभाल का काम करना चाहिए साथ ही यह भी कि इस दिशा में सामुदायिक कार्रवाई को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। विकास को एक दार्शनिक अवधारणा के रूप में देखते हुए, यह आगे मांग करता है कि समय–उपयोग को और अधिक लोकतांत्रिक बनाया जाए, ताकि महिलाओं को भी अपने अवकाश का आनंद मिल सके।

बोध प्रश्न 5

1. आर्थिक नारीवादियों की सामान्य धारणा क्या है जिसे वे विकास के साथ देखतें हैं?

   ....

   ....

2. महिलाओं को विकास के दायरे में लाने के पीछे आर्थिक नारीवादियों के दो उद्देश्य क्या हैं?

   ....

9.7 विकास में महिलाओं का स्थान मापन

1990 के दशक तक, प्रति व्यक्ति आय के अतिरिक्त सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP), सकल घरेलू उत्पाद (GDP) को किसी भी राष्ट्र की प्रगति को मापने के लिए उपयोग किया जाता था। इन सबको साथ लेकर अर्थव्यवस्था के प्रदर्शन को प्रतिबिंबित किया जाता था, साथ ही अर्थव्यवस्थाओं के भीतर आय वितरण को भी देखा जाता था। लेकिन, अर्थव्यवस्था में लोगों की वास्तविक भलाई को समझने में इन आंकड़ों का उपयोग नहीं था। इन अर्थव्यवस्थाओं के निर्माण से संबंधित लोगों को स्वास्थ्य सुविधाओं, शिक्षा, स्वच्छता के प्रावधान की आवश्यकता की समझ नहीं थी। इस प्रकार, मानव विकास सूचकांक (HDI), लिंग–संबंधी मानव विकास सूचकांक (GDI) और लिंग सशक्तीकरण उपाय (GEM) के विकास के लिए नए उपायों की आवश्यकता महसूस की गई।

9.7.1 मानव विकास सूची

यह विकास के तीन महत्वपूर्ण संकेतकों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी) द्वारा विकसित किया गया था – स्वास्थ्य (लोगों की जीवन प्रत्याशा को मापकर), ज्ञान (साक्षरता के स्तर को मापकर), और धन (सकल घरेलू उत्पाद से संबंधित किसी दी गई अर्थव्यवस्था की अपने लोगों की क्रय शक्ति के साथ)। इन तीन संकेतकों के संयोजन का उपयोग दुनिया के विभिन्न हिस्सों में गरीबी, अभाव और विकास की तुलना करने के लिए किया जाता है। 2019 की मानव विकास रिपोर्ट के अनुसार, नॉर्वे दुनिया का सबसे अधिक मानव विकास सूचकांक (HDI),वाला देश है, इसके बाद क्रमशः स्विट्जरलैंड और आयरलैंड हैं। भारत अपने एचडीआई के अवरोही क्रम में देशों की सूची में 129 वें स्थान पर है। एचडीआई पर तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य के लिए नीचे दी गई तालिका को देखें।

देश	2017 क्रम	2018 क्रम
भारत	**130**	**129**
ब्राजील	79	79
चीन	86	85
रूस	49	49
दक्षिण अफ्रीका	113	113
पाकिस्तान	150	152
अफगानिस्तान	168	170
श्रीलंका	76	71
भूटान	134	134
नेपाल	149	147
बंगलादेश	136	135
मालदीव	101	104

9.7.2 लैंगिक संबंधी मानव विकास सूचकांक:

यूएनडीपी ने वर्ष 1995 की अपनी मानव विकास रिपोर्ट में जीडीआई की शुरुआत की। इसका उपयोग मानव विकास सूचकांक के ऊपर उल्लेखित तीन प्रमुख संकेतकों में लिंग अंतराल को देखने के लिए किया जाता है। मानव गरीबी के विभिन्न आयामों के संबंध में महिलाओं और पुरुषों के बीच के अंतर को भी मापा जाता है। इन उपायों का उपयोग करने में यूएनडीपी लैंगिक असमानता के लिए मानव विकास सूचकांक को समायोजित करने का प्रयास करता है। जीडीआई 0.000–1.000 के पैमाने पर है, जिसमें 0.000 सबसे कम जीडीपी है, जबकि 1.000 सबसे अधिक है। उच्चतम जीडीआई वाला देश स्वीडन है जिसका जी.डी.आई 0.997 है। अगला देश नॉर्वे और संयुक्त राज्य अमेरिका हैं जिनका जीडीआई 0.993 है। जिन अन्य देशों ने उच्च जीडीपी का प्रदर्शन किया है उनमें ऑस्ट्रेलिया (0.978), स्विट्जरलैंड (0.974), जर्मनी (0.964), डेनमार्क (0.97), सिंगापुर (0.985), और नीदरलैंड (0.946) शामिल हैं। स्वीडन दुनिया का लैंगिक समानता वाला रोल मॉडल है। वर्तमान में, 24 सरकारी मंत्रियों में से 12 महिलाएँ हैं। इसके अलावा, स्वीडिश संसद में लगभग आधी प्रतिनिधि महिलाएं होती हैं।

गतिविधि 3

मानव विकास सूचकांक और लिंग–संबंधी मानव विकास सूचकांक के अनुसार देशों की सूची बनाएं। दोनों सूचियों में शीर्ष तीन देशों की उच्च निष्पक्षता के कारणों के लिए पुस्तकों, पत्रिकाओं, समाचार पत्रों और ऑनलाइन स्रोतों के माध्यम से पता लगाने का प्रयास करें। अध्ययन केंद्र में अपने साथी छात्रों के सामने प्रस्तुति दें।

9.7.3 लैंगिक सशक्तिकरण मूल्यांकन:

GDI (जेंडर–रिलेटेड ह्यूमन डेंवलपमेंट इंडेक्स) के विपरीत, जो HDI (ह्यूमन डेंवलपमेंट इंडेक्स) के प्रमुख संकेतकों में लैंगिक असमानता का सूचक है, GEM (जेंडर इम्पॉवरमेंट मेंसर) आर्थिक और राजनीतिक निर्णय लेने और भागीदारी के प्रमुख क्षेत्रों में लैंगिक असमानता को मापता है। इसे भी 1995 में UNDP द्वारा GDI के साथ विकसित किया गया था। GEM की रेंज भी .000 (सबसे कम) से 1.000 (उच्चतम) है। नॉर्वे वैश्विक जीईएम रैंकिंग में सबसे ऊपर है, इसके बाद क्रमशः स्वीडन और डेनमार्क हैं।

बोध प्रश्न 6

1. विकास में महिलाओं के स्थान के आंकलन के लिए तीन वैश्विक सूचकांक क्या हैं?

   ....

   ....

2. मानव विकास सूचकांक के अनुसार, मानव विकास के तीन महत्वपूर्ण संकेतक क्या हैं?

   ....

   ....

3. GEM (जेंडर इम्पॉवरमेंट मेंसर) के अनुसार लिंग असमानता के प्रमुख क्षेत्र क्या है?

   ....

9.8 विकास में महिलाओं को एकीकृत करने का दृष्टिकोण

वर्षों से, महिलाओं के संबंध में विकास की चुनौतियों का समाधान करने के लिए विचारों तथा विषयों की विभिन्न धाराओं में नारीवादियों द्वारा कई दृष्टिकोण विकसित किए गए हैं। इन्हें महिलाओं की विकास नीतियों को मुख्य भाग में लाने के लिए आवश्यक उपायों को बेहतर ढंग से समझने के उद्देश्य से विकसित किया गया है। ये दृष्टिकोण प्रचलित सामाजिक–राजनीतिक और आर्थिक स्थितियों के अनुसार विकसित किया तथा अपनाया गया है।

9.8.1 कल्याणकारी दृष्टिकोण:

1970 के दशक तक विकास कार्यक्रमों में महिलाओं की आवश्यकताओं को विशेष रूप से उनकी प्रजनन भूमिकाओं के परिप्रेक्ष्य से संबोधित किया गया। नतीजतन, विकास नीतियों में भी ध्यानाकर्षण माता तथा बाल स्वास्थ्य, शिशुपालन व देखभाल तथा खाद्य पोषण पर रहा। तदन्तर, जनसंख्या वृद्धि और गरीबी के बीच संबंध की बढ़ती स्वीकृति के साथ, परिवार नियोजन या जनसंख्या नियंत्रण भी ऐसी नीतियों में प्रमुखता से शामिल होने लगा। यह धारणा थी कि विकास और आधुनिकीकरण की दिशा में उन्मुख व्यापक आर्थिक रणनीतियां धीरे–धीरे गरीबों तक पहुंचेगी और गरीब महिलाओं को भी लाभ होगा।

लेकिन यह धारणा कि अर्थव्यवस्था में समग्र सुधार के साथ या उनके पति की आर्थिक स्थितियों में वृद्धि के साथ, महिलाओं की स्थिति में सुधार होगा, अप्रत्यक्ष रूप से इस दृष्टिकोण

को नारीवादी समर्थकों द्वारा चुनौती दी गई थी, क्योंकि उन्होंने देखा कि महिलाएं अभी भी अभावों से घिरी हुई हैं। परिणामस्वरूप, महिलाएं पारंपरिक और पिछड़ेपन के साथ जुड़ी हुई थीं, जबकि उनके पुरुष समकक्ष आधुनिकता और प्रगतिशीलता की ओर अग्रसर थे। आर्थिक विकास और कल्याणकारी परियोजनाओं को पुरुषों की सहायता के लिए उनके आधुनिकीकरण परियोजना में लिया गया था, जैसे नई कृषि प्रौद्योगिकियों और दुर्घटना फसलों की शुरूआत, जिसमें से महिलाओं को बाहर रखा गया था।

9.8.2 समानता का दृष्टिकोण

इस दृष्टिकोण को नारीवादियों ने लैंगिक समानता और महिलाओं के खिलाफ भेदभाव को समाप्त करने के लिए प्रस्तावित किया था। उन्होंने विकास नीति निर्माताओं को एक तरफ महिलाओं के योगदान के अनुपात को फिर से जारी करने पर जोर दिया, दूसरी ओर ऐसी गतिविधियों से उनके हिस्से लाभ को सुनिश्चित करने पर जोर दिया। यह दृष्टिकोण महिलाओं की प्रजनन भूमिका संबंधी था जो आगे चलकर सरकार के दायित्व के अंर्तगत लाया गया। इसका मतलब यह था कि इस दृष्टिकोण के नारीवादी समर्थकों को समानता लाने के विश्वसनीय साधन के रूप में सरकारी नीतियों और कानूनी उपायों में विश्वास था। कल्याणकारी दृष्टिकोण के विपरीत, निश्पक्षता के दृष्टिकोण को इसी कारण से महिलाओं की स्थिति में बदलाव के रूप में देखा गया, अर्थात् विकास नीतियों के निष्क्रिय प्राप्तकर्ता होने से लेकर आवश्यक बदलावों के आयोजन में सक्रिय भागीदार होने तक।

9.8.3 निर्धनतारोधी दृष्टिकोण

महिलाओं की बुनियादी आवश्यकताओं को सुदृढ़ करने की प्रवृत्ति के साथ, इस दृष्टिकोण ने आय सृजन और रोजगार के संचालन के साथ महिलाओं की उत्पादक और प्रजनन भूमिकाओं के एकीकरण की वकालत की। उनकी मांग इस एकीकरण को लाने के लिए एक परिचालन रणनीति विकसित करने पर केंद्रित थी।

9.8.4 दक्षता दृष्टिकोण

यह दृष्टिकोण 1980 के दशक में अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व बैंक के संरचनात्मक समायोजन कार्यक्रमों के तहत किए गए आर्थिक सुधारों की प्रतिक्रिया के रूप में विकसित हुआ। इन सुधारों का उद्देश्य मानव संसाधनों का पूर्ण उपयोग करके उत्पादन और आर्थिक विकास को बढ़ाना है। इस प्रकार, शिक्षा और प्रशिक्षण सुधारों को प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण रणनीति बनायी गयी। इस दृष्टिकोण के समर्थकों ने लक्षित मानव संसाधन के लिंग विश्लेषण के लिए एक विषय सृजित किया। इस विमर्श का तर्काधार था – महिलाओं और पुरुषों की भूमिकाओं और जिम्मेदारियों को समझते हुये विकास के लिए रणनीतियों की योजना बनाने से प्रभावशीलता में सुधार कर सकता है और साथ ही यह सुनिश्चित करने में मदद करता है कि महिला और पुरुष दोनों राष्ट्रीय विकास में अपनी भूमिका को निभाते हैं।

यह दृष्टिकोण महिलाओं और लिंग की चिंताओं को विकास की मुख्यधारा में लाने में सफल रहा। हालांकि, ध्यान इस बात पर रहा कि महिलाएं विकास के लिए क्या कर सकती हैं परन्तु इसके विपरीत नहीं, अर्थात् महिलाओं के लिए विकास क्या कर सकता है। इस प्रकार, महिलाओं ने आर्थिक सुधारों के पतन मे नुकसान झेलने के कारण क्षति वाली स्थिति रहीं। उन्हें स्वास्थ्य और शिक्षा जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में होने वाले कुल खर्चों में सीमित करके रखा गया था। इसलिए, उन्हें अपना अधिकांश समय बीमार लोगों की देखभाल करने में लगाना पड़ता था।

9.8.5 सशक्तिकरण दृष्टिकोणः

यह दृष्टिकोण तीसरी दुनिया के नारीवादियों के साथ निकटता से जुड़ा हुआ है। यह दृष्टिकोण महिलाओं में आत्मनिर्भरता का गुण बढ़ाने के उद्देश्य से है तथा महिलाओं के लाभ के लिए सामाजिक, विधायी, नीति, कानूनी, आर्थिक और अन्य स्तरों पर परिवर्तन को प्रभावित करने के लिए भी कारगर है। इसका मुख्य उद्देश्य महिलाओं को निर्णय निर्माताओं की स्थिति में निपुण बनाना है। इसलिए बुनियादी रणनीति, जागरूकता, पीढ़ी और महिलाओं में संगठनात्मक कौशल और आत्म–सम्मान का निर्माण करना है।

बोध प्रश्न 7

1. विकास में महिलाओं को एकीकृत करने के पांच अलग–अलग तरीकों का नाम बताइए।

   ....

2. निष्पक्षता के दृष्टिकोण में मुख्य तथ्य क्या था?

   ....

   ....

3. निर्धनता–विरोधी दृष्टिकोण का मुख्य उद्देश्य बताइए।

   ....

   ....

4. दक्षता दृष्टिकोण के समर्थकों ने क्या तर्क अपनाया था?

   ....

   ....

5. सशक्तिकरण दृष्टिकोण के तहत लक्षित मुख्य लक्ष्य क्या थे?

   ....

9.9 सारांश

महिलाओं ने हमेशा सामाजिक–आर्थिक के साथ–साथ समाज के राजनीतिक विकास में प्रत्यक्ष या अदृश्य योगदान दिया है। अभी भी, विकास नीतियों, विधानों और रणनीतियों में प्रत्यक्ष लाभार्थियों के रूप में महिलाओं की हमेशा उपेक्षा होती है। इस तथ्य ने आंदोलन के विभिन्न दृश्यों में नारीवादी समर्थकों का ध्यान आकर्शित किया तथा आलोचना को आमंत्रित किया है। दूसरी ओर, नारीवादियों ने विकास के विभिन्न वैकल्पिक मॉडल सुझाए हैं जिससे महिलाओं को विकास नीतियों के मद्देनजर लाया जा सके। 1970 के दशक के आरंभ में, नारीवादियों ने महिलाओं और विकास के प्रतिच्छेदन पर काम किया तथा उनके प्रयासों के कारण, इन दोनो प्रभावित करने वाले कारकों के मध्य संवाद में तीव्रता दृष्टिगत हुयी है। हालाँकि, दुनिया भर की महिलाओं के सामाजिक–भौगोलिक स्थानों के विशय में निरपेक्ष विचार से उनके समक्ष विकास नीतियों के लाभ को समान रूप से प्रसारित करने के लिए अभी भी बहुत कुछ करने की आवश्यकता है।

9.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

बोसेरुप, एस्तेर. 1970, "विमेंस् रोल इन इकोनॉमिक इंडिया" लंदनः रूटलेज

नॉब्लोच, उल्रिक. 2010, "एथिक्स ऑफ फेमिनिस्ट इकोनॉमिक्स", लंदनः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस

मोहंती, चंद्रा तलपड़े तथा एम, जैक्वी अलेक्जेंडर. (संपा0), 1997, "फेमिनिस्ट जीनोलॉजी, कॉलोनियल लीगेसीस्, डेमोक्रेटिक फ्यूचरस्", लंदन और न्यूयॉर्कः रूटलेज

मोजर, कैरोलिन ओ.एन.,1989, "जेंडर प्लानिंग इन थर्ड वर्ल्डः मीटिंग प्रैक्टिकल एंड स्ट्रैटिजिक जेंडर नीडस्", 17 (11), पृ0, 1799–1825

9.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1. डैनिश नारीवादी एस्टर बोसेरुप ने 1970 में अपनी पुस्तक, "वुमेंस् रोल इन इकोनॉमिक डेवलपमेंट में
2. संयुक्त राष्ट्र ने 1975 में मैक्सिको में महिलाओं पर एक विश्व सम्मेलन का आयोजन किया।
3. इसका उद्देश्य विकास के विमर्श में महिलाओं के बहिष्कार को पीछे हटाना और उनके उत्पादक और पुर्नउत्पादक कार्यों को राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं का हिस्सा बनाना था। इसके कारण पद "वूमन इन डेवलपमेंट" (डब्लयूआईडी) दृष्टिकोण की उत्पत्ति हुई।
4. "वूमन इन डेवलपमेंट" (डब्लयूआईडी) विकास के कार्यक्षेत्र के विभिन्न खिलाड़ियों यथा गैर सरकारी संगठनों, नीति निर्माताओं, आदि द्वारा अपनाया गया एक दृष्टिकोण था, जो कि महिलाओं की निश्क्रिय लाभार्थी के स्थिति से कार्यक्रम के लाभार्थी बनाने तथा उन्हें विकास के लिए निर्धारित फंड तक पहुंचने में मदद करें। यह दृष्टिकोण महिलाओं के समाजीकरण पर प्रस्तुत किया गया और इसे इस तर्क पर रखा गया कि, महिलाएं अच्छी प्रशासक और बेहतर संसाधन प्रबंधक हो सकती हैं।
5. लैंगिक और विकास के "विमेंन एंड डेवलपमेंट" दृष्टिकोण ने मार्क्सवादी नारीवादी दृष्टिकोण का अनुसरण किया। घर के अंदर और बाहर महिलाओं के श्रम के महत्व पर जोर देते हुए, इस दृष्टिकोण ने तर्क दिया कि महिलाएं हमेशा महत्वपूर्ण आर्थिक सहायक रही हैं। इस दृष्टिकोण के अनुसार वास्तविक समस्या समाज की आर्थिक संरचनाओं के भीतर नहीं होती है, बल्कि इसके वर्ग अलगाव और धन वितरण प्रक्रियाओं में होती है। हालांकि, यह दृष्टिकोण पुरुषों और महिलाओं के बीच सामाजिक संबंधों और विकास पर उनके प्रभाव को संबोधित करने से कम हो गया।

बोध प्रश्न 2

1. समाजवादी नारीवादियों द्वारा प्रस्तावित "जेंडर एंड डेवलपमेंट" (जीएडी) दृष्टिकोण महिलाओं पर केन्द्रित नहीं रहा तथा महिलाओं व पुरुषों दोनों पर विकास के प्रभाव

को देखा गया। इसने यह सुनिश्चित करने की कोशिश की कि दोनों की विकास नीतियों में समान भागीदारी हो और वे समान रूप से लाभान्वित हों।

2. अपने मॉडल में मोजर ने महिलाओं की व्यावहारिक और रणनीतिक जरूरतों के बीच अंतर किया। जबकि व्यावहारिक आवश्यकताओं का अर्थ है महिलाओं की भोजन, आश्रय आदि जैसी मूलभूत आवश्यकताओं तक पहुँच, रणनीतिक जरूरतों ने समाज की लिंग व्यवस्था के भीतर उनकी अधीनता पर सवाल उठाया। इसमें समान काम के लिए समान वेतन, उनकी कामुकता पर नियंत्रण, प्रजनन अधिकार, लिंग आधारित हिंसा से सुरक्षा जैसी जरूरतों को शामिल किया गया था।

बोध प्रश्न 3

1. DAWN ने विकास को ''सामाजिक रूप से जिम्मेदार प्रबंधन और संसाधनों के उपयोग, लैंगिक अधीनता तथा सामाजिक असमानता के उन्मूलन, और संगठनात्मक पुनर्गठन के रूप में परिभाषित किया है जो इन के विशय में परिवर्तन ला सकता है''।

2. मोहंती का तर्क है कि एक एकल श्रेणी में 'महिलाओं' को समरूप बनाना महिलाओं को उनके लिंग की श्रेणी में कम कर देता है, अन्य कारकों जैसे उनकी पहचान और वर्ग की जातीयता को अनदेखा करना आदि। जातिवादी सार्वभौमिकतावादी नारीवाद पश्चिमी मानकों के आधार पर दक्षिण की परिवार प्रणाली, कानूनी और आर्थिक मूल्यांकन की तरह सांस्कृतिक संरचनाओं को देखता है। इस प्रकार, यह 'विकसित' या 'विकासशील' प्रतीत होता है। मोहंती के अनुसार, इसका उत्तर पारलौकिक नारीवाद है, जो नारीवादी एकजुटता पर आधारित है, जो न तो उपनिवेशवादी है और न ही नस्लवादी है।

बोध प्रश्न 4

1. विकास की नारीवादी समालोचना दो अलग–अलग तरह के बहस के बीच उभरती है, जो कि इकोफेमिनिज्म, यानी तत्ववाद और उसकी अस्वीकृति है। तत्ववाद के समर्थकों का तर्क है कि उनके नारीवाद के सार के अनुसार, महिलाएं पुरुषों की तुलना में प्रकृति के अधिक निकट हैं। प्रकृति के संरक्षण के लिए, आवश्यकता के अनुसार, महिलाएं आशा की किरण के रूप में उभरती हैं। कारण सरल है – अपने मातृ प्रवृत्ति की वजह से महिलाओं को देखभाल की नैतिकता और जीवित प्राणियों की रक्षा करने की अधिक संभावना है। लेकिन फिर मारिया मिज, बीना अग्रवाल और वंदना शिवा जैसे इकोफैमिनिस्टों का एक और समूह तत्ववाद को अस्वीकार करता है। वे इस बात से सहमत हैं कि महिलाओं की प्रकृति के साथ अधिक अनुकूलता है लेकिन इसका कारण प्रकृति में ही नहीं है, बल्कि एक संस्कृति में लिंग का निर्माण सामाजिक और ऐतिहासिक रूप से किया जाता है। उनके अनुसार लिंग पर आधारित पर्यावरण जागरूकता श्रम और सामाजिक भूमिका निर्माण का विभाजन है।

2. मिज के विकास के वैकल्पिक मॉडल के अनुसार, प्रजनन गतिविधियों को केवल महिलाओं और पुरुषों द्वारा साझा नहीं किया जाएगा वरन् इसमें प्रकृति जैसे अन्य हितधारक भी शामिल होंगे, जिन्हें विकास के विमर्श में शामिल नहीं किया गया था। वह आगे प्रकृति और श्रम के बीच के विरोध पर काबू पाने का सुझाव देती है और विकास के विमर्श में महिलाओं के स्थान को पुनर्प्राप्त करने के लिए वैश्विक बाजारों पर स्थानीय और क्षेत्रीय अर्थव्यवस्थाओं को प्राथमिकता देने का आग्रह करती है।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

बोध प्रश्न 5

1. नारीवादी अर्थशास्त्री भी इस धारणा से शुरू करते हैं कि घरों में अवैतनिक कार्य आर्थिक मूल्य पैदा करते हैं। सामान्य परिकल्पना का समर्थन करने के स्थान पर कि बाजार सभी पुरुषों और महिलाओं के लिए समान रूप से काम करने की दिशा में समान रूप से काम करते हैं नारीवादी अर्थशास्त्री पूछते हैं कि अर्थशास्त्र में किन मूल्यों का निर्माण हो रहा है और किसके लिए।

2. वे दो काम करने का लक्ष्य रखते हैं – सबसे पहले, घरेलू काम के आर्थिक मूल्य को राष्ट्रीय आर्थिक स्तर पर दिखाई देना। और दूसरी बात, महिलाओं के अति–शोषण के बारे में जागरूकता बढ़ाना, जो अभी भी घरेलू मोर्चे पर सक्रिय श्रम करते हुए, भुगतान किए गए आर्थिक क्षेत्रों में काम करना शुरू करती हैं। इस प्रकार, उनका उद्देश्य निजी क्षेत्र में श्रम के वितरण में समानता का निर्माण करना है।

बोध प्रश्न 6

1. मानव विकास सूचकांक, लिंग–आधारित मानव विकास सूचकांक और लिंग सशक्तिकरण उपाय

2. स्वास्थ्य (लोगों की जीवन प्रत्याशा को मापकर), ज्ञान (साक्षरता के स्तर को मापकर), और धन (अपने लोगों की क्रय शक्ति के साथ किसी दिए गए अर्थव्यवस्था के सकल घरेलू उत्पाद से संबंधित)

3. आर्थिक और राजनीतिक निर्णय लेने और महिलाओं की भागीदारी

बोध प्रश्न 7

1. कल्याण दृष्टिकोण, समानता का दृष्टिकोण, निर्धनता–विरोधी दृष्टिकोण, दक्षता दृष्टिकोण और सशक्तीकरण दृष्टिकोण

2. समानता के दृष्टिकोण ने विकास के नीति–निर्माताओं को एक तरफ विकास की गतिविधियों के लिए महिलाओं के योगदान के बीच अनुपात को फिर से दिखाने और दूसरी ओर ऐसी गतिविधियों से उनके लाभ के भाग पर जोर दिया। महिलाओं की प्रजनन भूमिकाओं को जोडते हुये यह दृष्टिकोण आगे सरकार की जिम्मेदारी के तहत लाया गया।

3. निर्धनता–विरोधी दृष्टिकोण ने आय सृजन और रोजगार के उपयोग के साथ महिलाओं की उत्पादक और प्रजनन भूमिकाओं के एकीकरण की वकालत की। उनकी मांग इस एकीकरण को लाने के लिए एक परिचालन रणनीति विकसित करने पर केंद्रित थी।

4. कारण था– महिलाओं और पुरुषों की भूमिकाओं और जिम्मेदारियों को समझना, जबकि विकास के लिए रणनीतियों की योजना बनाना प्रभावशीलता में सुधार कर सकता है और साथ ही यह सुनिश्चित करने में मदद करता है कि महिला और पुरुष दोनों राष्ट्रीय विकास में अपने संबंधित चरित्र को निभाते हैं।

5. सशक्तिकरण का उद्देश्य महिलाओं में आत्मनिर्भरता का गुण बढ़ाना है और महिलाओं के लाभ के लिए सामाजिक, विधायी, नीति, कानूनी, आर्थिक और अन्य स्तरों पर परिवर्तन को लाना है।